RNI नं. : 7387/63
मुद्रण तिथि : 15-16 मई 2023
डाक प्रेषण तिथि : 15-17 मई 2023
ISSN : 2456-611X

वर्ष : 61 अंक : 03
मूल्य : ₹10/- पृष्ठ संख्या : 80
डाक पंजीयन संख्या : BIKANER/022/2021-23
Office Posted At R.M.S., Bikaner

राम चमकते भानु समाना

श्री अ.भा. साधुमार्गी जैन संघ का मुखपत्र

श्रमणोपासक

धार्मिक

पाक्षिक

समता दर्शन

समीक्षण ध्यान

जन्मदिवस आचार्य नानेश का, हिलमिल मनाएँ हम।
समता दर्शन, समीक्षण ध्यान, हों जीवन के अंग।।

सुविचार

मुक्ता-मोती

-परम पूज्य आचार्य प्रवर 1008 श्री नानालालजी म.सा.

- सही ढंग से जीने के लिए मन-मस्तिष्क को सबसे पहले तीव्र रोष, अभिमान, छल-छद्म, लोभ आदि से हटाने का प्रयत्न करें।
- लोभ एक ऐसा अदृश्य संक्रामक रोग है जो साधकों को समय-समय पर किसी न किसी रूप में घेर लेता है। साधना की शाखा प्रशाखाओं को रुग्ण बना देता है।
- जीवन का सम्बन्ध केवल शरीर तक ही सीमित नहीं है। इसका सम्बन्ध न्यूनाधिक रूप से सारे संसार के साथ है।
- एक बार में किसी कार्य में सफलता न मिले तो हतोत्साहित नहीं होना चाहिए। अपितु उसी कार्य को उसी उत्साह के साथ निरन्तर करते रहने पर अवश्य सफलता मिलती है।
- आर्थिक विषमता समाज के सम्पन्न तथा अभावग्रस्त दोनों वर्गों में भोगलिप्तता एवं विलासिता का मायाजाल रचती है।
- व्यक्ति स्वयं से नियंत्रित हो, व्यक्ति समाज से नियंत्रित हो, ये दोनों परिपाटियाँ समता लाने के लिए सक्रिय बनी रहनी चाहिए।
- व्यक्ति की क्षमता का तालमेल यदि सामाजिक विकास के साथ बैठ जाता है तो व्यक्ति की क्षमता भी कई गुनी बढ़ जाती है।
- जो जीवन सम्यक्-निर्णायक और समतामय है, वास्तव में वही जीवन है।
- साधक को साधना के क्षेत्र में निरन्तर चलते रहना चाहिए। कभी भी विराम का नहीं सोचना चाहिए। विराम का चिन्तन साधक के गिराव (पतन) का सूचक है।

बंभचेरं उत्तमतव-नियम-णाण दंसण-चरित्त-सम्मत्त-विणयमूलं।

-प्रश्नव्याकरण (2/4)

ब्रह्मचर्य- उत्तम तप, नियम, ज्ञान, चारित्र, सम्यक्त्व और विनय का मूल है।

Celibacy is the best of vows, penance, knowledge, vision, conduct, righteousness and it is the basis of right conduct.

स एव भिक्खू, जो सुद्धं चरति बंभचेरं।

-प्रश्नव्याकरण (2/4)

जो शुद्ध भाव से ब्रह्मचर्य का पालन करता है, वस्तुतः वही भिक्षु है।

One who observes the vow of celibacy with purity of disposition is the real monk.

देव-दाणव-गंधव्वा, जक्ख-रक्खस-किन्नरा।
बंभयारिं नमंसंति, दुक्करं जे करंति तं।।

-उत्तराध्ययन (16/16)

देवता, दानव, गंधर्व, यक्ष, राक्षस और किन्नर सभी ब्रह्मचर्य के साधक को नमस्कार करते हैं, क्योंकि वह एक बहुत दुष्कर कार्य करता है।

The gods, demons, celestial musicians, demigods, monsters and celestial singers and dancers also bow to the celibate who observes the difficult to observe vow of celibacy.

नाल्पसत्त्वैर्न निःशीलै-र्नदीनैनक्षिनिर्जितैः।
स्वप्नेऽपि चरितुं शक्यं, ब्रह्मचर्यमिदं नरैः।।

-ज्ञानार्णव (पृष्ठ 133)

अल्पशक्ति वाले, सदाचार रहित, दीन और इन्द्रियों द्वारा जीते गये लोग ब्रह्मचर्य को स्वप्न में भी नहीं पाल सकते।

The weak, the feeble, the meek those who are devoid of the righteousness and those that are given to sensuality can never observe the vow of celibacy, not even in their dreams.

प्राणसंदेह-जननं परमं वैरकारणम्।
लोकद्वयविरुद्धं च, परस्त्रीगमनं त्यजेत्।।

-योगशास्त्र (2/97)

परस्त्रीगमन प्राण-नाश के सन्देह को उत्पन्न करने वाला है। परम वैर का कारण है और इहलोक-परलोक दोनों को नष्ट करने वाला है। अतः परस्त्रीगमन को त्याग देना चाहिये।

Relationship with the other women is fraught with a risk to life, it is the cause of great animosity and it destroys this life and the next. Therefore, extramarital relationship must be shunned.

साभार- प्राकृत मुक्तावली

नानेशवाणी

किं जीवनम्?

सम्यक् निर्णायकं समतामयं च यत् तज्जीवनम्।

–परम पूज्य आचार्य प्रवर 1008 श्री नानालालजी म.सा.

जीवन क्या है? प्रश्न उठाया गया है और उसका उत्तर भी इसी सूत्र में दिया गया है कि जो जीवन सम्यक्, निर्णायक और समतामय है, वास्तव में वही जीवन है।

जो जीया जाता है, वह जीवन है - यह तो जीवन की स्थूल परिभाषा है। एक आदमी को बोरे में बांध कर पहाड़ की चोटी से नीचे लुढ़का दिया जाए तो वह बोरा ढलान से लुढ़कता हुआ नीचे आ जाए - यह भी एक तरह से चलना ही हुआ। वहीं दूसरा आदमी अपने नपे-तुले कदमों से - अपनी सजग दृष्टि से चलकर उतरे - उसे भी तो चलना ही कहेंगे। तो दोनों तरह के चलने में फर्क क्या हुआ? एक चलाया जाता है, दूसरा चलता है। चलाया जाना जड़त्व है, तो चलना चैतन्य। अब दोनों के परिणाम भी देखिए। जो बोरे में बंधा लुढ़क कर चलता है, वह लहूलुहान हो जाएगा। चट्टानों के आघात-प्रतिघातों से वह अपनी संज्ञा भी खो बैठेगा और संभव है कि फिर लम्बे अर्से तक वह चल सकने के काबिल भी न रहे। तो जो जीवन जिया जाता है, उसे केवल जड़तापूर्ण जीवन ही कहा जा सकता है।

सार्थक जीवन वह है जो स्वयं चले-स्वस्थ एवं सुदृढ़ गति से चले, बल्कि अपने चलने के साथ अन्य दुर्बल जीवनों में भी प्रगति का बल भरता हुआ चले।

साभार- नानेशवाणी-13 (समता: दर्शन और व्यवहार)

अनुक्रमणिका

06 **प्राणीमात्र का शत्रु...**
-आचार्य श्री नानालालजी म.सा.

07 **Chintan Pearls**

08 **माया की महिमा**
-आचार्य श्री जवाहरलालजी म.सा.

09 **मायाविनी माया**
-आचार्य श्री नानालालजी म.सा.

10 **आध्यात्मिक ज्ञान की...**
-आचार्य श्री गणेशलालजी म.सा.

11 **आध्यात्मिक भूमिका**
-आचार्य श्री नानालालजी म.सा.

12 **अन्तर्यात्रा का आनन्द**
-आचार्य श्री नानालालजी म.सा.

13 **यह है अन्तर का राज**
-आचार्य श्री रामलालजी म.सा.

14 **महाप्राण साधना में निमग्न हूँ**

16 **जीवन की एक नयी व्याख्या**
-आचार्य श्री नानालालजी म.सा.

17 **सहज जीवन जीने की कला**
-आचार्य श्री रामलालजी म.सा.

18 **स्वाध्याय की नियमितता क्यों?**
-आचार्य श्री नानालालजी म.सा.

19 **स्वाध्याय : एक आत्मचिंतन**
-संकलित

20 **आस्था की अनिवार्यता**
-आचार्य श्री नानालालजी म.सा.

21 **अविचल आस्था : सिद्धि का मार्ग**
-आचार्य श्री रामलालजी म.सा.

22 **दहेज एक अभिशाप**
-आचार्य श्री नानालालजी म.सा.

23 **दहेज प्रथा...**
-श्रमणोपासिका

24 **मंगल प्रभात का उदय**
-संकलित

25 **भक्तों के भगवान...**
-विजय कुमार चौपड़ा

26 **साधु-धर्म**
-आचार्य श्री नानालालजी म.सा.

27 **गंभीर साधक नाना**
-रोमिका नवलखा

28 **मूल और फूल-पत्ती साधना...**
-आचार्य श्री नानालालजी म.सा.

29 **जीवन निर्माण में सहायक...**
-डॉ. आभा किरण गांधी

30 **सुसंस्कार-सर्जना**
-आचार्य श्री नानालालजी म.सा.

31 **गजसुकुमाल के आदर्श सुसंस्कार**
-आचार्य श्री नानालालजी म.सा.

32 **फक्कड़ महात्मा**
-आचार्य श्री नानालालजी म.सा.

33 **कालजयी व्यक्तित्व...**
-जे.पी. आचार्य

34 **समय का सदुपयोग...**
-आचार्य श्री नानालालजी म.सा.

35 **बालमन में उपजे ज्ञान**
-मोनिका जय ओस्तवाल

36 **आन्तरिक सुख ही सच्चा...**
-आचार्य श्री नानालालजी म.सा.

37 **समता-सन्देश प्रदाता...**
-प्रो. सुमेरचन्द जैन

38 **समतामय जीवन**
-आचार्य श्री नानालालजी म.सा.

39 **वर्तमान परिप्रेक्ष्य में...**
-ऋषभकुमार मुरड़िया

40 **सम्पन्न चातुर्मासिक मानचित्र**

42 **धोरा दूध री चादर**
-संकलित

43 **जीवन नैया के खेवैया...**
-नाथीदेवी बोथरा

44 **Deeksha Ceremonies**
-संकलित

46 **ज्ञान पहेली**

48 **ऐसी वाणी बोलिए**

50 **नाना के विविध रूप**
-सुरेश बोरदिया

52 **Samikshan Dhyaan...**
-Urja Mehta

54 **आचार्य श्री नानेश : व्यक्तित्व एवं कृतित्व**
-कान्ता बैद

56 **ये विकास की अकथ कहानी...**
-प्रतिभा तिलकराज सहलोत

58 **वात्सल्य वारिधि महासती कुन्ती**

60 **गुरुचरण विहार**

प्राणीमात्र का शत्रु - काल्पनिक भय

-परम पूज्य आचार्य प्रवर 1008 श्री नानालालजी म.सा.

प्राणीमात्र का एक सबसे बड़ा भयंकर शत्रु है, जो हर समय उसका नाश करता रहता है। वह चमड़े की दृष्टि में जल्दी नहीं आता। कभी आता भी है, तो उसका बड़ा स्थूल रूप। पर वह तो किसी कोयले की खदान में अचानक ज्वाला के रूप को धारण करने वाली आग के समान है। जैसे दबी आग शनैः-शनैः पास के छोटे-बड़े सभी तत्त्वों को प्रतिक्षण जलाती रहती है। वैसे ही वह शत्रु प्रतिक्षण प्राणीमात्र के अन्दर रहने वाले छोटे-मोटे जीवन-तत्त्व को भस्म करता रहता है। जिसका विज्ञान बड़े-बड़े समाज के कर्णधार विचारक चतुर कहलाने वालों को नहीं हो पाता, वे भी प्रायः उसके चंगुल में फँसे रहते हैं। वह क्षय रोग के कीटाणु की तरह सताता रहता है। दूसरी दृष्टि से देखा जाए तो वह समस्त अध्यात्म रोगों की जड़ है। बड़े-बड़े योगी लोग भी कभी-कभी उससे आक्रान्त होते सुने गये हैं। अन्य का तो कहना ही क्या! उसी का असर स्थूल शरीर पर भी पड़ता है और अनेक बीमारियाँ आ घेरती हैं, जिनका निवारण करने में बड़े-बड़े डॉक्टर भी प्रायः असफल रहते हैं। उस रोग से मुक्ति पाए बिना ही प्राणी चल बसता है। साधना का क्षेत्र भी पूरा सफल नहीं हो पाता। शान्ति की चादर को प्रतिक्षण कुतरने वाले पहाड़ी चूहे के समान सम्पूर्ण आपत्तियों का प्रमुख द्वार वह शत्रु है- प्राणी के अन्दर में रहने वाला **'काल्पनिक भय'**।

साभार- नानेशवाणी-40

(गहरी पर्त के हस्ताक्षर)

Chintan Pearls

Pride is a vicious enemy in the development of life. Blinded by arrogance one refuses to interact with people he considers inferior to himself. Even if an important issue can be addressed just by talking to the 'inferior' person, his pride wouldn't allow him to do so. Its direct implications are clearly evident.

Moreover, several positive traits arising out of the qualities of humility and politeness also get maligned.

Hence, the thoughtful need to keep pride at bay from all corners of the mind.

माया की महिमा

-परम पूज्य आचार्य प्रवर 1008 श्री जवाहरलालजी म.सा.

दो मित्र थे। दोनों साथ रहते थे। एक दिन दोनों ने प्रतिज्ञा की कि किसी भी अवस्था में हम एक-दूसरे को नहीं भूलेंगे। कोई कैसा भी ऋद्धिशाली हो जाए अथवा कैसा भी गरीब बन जाए, एक-दूसरे को बराबर याद रखेगा और सहायता करता रहेगा। उस समय दोनों की स्थिति समान थी, अतएव यह प्रतिज्ञा करने में किसी को कोई कठिनाई नहीं थी।

कुछ समय बाद एक मित्र को कोई बड़ा औहदा, अधिकार और धन प्राप्त हो गया। दूसरा मित्र ज्यों का त्यों गरीब ही रहा।

गरीब मित्र ने सोचा- मेरा मित्र सब प्रकार से सम्पन्न हो गया है, लेकिन मुझे कभी स्मरण ही नहीं करता। सचमुच गरीब को गरीब के सिवाय कोई नहीं पूछता। कहावत है-

माया से माया मिले, कर-कर लम्बे हाथ।
तुलसीदास गरीब की, कोई न पूछे बात।।

गरीब मित्र ने सोचा- मेरा मित्र मुझे नहीं पूछता तो न सही, मैं अपनी प्रतिज्ञा के अनुसार उसे नहीं भूल सकता। मैं स्वयं उसके पास जाकर मिलूँगा। ऐसा सोचकर गरीब अपने मित्र के पास गया। उसने पूर्ववत् स्नेह के साथ अपने मित्र का अभिवादन किया। मगर धनी मित्र उसकी ओर चकित दृष्टि से देखने लगा और बोला- मैंने पहचाना नहीं, कौन हो तुम?

गरीब ने सोचा- आगे की बात तो दूर ही रही, यह तो मुझे पहचानता भी नहीं है। प्रकट में उसने कहा- मैंने सुना था कि मेरा मित्र अन्धा हो गया है। सोचा, जाकर देख आऊँ। क्या हाल है? बिल्कुल अन्धा हो गया है या थोड़ा-बहुत सूझता भी है? यहाँ आकर देखा कि मित्र तो एकदम ही अन्धा हो गया है।

धनी मित्र ने कहा- यह कैसे कह रहे हो?

गरीब ने उत्तर दिया- आप मुझे बिल्कुल भूल गये। अब आपकी वे आँखें नहीं रहीं, जो प्रतिज्ञा करते समय थी। अब मैं यहाँ से जाता हूँ, वरना मैं भी अन्धा हो जाऊँगा।

माया से प्रभावित होकर लोग अन्धे हो जाते हैं।

साभार- जवाहर किरणावली-18

मायाविनी माया

-परम पूज्य आचार्य प्रवर 1008 श्री नानालालजी म.सा.

माया : मन, वचन एवं काया की कुटिलता द्वारा परवंचना करना यानी दूसरों के साथ कपटाई, ठगाई या दगा-धोखा करना। ऐसा आत्मा का परिणाम विशेष माया कहलाती है। माया, अज्ञान और अविद्या की जननी तथा अकीर्ति का कारण होती है। यदि माया के साथ तप, संयम आदि के अनुष्ठानों का सेवन किया जाता है तो वह भी नकली सिक्के की तरह असार होता है। माया ऐसा शल्य है जो आत्मा को व्रतधारी नहीं बनने देता है क्योंकि व्रती का निःशल्य होना अनिवार्य है। माया इस लोक में तो अपयश देती ही है, परन्तु परलोक में भी दुर्गति देती है। यदि माया कषाय को नष्ट करनी है तो वह ऋजुता और सरलता के भाव अपनाने से ही नष्ट हो सकती है।

मायावी यानी कपटी पुरुष सदा ही दूसरों का दास होता है क्योंकि दगाबाज सबके सामने दुगुना नमता है। माया सबसे बड़ा भय भी होती है जो गोपनीयता में पैदा होती है, लोभ में पनपती है, मान में अपना उठाव दिखाती है और क्रोध में बाहर प्रकट होती है। इसके विभिन्न रूप इस प्रकार गिनाये गये हैं-

(1) कपट, (2) मायाचार, (3) प्रतारणा व वंचना, (4) दंभ और आडम्बर, (5) कुटिलता और जटिलता, (6) दुराव तथा छिपाव आदि।

इसी प्रकार माया के विविध रूपों को प्रकट करने वाले इसके समानार्थक चौदह अन्य नाम भी गिनाये गये हैं-

(1) **उपधि-** किसी को ठगने के लिए प्रवृत्ति करना। (2) **निवृत्ति-** किसी का आदर सत्कार करके फिर उसके साथ माया करना या एक मायाचार छिपाने के लिए दूसरा मायाचार करना। (3) **वलय-** किसी को अपने माया जाल में फँसाने के लिए मीठे-मीठे वचन बोलना। (4) **गहन-** दूसरों को ठगने के लिये अव्यक्त शब्दों का उच्चारण करना या ऐसे गूढ़ तात्पर्य वाले शब्दों का प्रयोग करना व जाल रचना जो दूसरे की समझ में ही नहीं आवे। (5) **णूम-** मायापूर्वक नीचता का आश्रय लेना। (6) **कल्क-** हिंसाकारी उपायों से दूसरों को ठगना। (7) **कुरूप-** निन्दित रीति से मोह पैदा करके ठगने की प्रवृत्ति करना। (8) **जिह्माता-** कुटिलतापूर्वक ठगने की प्रवृत्ति करना। (9) **किल्विष-** किल्विषी सरीखी प्रवृत्ति करना। (10) **आदरणा** (आचरणा)- मायाचार से किसी का आदर करना तथा ठगाई के लिए अनेक प्रकार की क्रियाएँ करना। (11) **गूहनता-** अपने स्वरूप को छिपाना। (12) **वंचनता-** दूसरों को ठगना। (13) **प्रतिकुंचनता-** सरल भाव से कहे हुए वचन का खंडन करना अथवा उल्टा अर्थ लगाना। (14) **सातियोग-** उत्तम पदार्थ के साथ तुच्छ पदार्थों की मिलावट करना।

मूल कषाय की दृष्टि से माया के भी चार भेद कहे गये हैं-

(1) अनन्तानुबंधी माया, (2) अप्रत्याख्यानी माया, (3) प्रत्याख्यानी माया, (4) संज्वलन माया।

क्रोध और मान की तरह ही माया के भी चार प्रकार कहे गये हैं- (1) आभोग निवर्तित, (2) अनाभोग निवर्तित, (3) उपशान्त और (4) अनुपशान्त।

साभार- नानेशवाणी-03 (अनुभूति के क्षण)

धर्मदेशना

आध्यात्मिक ज्ञान की आवश्यकता

-परम पूज्य आचार्य प्रवर 1008 श्री गणेशलालजी म.सा.

आत्मा के सम्बन्ध में मनन और चिन्तन करना हमारी जिज्ञासा का चरम बिन्दु है। यही ज्ञान की पराकाष्ठा है। आत्मा को पहचानना ही परमात्मपद को उपलब्ध करना है, जहाँ से संसार के बदलते हुए भावों का अवलोकन किया जा सके। आत्म-स्वरूप को न पहचानने के कारण ही आज संसार में इतना अज्ञानान्धकार व दुःख छाया हुआ है।

जीवन में नित्य परिवर्तन होते रहते हैं और विचारों एवं भावनाओं में नई क्रान्तियाँ हो जाती हैं, किन्तु यदि हम **आत्म-तत्त्व** को गम्भीरतापूर्वक समझने का प्रयास करेंगे तो ज्ञात होगा कि मूलतः जीवन में एक ऐसा केन्द्र-स्थल है, जो शाश्वत, स्थिर और शांत है और जिसे विशाल प्रभंजन, महान् भूकम्प, प्रचंड ज्वालामुखी तथा भौतिक युग के संहारक शस्त्र और बम भी स्पर्श तक नहीं कर सकते। अशांति का तांडव नर्तन भी **आत्मशांति** को बाधित नहीं कर सकता।

आत्म-शक्ति का अन्तर्दर्शन ही व्यक्ति विकास की कुंजी है। आत्मिक शक्ति को प्रकाशित करने का अपूर्व साधन है- **आध्यात्मिक ज्ञान**। आज के जड़वादी युग ने इस ज्ञान को लुप्त करने के प्रयास किए हैं, किन्तु भारतीय संस्कृति पटल से इसे मिटाया नहीं जा सकता और जिस दिन यह पुनीत स्थिति पूर्ण रूप से हमारे हृदयों से लुप्त हो जाएगी, उस दिन एक सांस्कृतिक प्रलय आएगा जो मानवता को क्रूर बर्बरता में परिणत कर देगा। अतः सच्चे विकास के लिए हमें आत्म-स्वरूप को यथार्थ रूप में समझ लेने के बाद आध्यात्मिक ज्ञान द्वारा प्रगति की उस पावन मंजिल तक आत्मा को पहुँचाता है।

मनुष्य को अपने स्वरूप को समझकर विवेक रखने की आवश्यकता है। संसार में रहते हुए अध्यात्म-ज्ञान संसार से भागना नहीं सिखाता है। वह तो मानव को अनासक्ति योग की शिक्षा देता है।

अध्यात्म-ज्ञानी **'जीओ और जीने दो'** के सिद्धान्त को केवल समझता ही नहीं, अपितु अपने जीवन में उसका यथाशक्य आचरण करता है। वह समझता है कि वह जैसा व्यवहार दूसरों के प्रति करेगा, यदि वैसा ही व्यवहार उसके प्रति भी किया जाय तो उसकी अनुभूति कैसी होगी तथा उसी विचारणा के अनुसार वह अपनी सारी प्रवृत्तियाँ निर्धारित करता है।

साभार- चिंतन मनन अनुशीलन-2

आध्यात्मिक भूमिका

-परम पूज्य आचार्य प्रवर 1008 श्री नानालालजी म.सा.

कौन व्यक्ति ऐसा होगा जो परम आनन्द की अवस्था को न चाहता हो? जहाँ तक मैं सोचता हूँ, हर एक आत्मा को परम आनन्द की अभिलाषा अवश्य है। परन्तु सही मार्ग के अभाव में आत्मा इस संसार के विचित्र दृश्यों में उलझ रही है। यदि वह वीतराग-वाणी के अनुरूप आध्यात्मिक-विज्ञान को ग्रहण करें तो उसमें वीतरागता आए बिना नहीं रहेगी।

संत और सती वर्ग इस विषय का यथाशक्ति प्रतिपादन करते हैं। वे अपनी कर्तव्य-दृष्टि से संबोधन भी देते हैं। परन्तु इस विषय को ग्रहण करने की जिज्ञासा जब तक श्रोताओं में जागृत नहीं होगी, तब तक श्रोता इस मार्ग को पकड़ नहीं पाएँगे, व्याख्यान की दृष्टि से वे व्याख्यान श्रवण कर लेंगे। कुछ समय के लिए यदि वे एकाग्र रहे और योगों की वृत्ति शुभ रही तो निर्जरा भी कर लेंगे, परन्तु इससे आगे का लाभ वे नहीं उठा सकेंगे। वस्तुतः इस विषय में आगे प्रवेश करना है तो संसार की वस्तुओं का अध्ययन करते हुए भी उनमें उलझे न रहें और आध्यात्मिक विषय में अपनी शक्ति लगाएँ।

इस प्रकार शक्ति लगाने का कार्य हर समझदार व्यक्ति कर सकता है। पढ़ा-लिखा विचारवान व्यक्ति इसमें अधिक प्रगति कर सकता है। परन्तु बाहरी पढ़ाई की दृष्टि से अक्षरीय-ज्ञान भिन्न है और आध्यात्मिक दृष्टि का ज्ञान भिन्न। इसकी वर्णमाला उस अक्षरीय-ज्ञान से भिन्न है। अक्षरीय-ज्ञान की दृष्टि से तो बहुतेरे विद्वान मिल जाएँगे, परन्तु यदि अक्षरीय-ज्ञान ही आध्यात्मिक जीवन का मार्ग होता तो उससे सम्पन्न सभी व्यक्ति आध्यात्मिक ज्ञान से ओत-प्रोत होकर आत्मा की शांति का अनुभव करते। परंतु इस सम्बन्ध में अनुभव विपरीत ही दृष्टिगत हो रहा है। लोग जितने अधिक अक्षरीय-ज्ञान के साथ डिग्रियाँ प्राप्त करके आगे बढ़े हैं, अधिकांशतः उनका मानस उतना ही अधिक नाशवान तत्त्वों में आसक्त बना हुआ-सा दिखलाई देता है।

आध्यात्मिक जीवन की यत्किंचित् भावना भी कुतर्कों के माध्यम से मलिन-सी बन गई है। यही कारण है कि आज अधिकांश व्यक्तियों का मस्तिष्क इस आंतरिक शक्ति से शून्य है। इसका परिणाम है कि वे व्यक्ति प्रायः अपने जीवन की शक्ति को नियंत्रित नहीं कर पा रहे हैं। वाणी पर उनका अंकुश नहीं है। कभी-कभी तो उनकी वाणी इस प्रकार बिना अंकुश के बाहर निकल पड़ती है कि जिसको सुनकर सभ्य व्यक्ति लज्जित होते हैं। यह बड़ा ही चिंतनीय विषय है।

साभार- नानेशवाणी-24 (आध्यात्मिक ज्योति)

नानेशवाणी

अन्तर्यात्रा का आनन्द

-परम पूज्य आचार्य प्रवर 1008 श्री नानालालजी म.सा.

वैज्ञानिक भी विज्ञान के तथाकथित विकास के प्रति सशंक और चिन्तामग्न हो गए हैं कि क्या विज्ञान का यह अतिशय विकास स्वयं मानव जीवन का ही घातक तो नहीं हो गया है? छोटी-सी मशीन से लेकर कम्प्युटरी रोबोट तक, जो यह यांत्रिक विकास हुआ है, उससे एक ओर तो मनुष्य की मानसिक यंत्रणाएँ बढ़ गई हैं, तो दूसरी ओर वायु प्रदूषण आदि दोषों से भाँति-भाँति के शारीरिक रोग फैल गए हैं।

यह स्थिति चौंकाने वाली बन गई है। सामान्य जन तक भी सोचने लगे हैं कि आज जिसे विकास कहा जा रहा है, क्या वह विकास भी है? कहीं यह तो नहीं है कि यह विकास ही विनाश का रूप ले रहा है? हम पूर्व वाले पश्चिम की दृश्यमान चमचमाती सभ्यता से आकर्षित हुए थे और उस दिशा में दौड़ने लगे थे, किन्तु अब वह मोड़ आ गया है जहाँ हम अपनी विपथगामिता को महसूस करने लगे हैं। इस कारण ही अब यह समझ फैलने लगी है कि विकास की जो दिशा हमने पकड़ी थी, वह गलत थी। हम अपना सुख अब तक बाहर ही बाहर खोजते रहे हैं और यही हमारी भूल थी। जो सुख वास्तव में अपने ही भीतर में बसा हुआ है और जिसे हम अन्तर्यात्रा को सफल बनाकर प्राप्त कर सकते हैं, वह भला बाहर कहाँ और कैसे मिलता?

सुख के शोध की यह अन्तर्यात्रा हमें आरम्भ करनी होगी अपने ही मन से, क्योंकि यह मन बाह्य एवं आभ्यन्तर जगत के मध्य की कड़ी है। आज यह मन बाहर के विषयों में ही भटक रहा है। इसको साधना पड़ेगा और उसे एकाग्र बनाकर भीतर गहराई में उतारना होगा। मन की ऐसी साधना ही अन्तर्यात्रा की साधना बन सकेगी। इसमें चित्तवृत्तियों पर नियंत्रण की क्षमता बढ़ानी होगी तो उनके संशोधन के विविध प्रयोग भी कार्यान्वित करने होंगे। कई साधकों ने कई प्रयोग इस हेतु किये हैं, किन्तु उनके कई प्रयोग इस दिशा में विफल भी रहे हैं। कारण, जब तक आत्मा के मूल स्वभाव का सम्यक् ज्ञान नहीं हो तथा विपथ से मन को नियंत्रित करने की सम्यक् विधि अपनाई नहीं जाए, तब तक कोई भी प्रयोग सफल नहीं हो सकता। इस सम्बन्ध में वीतराग देवों ने संयमी साधना की प्रकीर्णता के बाद अन्तरज्ञान को पाकर जो मनः साधना एवं ध्यान का प्रयोग बताया है, उसी को केन्द्रस्थ बनाकर साधना रूप अन्तर्यात्रा का श्रीगणेश किया जा सकता है।

आज प्रायः सम्पूर्ण जीवन बाह्य यात्रा में ही व्यस्त बना हुआ है। चौबीसों घंटे मनुष्य बहिर्दर्शन की दिशा में ही दौड़ रहा है। अतः अन्तर्यात्रा विषयक चिन्तन का अभाव है। किन्तु वर्तमान युग की विषमताओं से वह अवश्य घबरा उठा है। इस घबराहट ने उसके मन में यह विवशता जरूर पैदा कर दी है कि भीतर में सुख को खोजें। इस कारण वह आत्मचिन्तन की तरफ अव्यक्त रूप से मुड़ा है-यह कहा जा सकता है। उसकी इस मनोदशा में यदि आत्मसमीक्षण की भावना जगाई जाए और मन को सन्नद्ध बनाया जाए तो वह अपनी अन्तर्यात्रा के विषय में चिन्तनशील बन सकेगा। चिन्तनशीलता की भूमिका पर यदि मनुष्य के मन को आरूढ़ कर दिया जाए तो निश्चय ही वह आत्म-साधना के प्रति आकृष्ट हो जाएगा।

एक बार जब मनुष्य के मन की साधक के रूप में रचना हो जाएगी, तब उसकी अन्तर्यात्रा की पिपासा अधिकाधिक तीव्र बनती जाएगी। मन की साधना में उसकी अभिरुचि भी बढ़ेगी एवं अनुभूति भी परिपुष्ट होगी। इसका वास्तविक कारण यह होगा कि उसे भीतर आनन्द का ऐसा स्रोत फूट निकलेगा, जो उसे अनुपम लगेगा। इस आनन्द का रसास्वादन उसके अन्तःकरण में समुचित मनोभूमि का निर्माण करेगा, जिसमें फिर अपनी चित्तवृत्तियों पर नियंत्रण कर लेना कठिन नहीं रह जाएगा। तब साधना में भी एक नयी दृढ़ता की ज्योति जाग जाएगी।

साभार- नानेशवाणी-02 (आह्वान अपनी चेतना का)

यह है अन्तर का राज

-परम पूज्य आचार्य प्रवर 1008 श्री रामलालजी म.सा.

आचार्य पूज्य गुरुदेव श्री नानालालजी म.सा. की जन्म शताब्दी मनायी गयी, जिसमें बहुत सारे आयाम दिये गये। संघ ने एक आयाम यह भी रखा कि सौ कसाइयों को कसाई कार्य से मुक्त कराना है। कभी पढ़ा है? कभी आया पढ़ने में यह? आया क्या? आप लोगों ने पढ़ा भी है तो सोचा होगा कि अपना काम थोड़ी है। अपना काम है ही नहीं। तो फिर किसका काम है? किसका काम है? कौन आएगा करने के लिए? घर का मालिक जागरूक नहीं है तो चौकीदारी कौन करेगा? किस-किस ने प्रयत्न किया इसके लिए बताओ? पीपलियाकलां का एक मुस्लिम भाई है सलीम। उस एक भाई ने प्रतिज्ञा ली और उसने कहा कि मैं दस भाइयों को मुक्त करवाऊँगा। गुरुदेव की जन्म शताब्दी पर मैं दस लोगों को कत्लखानों से मुक्त करवाऊँगा। उसने भाई पंकजजी शाह से कहा कि ऐसा है, एक भाई से यह काम छुड़वाना है तो आपको उसको नौकरी या कोई धंधा दिलाना पड़ेगा। रोजी-रोटी के लिए आदमी को कुछ तो चाहिए। पंकजजी शाह ने कहा कि तुम तो काम करो, नौकरी चाहिए तो मैं दूँगा। हमारे यहाँ पर भरपूर काम है। हमारे यहाँ काम करने वाले 100 से 101 हो जाएँगे, क्या फर्क पड़ने वाला है? उसने आज एक भाई से कत्लखाने का काम बंद करवा भी दिया। दस को बंद कराने की प्रतिज्ञा ली थी और उसने एक को बंद करवा दिया। यदि एक कत्लखाना बंद हो जाए तो कितने जीवों का कत्ल होना बंद हो जाएगा? कितने जीव बच जाएंगे? और आपने कुछ नहीं किया। बस, कहीं पर नौकरी लगवा दी। आप उससे वहाँ नहीं, अपने यहाँ पर काम करवाओगे। केवल वहाँ काम करने के बजाय यहाँ काम करने लग गया। उसका लाभ, उसकी दलाली का लाभ आपको मिलेगा या नहीं मिलेगा? हमने क्या कार्य किया? हमने कितने कत्लखाने वालों से बात की? हमने एक भी कत्लखाने वालों से बात की? क्या कर रहे हैं हम, बताओ? आप बोलते तो हो, **'नाना गुरु, नाना गुरु'**। नाना गुरु के गीत भी आप गाते हो। क्या गीत गाते हो?

नाना गुरु दर्श दिखा जाओ, भक्तों का दिल यह बोल रहा...

अभी यहाँ पर तो खाली संतों का दिल बोल रहा है। भक्तों का दिल कहाँ बोल रहा है? वही शक्ति आप में होनी चाहिए कि नाना गुरु के दर्शन हो जाएँ। जितने लोग यहाँ बैठे हैं, एक-एक ने संकल्प ले लिया कि एक-एक कसाई को कत्लखाने का काम हम बंद करवाएँगे तो नाना गुरु के दर्शन होंगे या नहीं होंगे? (सभा की धीमी आवाज- होंगे) वह आवाज तो नहीं आई। हमारे भीतर विश्वास ही नहीं तो आवाज कहाँ से आएगी? विश्वास कहाँ बोल रहा है? ये आपकी जुबान बोल रही है। विश्वास कहाँ बोल रहा है? आपका विश्वास बोलना चाहिए।

साभार- श्री रामउवाच (दो सूर्यों का सामना)

महाप्राण साधना में निमग्न हूँ

पिपलियाकलां (राज.) में 11 नवम्बर 1991 को परम श्रद्धेय आचार्य प्रवर 1008 श्री नानालालजी म.सा. एवं विद्वान डॉ. नेमीचन्दजी जैन के मध्य हुई वार्ता का अंश :

नेमीचन्द जैन : क्या 1940 ई. के बाद देश/समाज के वातावरण में कोई परिवर्तन आया है?

आचार्य श्री नानेश : मानसिकता दूषित हुई है। इसे स्वस्थ संतुलित किया जाना चाहिए।

नेमीचन्द जैन : आपने अपने भीतर कोई परिवर्तन महसूस किया है?

आचार्यश्रीजी : परिवर्तन हुआ है। तीव्रताएँ बनी हैं। उदासीनता समृद्ध हुई है। मुझे लगता है कि हम व्यक्ति को मृत्यु भय की अपेक्षा संयम की ओर लाएँ। मृत्यु तो आएगी ही, उससे क्यों डरें? प्राण-चिन्तन करें। वचन-बल पर ध्यान दें। शब्द वर्गणाएँ पूरे विश्व में व्याप्त हैं। प्राण विलक्षण अस्तित्व है। मैं इन दिनों महाप्राण की साधना पर केन्द्रित हूँ। इसे अधिकांश समय देता हूँ। व्यवधान आते हैं - सामाजिक, संघगत। फिलहाल अंतरंग की तीव्रता है, निश्चयात्मकता नहीं बनी है।

नेमीचन्द जैन : व्यवधान किस तरह के होते हैं?

आचार्यश्रीजी : संघगत व्यवधान, पत्र-व्यवहार, विनतियाँ आदि।

नेमीचन्द जैन : इस समय प्रमुख लक्ष्य क्या है?

आचार्यश्रीजी : आत्मा के 'अत्यन्त विकास' की यात्रा, प्राण-साधना। छह घंटे सोता हूँ। शेष घंटे तीव्र जागृति में बीतते हैं। पुरुषार्थ किए बिना कुछ नहीं मिलता। अपूर्णताएँ/अपरिपक्वताएँ सबमें हैं, जिन्हें समता-दर्शन और समीक्षण ध्यान से दूर किया जा सकता है।

नेमीचन्द जैन : क्या इस बीच कोई आशाजनक सामाजिक परिवर्तन हुआ है?

आचार्यश्रीजी : अवरोध हैं, निराशाएँ बढ़ी हैं, किन्तु समाज अब व्यक्ति को पहचानने लगा है। लोगों में जिज्ञासाएँ हैं, किन्तु उनके पास कोई सक्षम सम्बल नहीं है। ज्यादातर लोग कुण्ठित दिख रहे हैं। यदि हमने सामाजिक कुण्ठाओं का कोई तर्कसंगत मनोवैज्ञानिक तरीका

नहीं ढूँढा तो ये बढ़ती जाएँगी।

नेमीचन्द जैन : मुख्य समस्या क्या है?

आचार्यश्रीजी : प्रश्न तो बहुत सारे हैं, किन्तु डॉक्टर साहब, उत्तरदाता नहीं हैं।

नेमीचन्द जैन : उत्तरदाताओं की संख्या बढ़ाइए!

आचार्यश्रीजी : इन वर्षों में पन्द्रह-बीस लोग आये। सब सन्तुष्ट लौटे। कुछ भ्रान्तियाँ हैं, जिनके कारण लोग सही व्यक्ति (उत्तरदाता) तक अपनी पहुँच नहीं बना पा रहे हैं।

नेमीचन्द जैन : साधु वर्ग में आप कैसे परिवर्तन की अपेक्षा रखते हैं?

आचार्यश्रीजी : यही कि वे अपनी चर्या-लक्ष्य में अविचल बनें। अपरिपक्व दीक्षाएँ बंद हों। स्वाध्याय की वृत्ति बढ़े।

नेमीचन्द जैन : पतनोन्मुख (नीचे की ओर गिरते हुए) आहार-विवेक के बारे में आप क्या सोचते हैं?

आचार्यश्रीजी : आहार निर्दोष/शुद्ध होना चाहिए। इस बारे में गृहस्थ को जागृत करना होगा। गाँवों में भी काम करने की गुंजाइश है। आदिवासियों और छात्रों में व्यसनमुक्ति अभियान को अच्छी सफलता मिल सकती है और इसके दूरगामी परिणाम निकलेंगे। जो भी हम करें, अहिंसा उसकी नींव में हो, इसका ध्यान रखें।

नेमीचन्द जैन : राजनीति के बारे में आप क्या सोचते हैं?

आचार्यश्रीजी : इधर के वर्षों में राजनेताओं ने कई गलतियाँ की हैं। अपनी कुर्सियाँ सुरक्षित रखने के लिए उन्होंने बुराइयों को बढ़ावा दिया है। पश्चिम की नकल करने के दुष्परिणाम सामने आए हैं। टी.वी. ने भी हमें गिराया है। यदि हम अध्यापक को सक्रिय कर सकें तो अभी भी कुछ किया जा सकता है। अध्यापक आज भी एक विश्वसनीय इकाई है।

नेमीचन्द जैन : जैन समाज को समन्वित कैसे किया जाए?

आचार्यश्रीजी : यदि अध्यात्म को आधार बनाएँगे तो काम आसान हो जाएगा।

नेमीचन्द जैन : क्या जैनधर्म की वैज्ञानिकता को स्पष्ट करने के लिए कोई योजना बनाई जानी चाहिए?

आचार्यश्रीजी : क्यों नहीं? परमाणु विज्ञान का क्षेत्र सामने है। जैन साहित्य में इस विषय पर विपुल सामग्री है। आहार-विज्ञान को लेकर हम साधन-सम्पन्न प्रयोगशालाएँ स्थापित कर सकते हैं। आहार-विज्ञान अर्थात् कौनसा आहार स्वास्थ्यवर्धक है। ऐसे प्रमाण के साथ लोगों के सामने लाएँ। तथ्यों की विश्वसनीयता के लिए प्रामाणिकता आवश्यक है, जो अध्ययन/अनुसंधान से ही संभव है।

-संकलित

नानेशवाणी

जीवन की एक नयी व्याख्या

-परम पूज्य आचार्य प्रवर 1008 श्री नानालालजी म.सा.

मैं गहराई से चिन्तन करता हूँ तो एक प्रश्न उठता है कि यह जीवन क्या है? - **किं जीवनम्?** जहाँ तक जीवन की व्याख्या का सम्बन्ध है, जितने मुँह, उतनी व्याख्याएँ सुनने को मिल सकती हैं। किन्तु क्या कोई व्याख्या ऐसी है जो सूत्र रूप भी हो तथा अर्थसूचक भी हो?

मेरे मन में आता है कि जीवन की पूर्णता किसमें मानी जानी चाहिए? जीवन की पूर्णता वही है, जो वीतराग देव प्राप्त कर चुके हैं तथा सम्पूर्ण संसार को बता चुके हैं। वह पूर्णता प्रकट होती है- समता की पूर्णता में।

इस दृष्टि से जीवन की जो भी नयी व्याख्या मैं बनाऊँ, उसमें समता-भाव का तो प्रमुख स्थान होगा ही। फिर यह सोचा जाए कि समता के उच्चस्थ शिखर पर पहुँचने के लिए कौनसे एक बिन्दु को खोजा जाए जो सर्वाधिक महत्त्वपूर्ण हो।

सर्वाधिक महत्त्व का बिन्दु मुझे यह महसूस होता है कि जीवन को समतामय बनाने के लिए यथासमय यथोचित रीति से सही और सम्यक् निर्णय लिया जाए। ज्ञान हम प्राप्त कर लें, सिद्धान्त को भी समझ लें, किन्तु उसको विधिपूर्वक जीवन के आचरण में उतारने का यदि हम समय पर निर्णय नहीं ले सकें, तो उस ज्ञान और सिद्धान्त का हमें विशेष लाभ नहीं मिल सकता है। अतः सही निर्णय के बिन्दु को ही हमें सर्वाधिक महत्त्व देना होगा।

जीवन क्या है? इसके उत्तर में इस रूप से सूत्र रूप व्याख्या तैयार की जा सकती है कि-

'सम्यक् निर्णायकं समतामयं च यत् तज्जीवनम्' अर्थात् जीवन वही, जो सम्यक् निर्णायक हो तथा समतामय हो।

मेरी सम्मति में आज के युग की सबसे बड़ी आवश्यकता है कि मूल्यों में परिवर्तन हो। अर्थ पर आधारित मूल्यों को समाप्त करना होगा और उन्हें मनुष्यता पर आधारित बनाना होगा। तभी समता का व्यक्ति की साधना में तथा समाज के नवनिर्माण में व्यापक रूप से सच्चा विकास सम्पादित किया जा सकेगा।

मैं इस दृष्टि से साध्य और साधन का समीकरण करते हुए जीवन की सूत्र रूप एवं सारपूर्ण इस व्याख्या को कि-

'सम्यक् निर्णायकं समतामयं च यत् तज्जीवनम्' को विशेष महत्त्व देना चाहूँगा कि यह नयी व्याख्या जीवन के मानवीय मूल्यों को प्राथमिकता देती है। समता जिस जीवन का साध्य होगी, उसका सच्चा साधन सम्यक् निर्णय ही हो सकेगा, जो एक समता साधक के ज्ञान, विवेक एवं ध्यान की कसौटी रूप होगा। सम्यक् निर्णय का सम्बन्ध भी सदा भावनात्मक ही होगा तथा विकसित भावना के अनुसार ही उस निर्णय की श्रेष्ठता एवं प्रभावकता सिद्ध होगी। इस प्रकार जीवन की पूर्णता इस छोटी-सी व्याख्या के दो शब्द समूहों में समाविष्ट कर ली गयी है। ये दो शब्द समूह आत्मविकास की महायात्रा के पथ पर प्रकाशित होने वाले एक प्रकार से दो दीप-स्तंभ हैं।

साभार- नानेशवाणी-02 (आह्वान अपनी चेतना का)

मासखमण की तपस्याएँ भी चलती हैं। सभी अनशन के मासखमण नहीं कर सकते। उनके लिए मैं कहता हूँ कि ऐसा मासखमण कीजिए जिसमें संकल्प हो कि तीस दिन तक किसी की निन्दा नहीं करेंगे, तीस दिन तक क्रोध नहीं करेंगे, तीस दिन तक ऐसा अहंकार, जिससे दूसरों को हीन दृष्टिगत करवाया जाए, नहीं करेंगे। किसी के साथ तीस दिन तक बुरा व्यवहार नहीं करेंगे, ऐसी कोई कार्यवाही, जिससे दूसरे का नुकसान होता हो, उससे हम अपना बचाव करेंगे। ये जीवन जीने के सूत्र हैं। व्यक्ति स्वयं अपने आप में ऊँचा उठना चाहता है, उसे ऊँचा उठना पसंद है, किन्तु पड़ौसी या दूसरा व्यक्ति ऊँचा उठने लग जाए तो वह उससे हर्षित नहीं होता है। हमारे मन में यह विचार होना चाहिए कि हम जैसी उन्नति करना चाहते हैं, वैसी ही उन्नति दूसरे व्यक्ति को भी करने का अधिकार है। उस उन्नति में हमारा योगदान भी अपेक्षित है। अतः हम अपना योगदान दें। आपके योगदान से दूसरे ने उन्नति की तो उसमें आपकी उन्नति अपने आप ही जुड़ जाएगी। इसलिए मैं एक सामान्य बात कह रहा हूँ कि हम किसी को गिराने का नहीं, उठाने का काम करें। उठाने का काम करेंगे तो समझ लीजिए कि हमारी आत्मा उससे पहले उठ चुकी होगी।

बंधुओ! हमें प्रेरक प्रसंग से प्रेरणा लेनी चाहिए और हमारा जीवन कैसे सहज और सुन्दर बने, कैसे असहज अवस्था सहज बने, इस दिशा में हमारा चिंतन चलना चाहिए। सहज बनाने की दिशा में हमें प्रयास करना चाहिए। हम चिन्तन करें कि हम अपने आपको सहज कैसे बना सकते हैं। प्रैक्टिकल रूप से हम कुछ चिंतन करें। ऐसे प्रयोग हैं, ऐसे फार्मूले हैं, जिनके माध्यम से हम चाहे कैसी भी विकट परिस्थिति में हों, अपने आपको सहज बना सकते हैं। हम उन फार्मूलों को पहचानें, उन्हें प्रयोग में लाएँ और अपने आपको सहज बनाने की दिशा में गति करें।

साभार- श्री रामउवाच-08 (धर्म सुना तो क्या हुआ)

धर्मदेशना

सहज जीवन जीने की कला

-परम पूज्य आचार्य प्रवर 1008 श्री रामलालजी म.सा.

'स्व' के अध्याय का यह कोई एकाध बार प्रयोग नहीं होता, यह एक लम्बी प्रक्रिया होती है, जिसका विचार एवं विवेकपूर्वक निर्वाह करना आवश्यक है। आप अपने व्यावहारिक ज्ञान के संदर्भ में ही इस प्रक्रिया को समझिए। सोचें, आप अपने पुत्र को एक डॉक्टर बनाना चाहते हैं, तो आपको उसे कितने अर्से तक पढ़ाना और कितना लम्बा धीरज रखना पड़ता है। कोई 19-20 वर्ष। इतने लम्बे समय तक जब आपका पुत्र लगातार उत्तीर्ण होता चला जाए, तब कहीं जाकर डॉक्टरी डिग्री प्राप्त होती है। डॉक्टरी की डिग्री ले लेने के बाद में भी एकदम हाथ साफ नहीं हो जाता है या कुशलता प्राप्त नहीं हो जाती है। उसके लिए भी लम्बे समय के अभ्यास की जरूरत होती है तथा ख्याति प्राप्त करने के लिए और भी ज्यादा समय चाहिए।

जब किसी व्यावहारिक ज्ञान एवं उसके कुशल क्रियान्वयन के लिए भी इतना समय यानी कि कम से कम आधी-पौनी जिंदगी लग जाती है तो फिर 'स्व' का अध्याय तो मेडिकल या इंजीनियरिंग के ज्ञान से बहुत अधिक गूढ़ एवं विस्तृत होता है, बल्कि दोनों प्रकार के ज्ञान की परस्पर कोई तुलना करना ही समीचीन नहीं है, तो भला विचारिए कि आत्म-ज्ञान की सम्प्राप्ति एवं उसकी सफल क्रियान्विति के लिए कितने समय की अपेक्षा रहेगी? यदि आप लोग व्यावहारिक ज्ञान के लिए आधी-पौनी जिंदगी खपा देते हो, तो इस गूढ़ आत्म-ज्ञान के लिए तो कई जिंदगियों की जरूरत रहेगी। किन्तु यह कैसी चिन्तनीय विडम्बना है कि आप आत्म-ज्ञान की गहराइयों में प्रवेश करने के लिए सामान्य समय तक निकालने की चेष्टा भी नहीं करते हैं। आप यह छोटी-सी प्रतिज्ञा कर लीजिए कि प्रतिदिन नियमित रूप से निश्चित समय पर स्वाध्याय करने के निमित्त केवल एक घंटा देंगे, जो अत्यंत अल्प समय होगा। फिर भी मेरा विश्वास है कि यदि कोई जिज्ञासु स्वाध्याय की नियमितता को निभाते हुए कम से कम एक वर्ष भी गुजार ले तो उसे आत्म-दर्शन के सौभाग्य का माध्यम मिल सकता है।

नियमित स्वाध्याय से स्वाध्यायी की अन्तरात्मा में ऊर्जा का एक ऐसा भण्डार तैयार होगा, जो सतत् क्रियाशील रहेगा। ऊर्जा की क्रिया-प्रक्रिया से आप परिचित होंगे कि उससे ऐसी शक्ति का उत्पादन होता है, जो विविध प्रकार की उपलब्धियों को सहज ही में सुलभ कराती है।

स्वाध्याय से प्राप्त ऊर्जा की शक्ति के फलस्वरूप आध्यात्मिक क्षेत्र में कई सिद्धियाँ प्राप्त की जा सकती हैं, किन्तु सामान्यतया भी ऐसे सद्गुणों का विकास किया जा सकता है, जिनकी सहायता से व्यक्ति एवं समाज के जीवन को संवारा जा सके। स्वाध्याय के सुफल उत्थानकारी भी होते हैं, तो वे दीर्घजीवी भी बनते हैं। सुसंस्कारों के प्रसार का रहस्य भी स्वाध्याय में समाया हुआ है, यह मानकर चलें।

साभार- नानेशवाणी-11 (संस्कार क्रान्ति-1)

नानेशवाणी

स्वाध्याय की नियमितता क्यों?

-परम पूज्य आचार्य प्रवर 1008 श्री नानालालजी म.सा.

कोई भी कार्य, लौकिक हो या पारलौकिक हो, वह आत्मबल से ही सिद्ध होता है। अपने जीवन में पग-पग पर मनुष्य इसका अनुभव करता है। अतएव आत्मज्ञान के लिए, आत्मबल जागृत करने के लिए अपने आपको जानना और समझना अर्थात् आत्मचिन्तन करना आवश्यक है। आत्मा के अन्दर समस्त ब्रह्माण्ड है। उस ब्रह्माण्ड को देखना, उसका चिन्तन करना, उसके भीतर झाँकना ही स्वाध्याय है। स्वाध्याय से व्यक्ति जितना भीतर उतरेगा, जितना अन्तःकरण को देखना शुरू करेगा, उतना खुद को जानेगा कि मैं कौन हूँ? कहाँ से आया हूँ? मुझे कहाँ जाना है? मैं क्या कर रहा हूँ? ऐसे प्रश्न मन में उठेंगे। आत्मचिन्तन के रूप में किया गया चिन्तन अनमोल चिन्तन है और यही स्वाध्याय है। हमारे अन्दर राग, द्वेष, मोह, हिंसा, परिग्रह, क्रोध, मान, माया, लोभ भरे पड़े हैं। इनका अध्ययन एकमात्र स्वाध्याय से ही किया जाता है। स्वाध्याय राग-द्वेष की जड़ खोज निकालता है, पर सुख का सच्चा स्रोत तो आत्मा में है। सुख की कुँजी आत्मज्ञान है, जिसको प्राप्त करने का साधन स्वाध्याय है।

स्वाध्याय ज्ञान दीपक

मनुष्य के अन्दर हर समय गहन प्रश्न उठते हैं। किसी मायावी के जादू की तरह यह अनेक स्थितियों को उत्पन्न कर देता है। मनुष्य हर समय अन्धकार से प्रकाश की ओर जाना चाहता है और इस अंधकार में प्रकाश की किरण देने वाला स्वाध्याय होता है। स्वाध्याय अंधकार से भरे हुए जीवनपथ को प्रकाशित करने के लिए जगमगाते हुए दीपक के समान है। जिसके दिव्य प्रकाश में हेय, ज्ञेय व उपादेय तीनों का ज्ञान होता है। आत्मा की उन्नति के लिए स्वाध्याय बड़ा अच्छा साधन है।

'अध्ययनमध्यायः सु-सुन्दरो-अध्यायः स्वाध्याय।'

अच्छे आचार, अच्छे विचार वाले शास्त्र को पढ़ना ही स्वाध्याय है। स्वाध्याय में उत्तम पुस्तकों को ही स्थान देना चाहिए। शास्त्र, धर्मग्रन्थ, महापुरुषों के जीवन चरित्र और आत्मज्ञान सम्बन्धी साहित्य पढ़ने से निश्चय ही विचारों में तदनुकूल परिवर्तन होकर जीवन सुधरता है और आत्मोन्नति के मार्ग पर आत्मा सुख का अनुभव करती है।

सुख-दुःख संसार की अवस्थाएँ हैं। जो संसार में है उसे सुख-दुःख भोगना ही पड़ता है। जीवन की यात्रा में कभी-कभी ऐसी स्थितियाँ आ जाती है जब मन उदास व चिन्ताग्रस्त हो जाता है या उदासीनता से भर जाता है। जिस प्रकार दिन में सूर्य पर बादल छा जाते हैं तो सूर्य के होते हुए भी अन्धकार लगता है, उसी प्रकार हमारे आत्मारूपी सूर्य पर चिंतारूपी बादल छा जाते हैं। उन चिंतारूपी बादलों को हटाकर स्वाध्याय मन के, आत्मा के सूर्य को प्रकाशित कर देता है। जिस प्रकार सूर्य के प्रकाश से वनस्पतियों का विकास होता है, उसी प्रकार स्वाध्याय से आत्मा का विकास होता है। स्वाध्याय एक चिंतामणि रत्न है, परंतु हम उसकी कीमत नहीं जानते। जब कीमत समझ आती है तब तक समय निकल जाता है। इसीलिए स्वाध्याय करना आवश्यक है।

स्वाध्याय : एक आत्मचिंतन

संकलित

आस्था की अनिवार्यता

-परम पूज्य आचार्य प्रवर 1008 श्री नानालालजी म.सा.

मैं इस विश्लेषण के साथ आज्ञापालन के महत्त्व तथा आस्था की अनिवार्यता के प्रश्न को सुलझाना चाहता हूँ। आज्ञापालन में मनुष्य की स्वतंत्रता का हनन होगा तब माना जाएगा, जब बुद्धि या तर्क से सुलझाई जा सकने वाली समस्याओं में भी आज्ञापालन को ही प्रथम और अन्तिम महत्त्व दिया जाय। किन्तु जहाँ बुद्धि की पहुँच न हो और जहाँ पहुँच कर तर्क भी थम जाए, ऐसे आध्यात्मिक रहस्यों के क्षेत्र में आत्मानुभवी एवं समतादर्शी महापुरुषों की आज्ञाओं का पालन एक साधक के लिए अपने आत्म-विकास का सबल माध्यम हो सकता है। कहा गया है कि संसार को जानने के लिए संशय अनिवार्य है और संशय तर्क को जन्म देता है किन्तु समाधि (आत्म-सुख) के लिए आस्था अनिवार्य है।

मैं अपने व्यावहारिक अनुभव का भी चिन्तन करता हूँ तो लगता है कि वहाँ पर भी व्यक्ति की विश्वसनीयता का महत्त्व कम नहीं है। पूरा विश्वास उपज जाने पर अंधेपन से भी उस व्यक्ति का आश्रय ले लिया जाता है, अपने गहरे विश्वास के कारण। फिर उन महापुरुषों की आज्ञाओं पर भला आस्था बलवती क्यों नहीं बनेगी, जिनकी आज्ञाएँ मूलतः और पूर्णतः मेरे ही व्यापक हित के लिए हैं। यह नहीं कि मैं उन आज्ञाओं को समझूँ ही नहीं। नहीं समझूँगा तो उनका पालन ही कैसे करूँगा? लेकिन समझने के साथ अपनी गहरी आस्था को उनके साथ जोड़ूँ, क्योंकि उनका वस्तुविषय कम से कम अभी मेरे लिए अगम्य है। किन्तु आस्था मजबूती से जुड़ेगी तो वह अगम्यता मेरे लिए बाधक नहीं बनेगी। बाधक क्या, मैं उस अगम्यता में भी साहस के साथ प्रवेश कर जाऊँगा, क्योंकि आस्था मेरा सुदृढ़ संबल हो जाएगी।

वीतराग देवों द्वारा दर्शित आध्यात्मिक साधना कोई सामान्य साधना नहीं, मूल्यों की साधना होती है और मूल्यों की साधना में मूल्यों के प्रति अमिट आस्था होनी चाहिए। मैं अपने अनुभव से कह सकता हूँ कि संसार के व्यवहार में मनुष्य कोई सत्कार्य भी अधिकांशतः प्रशंसा या यश प्राप्त करने के लिए करता है परन्तु उसकी इस भावना का दुष्परिणाम यह होता है कि यदि उसे वांछित प्रशंसा या कीर्ति नहीं मिलती है तो वह निराश होकर अपने सत्कार्यों को ही छोड़ देता है अथवा उसके सत्कार्य अपने 'सत्' गुण को त्याग देते हैं क्योंकि वह कैसा भी जोड़-तोड़ करके प्रशंसा या कीर्ति प्राप्त करने में प्रयत्नशील रहता है। इस कारण मूल्यों के साधक के लिए प्रशंसा या कीर्ति की चाह करना निषिद्ध है। एक तो उसके इस असाधारण कार्य को सामान्य जन समझ नहीं पाएँगे तो दूसरे, प्रशंसा या कीर्ति की लालसा उसके कार्य की शुद्धता को बनाए नहीं रखेगी। इस कारण मूल्यों के साधक के लिए आस्था ही नौका हो और आस्था ही खेवैया। एक आस्थावान् साधक अपनी आस्था के सम्बल के साथ अपने को सर्वाधिक सुरक्षित मानता है। वैसा साधक तो अपने व्यक्तिगत तथा सामाजिक जीवन में भी मूल्यों की साधना से अमिट आस्था के साथ जुड़ा हुआ रहता है।

मैं जान गया हूँ कि मुझे भी यदि आत्मविकास की इस महायात्रा में विज्ञाता और दृष्टा बनना है तो आस्था का सम्बल लेना ही होगा। वह आस्था सम्यक् हो यानी कि सम्यक् प्रतिमानों के प्रति हो, सम्यक् श्रद्धा होगी, तभी ज्ञान भी सम्यक् बनेगा और आचरण भी सम्यक्त्व स्वरूपी होगा।

साभार- नानेशवाणी-03 (अनुभूति के क्षण)

अविचल आस्था : सिद्धि का मार्ग

-परम पूज्य आचार्य प्रवर 1008 श्री रामलालजी म.सा.

अनेक ऐसी घटनाएँ घटती रहती है जिन्हें चमत्कार कहा जा सकता है। ऐसी ही पूर्व की एक सत्य घटना है। आचार्य भगवन् का चातुर्मास नोखा में चल रहा था। एक परिवार में, जो धर्मस्थान के निकट ही रहा था; एक माँजी भी थी, जो लगभग 80-85 वर्ष की थी। वे खाट से उठ नहीं पाती थीं। उठाने के लिए उन्हें सहारा देना पड़ता था, आँखों से उन्हें कम दिखाई देता था। संवत्सरी के पश्चात् आचार्यदेव कुछ घरों में दर्शन देने पधारे। एक भाई ने आकर निवेदन किया कि आप मेरी दादीजी को भी दर्शन देने की कृपा करें। गुरुदेव पधारे, दर्शन दिये।

गुरुदेव ने माँजी को जब तक आप स्वयं उठकर काम करने की स्थिति में नहीं आ जाए तब तक अठारह ही पाप एवं पुत्रवधू जो दे दे उसके अलावा अन्य पदार्थों के खाने के त्याग करवा दिये। गुरुदेव मंगलपाठ सुनाकर स्थानक पधार गए। थोड़ी देर में ही उधर उन माँजी ने कहा कि वह लोटा बीच में क्यों रख दिया है। घर वाले सोचने लगे इन्हें तो दिखाई नहीं देता है। शायद स्मृति-भ्रंश से कह रही होंगी। थोड़ी देर बाद माँजी और भी चीजों की ओर इशारा करने लगीं। पूछा, क्या आपको दिखाई देता है और उन्हें अंगुलियाँ दिखाई, उन्होंने बता दी। कोई कहे ऐसा कैसे हो सकता है? पर मैं प्रत्यक्षदर्शी हूँ। दूसरे दिन मैं स्वयं धोवन लेने उनके घर गया तो वह उठने लगीं। मैंने कहा- ''इन्हें क्यों तकलीफ देते हो।'' तो उनकी पुत्रवधू ने बताया कि ये तो उठकर घूमने-फिरने लग गयी हैं और माँजी ने पुत्रवधू के साथ हाथ लगाकर पानी बहराया। मुझे भी आश्चर्य हुआ। मैंने भी अंगुलियाँ दिखायी वे कहने लगीं- ''आप भी कंई टाबरां दांई करो।'' उन्होंने अंगुलियाँ गिनकर बता दीं। इस घटना की जानकारी होते ही बीकानेर, गंगाशहर, भीनासर, देशनोक आदि क्षेत्रों से अनेक व्यक्ति माँजी के दर्शन को आने लगे। बीकानेर से डॉ. सक्सेना, डॉ. सुराना, डॉ. पुनिया भी उपस्थित हुए और सत्य स्वीकार किया। यह कोई अनहोनी या आश्चर्यजनक घटना नहीं थी। जब निष्ठा गहरा जाती है तब सब कुछ संभव हो जाता है।

जलगाँव प्रवेश के समय की एक घटना है। ईश्वरचंदजी ने निवेदन किया- ''गुरुदेव! आप फैक्ट्री में विराजें।'' रात्रि को उनके पिताजी कहने लगे- ''गुरुदेव! मैं प्रवेश में उपस्थित नहीं रह सकूँगा। पूना से समाचार आये हैं, अचलादेवी (उनकी पुत्री) को हार्टअटैक के कारण हॉस्पिटल में भर्ती कराया गया है।'' सहज ही गुरुदेव के मुख से निकल गया कि अचलाबाईजी को अटैक तो नहीं होना चाहिए। उन्होंने गुरुदेव के उद्‌गार श्रद्धा से स्वीकार किये और चमत्कार हो गया। कुछ समय पश्चात् उन्हें पुनः समाचार मिला कि हार्टअटैक तो नहीं है। कुछ गैस ट्रबल है और उनके जाने का प्रसंग नहीं बना। इस प्रकार यह स्पष्ट है कि हमें ज्ञात नहीं हो पाता, पर जहाँ स्वच्छ या शुद्ध हृदय से साधु के मुँह से बात निकलती है तो वह खाली नहीं जाती।

हमारी सत्यनिष्ठा, एकनिष्ठा के साथ जुड़ जाए और अविचल आस्था पैदा हो जाए तो दुःख, द्वंद्व पैदा ही नहीं होंगे। वे तब ही आते हैं जब हम विचलित होते हैं। हम अविचल हैं तो हमें कोई भी शक्ति परास्त नहीं कर सकती। क्योंकि जब हम जीवन को संस्कारित व अप्रमत्त बना लें फिर जो अनुभूति होगी वह सत्य होगी। दृढ़ श्रद्धान पैदा होगा तो प्रमाद, असंस्कार आदि स्वतः ही दूर हो जाएँगे। यह जीवन के आमूलचूल परिवर्तन की स्थिति होगी। जिसके बनने पर हमारी आत्मा भी उस स्थान तक पहुँचने की पात्रता प्राप्त कर लेगी, जिस स्थान तक प्रभु पहुँचे हैं।

साभार- श्री रामउवाच-03 (चैतन्य की यात्रा)

दहेज एक अभिशाप

-परम पूज्य आचार्य प्रवर 1008
श्री नानालालजी म.सा.

दहेज-प्रथा को बढ़ाने और मांगने वाले लोग भी भारी हिंसा करते हैं। इस प्रथा ने समाज के जीवन को बहुत दूषित बना दिया है। यह प्रथा अनेक बार हिंसा को प्रेरित तथा उत्तेजित करती है। इस प्रसंग में मैं कभी-कभी एक घटना का जिक्र किया करता हूँ। वह दु:खद घटना इस प्रकार है-

दिल्ली में एक अध्यापक थे। वेतन केवल ढाई सौ रुपया था। पत्नी तो थी ही, तीन कन्याएँ भी थीं। दिल्ली जैसा नगर और अल्प वेतन, गुजर बसर कठिनाई से ही होता था। किन्तु किसी प्रकार से, कठिनाइयाँ झेलते हुए भी उन्होंने अपनी कन्याओं को अच्छी शिक्षा दिलायी थी। अब उनके सामने यह प्रश्न आया कि उन कन्याओं को किसे सुपुर्द करें? उनका विवाह किस प्रकार किया जाए? ढाई सौ रुपये में से तो कुछ बचत होने का प्रश्न ही नहीं था। अब विवाह का खर्च कहाँ से लाएँ तथा इस प्रकार घोर सामाजिक अभिशाप दहेज का प्रबन्ध कैसे करें? कन्याएँ सभी प्रकार से सुयोग्य तथा सुशिक्षित थीं, किन्तु सास-ससुर को देने के लिए, उनकी अर्थलोलुपता को सन्तुष्ट करने के लिए द्रव्य उन अध्यापक के पास नहीं था।

अत: पति-पत्नी घोर चिन्ता में डूबे रहते थे। प्राय: आपस में चर्चा किया करते थे और समस्या का कोई समाधान खोजने का प्रयत्न करते थे। किन्तु समाधान कोई होता तो निकलता। इस प्रकार दु:खी होकर वे सिर पीटकर रह जाते थे। अपनी बच्चियों की ओर देखकर रोया करते थे।

एक दिन बच्चियों ने अपने माता-पिता को गहन चिन्ता में डूबा हुआ देखा और उनकी बातचीत भी सुनी। स्वाभाविक रूप से उनके कोमल हृदय पर इससे बड़ी ठेस लगी। एक दिन अवसर देखकर जब माता-पिता दोनों ही घर से बाहर गये हुए थे, उन बच्चियों ने एक निश्चय किया और मिट्टी का तेल छिड़ककर आग लगाकर जल मरी।

बन्धुओ! वे कोमल, निष्पाप बालिकाएँ, जो यह आत्मघाती हिंसा करके जल मरी, वह किसके सिर पर है? यह दायित्व किसका?

इतना ही नहीं घटना का अन्तिम चरण यह है कि वे पति-पत्नी जब घर लौटे और उन्होंने यह दर्दनाक दृश्य देखा। अपनी फूल जैसी कोमल बालिकाओं को दु:खदायी मृत्यु को देखकर उनका हृदय हाहाकार कर उठा। अब उनके लिए इस जीवन का कोई अर्थ, कोई मूल्य नहीं रह गया। परिणामत: वे भी इस दु:खी जीवन से हताश-निराश होकर उसी पथ के अनुगामी बन गये जिस पथ पर उनकी पुत्रियाँ गयी थीं।

बन्धुओ! बालिकाओं ने सोचा कि हमारा जीवन माता-पिता के लिए आर्त-रौद्र ध्यान का विषय बन गया है। धार्मिक एवं आध्यात्मिक ज्ञान के अभाव में वे बेचारी आत्मघात जैसे पाप के मार्ग पर चली गईं। उसी प्रकार माता-पिता भी इस दोष सहित जीवन में दबकर जल मरे।

आज समाज एवं देश की यह स्थिति है। कैसी विडम्बना जीवन में भर गई है? कितना दोषमय हो गया है यह जीवन, आज का बुद्धिवादी वर्ग भी इस चक्र में बुरी तरह पिस रहा है। यह सभ्य हिंसा हो रही है और लोग कानों में तेल डालकर आँखों पर पट्टी बांधकर इन सामाजिक हिंसाओं को देख रहे हैं। इस नर हिंसा से सदा बचना चाहिए।

साभार- नानेशवाणी-46 (दृष्टान्त सुधा)

दहेज प्रथा : विक्षिप्त मानसिकता की परिचायक

-श्रमणोपासिका

दहेज शब्द हर लड़की व उसके माता-पिता को भयभीत करता रहता है। यह शब्द एक लड़की को माता-पिता पर बोझ होने का अहसास कराता रहता है और माता-पिता को भीतर ही भीतर तिल-तिल जख्मी करता है।

दहेज की परिभाषा से कोई भी परिवार, व्यक्ति, समाज अनजान नहीं है और ना ही दहेज प्रथा के भयंकर परिणामों से। दहेज लेना व दहेज देना दोनों ही गलत है। वर्तमान में यह एक गंभीर बीमारी का रूप ले रहा है। धनाढ्य परिवारों ने दहेज देने की कोई सीमा ही नहीं रखी है। लड़के वाले चाहे अच्छे-खासे परिवार से हो तो भी उन्हें अपनी शान-ओ-शौकत में कोई कमी नहीं चाहिये। इन सबका असर पड़ता है मध्यम एवं निम्नवर्गीय परिवारों पर। इस झूठी शान एवं दिखावे के चलते उन्हें अच्छे घरों में रिश्ता करते हुए सोचना पड़ता है या ऐसा कहना भी अनुचित नहीं होगा कि इन धनाढ्य परिवारों ने तो अपनी नासमझी से बेटियाँ ब्याहने का एक ऐसा स्तर तय कर दिया है, जिस स्तर को निम्न वर्ग के परिवार छू भी नहीं सकते हैं।

कहने का आशय है कि गलती सिर्फ दहेज लेने वालों की नहीं है बल्कि दहेज देने वालों की भी है। यदि आपने अपनी बेटी के लिए योग्य वर की तलाश की है तो उस वर की योग्यता पर विश्वास रखें, ना कि यह सोचें कि हमें अपनी बेटी का घर भरना है। माता-पिता द्वारा इसी अवांछित बेटी दुलार में अपनी सम्पत्ति लुटाने से भविष्य में दोनों परिवारों को कई परेशानियों का सामना करना पड़ता है। कई बार तो विवाह टूटने, पति-पत्नी में सामंजस्य नहीं बैठने एवं आपस में एक-दूसरे को जलील करने जैसी स्थितियाँ उत्पन्न हो जाती हैं।

अतः यदि हम सब मिलकर निश्चय करें कि ना दहेज लेंगे, ना दहेज देंगे तो निश्चय ही एक स्वस्थ्य समाज, स्वस्थ परिवार की स्थापना होगी और समाज एक बहुत बड़ी कुप्रथा से मुक्त बनेगा।

आचार्य श्री रामेश का चिन्तन समाज से ऐसी कुप्रथाओं के उन्मूलन हेतु सदैव सकारात्मक बना रहता है। इसी चिन्तन के रूप में आपश्रीजी ने उत्क्रान्ति का आयाम प्रदान कर समाज को एक नई राह दिखाई है। अनेक क्षेत्रों ने आपश्रीजी के इस आयाम को ग्रहण कर अपने सम्पूर्ण क्षेत्र को ही उत्क्रांति क्षेत्र घोषित करवा लिया है, लेकिन अभी भी कुछ गुरुभक्त इस आयाम को आत्मसात् करने हेतु हिचकिचाहट महसूस कर रहे हैं। संघ के प्रत्येक सदस्य का यह कर्त्तव्य है कि वह आचार्यदेव के दिखाए हुए मार्ग पर चलकर समाज एवं संघ उत्थान में सहयोगी बने। अतः सभी के सम्मिलित प्रयासों से ही ऐसी कुप्रथाओं को समाज से समूल उखाड़ा जा सकता है।

संस्मरण

मंगल प्रभात का उदय

-संकलित

वर्ष 1949 में जयपुर-हिण्डौन मार्ग पर करौली के आस-पास डूबते सूरज की लालिमा चारों ओर बिखरने लगी थी। पक्षी अपने घोंसलों की ओर उड़े जा रहे थे। आचार्य श्री नानेश सान्निध्यवर्ती साधुओं के साथ एक सीमान्त ग्राम में किसी मकान के पास खड़े थे। मकान के बाहर कृशकाय, जीर्ण-शीर्ण वस्त्र पहने एक व्यक्ति बैठा था।

आचार्यश्री ने उससे पूछा- भाई! क्या यह मकान तुम्हारा है?

व्यक्ति- नहीं, ग्राम पंचायत का है।

आचार्यश्री- क्या तुम हमें रातभर यहाँ ठहरने की आज्ञा दे सकोगे?

व्यक्ति सकपका गया कि साधु और आज्ञा! वह सोच रहा था कि ये तो हमारे पूजनीय हैं। **'रमता जोगी, बहता पानी'** के जैसे आज यहाँ, कल वहाँ यानी बिल्कुल निर्मल।

व्यक्ति (संकोच के साथ)- महाराज! आज्ञा कैसे दे पाऊँगा? वो भी आप जैसे महान संत को!

आचार्यश्री (असमंजस में) विनम्र स्वरों में बोले- भाई! हम तो यहाँ बरामदे में ही रातभर रह लेंगे और तुम पर कोई बोझ नहीं डालेंगे।

व्यक्ति- बोझ की कोई बात नहीं है महाराज! मकान खाली है और बिछौने मैं अपने घर से ले आऊँगा। लेकिन..... (लगा जैसे कुछ कहते-कहते कई शब्दावलियाँ उसके गले में अटक गयी हों) धीमे स्वर में कहा- महाराज! और कोई बात नहीं, लेकिन मैं हरिजन हूँ।

आचार्यश्री (साश्चर्य)- तो इससे क्या? हमारे लिए तो सब बराबर हैं।

व्यक्ति (चमत्कृत हो)- तो क्या सचमुच आप एक हरिजन की आज्ञा से यहाँ ठहर जाएँगे?

आचार्यश्री- हम जात-पात को जन्म की अपेक्षा से नहीं मानते और न ही छूआछूत में विश्वास करते हैं। भगवान महावीर ने कहा है कि कोई भी आदमी जन्म से नहीं कर्म से ब्राह्मण, क्षत्रिय, वैश्य या शूद्र होता है। जैसा कर्म करता है, उसी से उसकी कसौटी होती है। तुम हरिजन होने से पहले इंसान हो।

व्यक्ति (शंकित होते हुए)- क्या आप मुझे अपने पैर छूने देंगे?

आचार्यश्री- वैसे मैं किसी को यह नहीं कहता कि तुम मेरे पैर छूओ, किन्तु यदि कोई छूता है तो मैं एतराज नहीं करता।

हरिजन बंधु की आँखें डबडबा आयी, जैसे सदियों का कल्मष आँसुओं के रूप में बह निकला हो। उसे लगा जैसे अंधेरे को भगाकर रोशनी उसका द्वार खटखटा रही हो। उसने आचार्यश्री के पैर छुए और जैन धर्म की सामान्य जानकारी ली, फिर कहा- महाराज! यहाँ के सात सौ गाँवों में हजारों हरिजन हैं। वे ऐसे ही सवेरे की प्रतिक्षा कर रहे हैं। आजादी के बाद अभी रात बीती ही कहाँ है? आप आए हैं तो लग रहा है कि आप अपने साथ कोई सुखद सवेरा लाए हैं।

उसने पुनः आचार्यश्री के चरण छुए, लगा जैसे मानवता के ललाट पर लगी कालिख धुल गयी और मंगल प्रभात का सूर्य उदित हो गया।

संस्कार सौरभ

भक्तों के भगवान आचार्य श्री नानेश

-विजय कुमार चौपड़ा, अजमेर

जैन धर्म की कठोर तप संयम साधना के धनी, जन-जन की आस्था के केन्द्र, हुक्मगच्छीय परंपरा के अष्टम् पट्टधर परम श्रद्धेय आचार्य श्री नानालालजी म.सा. का जन्म संवत् 1977 ज्येष्ठ शुक्ल द्वितीया को दाँता (राजस्थान) में हुआ। आपके पिता सुश्रावक मोडीलालजी पोखरना एवं माताजी सुश्राविका श्रीमती शृंगारबाई थी। आचार्य श्री नानेश की जैन भागवती दीक्षा कपासन में हुई। आचार्य श्री नानेश के जीवन का हर पल कठोर संयम साधना में बीता। आपके दर्शनार्थ जो भी एक बार आ जाता वो आपको सदैव के लिए भगवान के रूप में स्वीकार कर लेता। ऐसे महान आचार्य श्री नानेश के गुणों का वर्णन करना असम्भव लगता है।

परम श्रद्धेय आचार्य श्री नानेश का सं. 2036 में महावीर भवन (पंडाल), लाखन कोठरी, अजमेर में चातुर्मास था, तब आचार्यश्री के दर्शनों का लाभ मिला। आचार्यश्रीजी ने मुझसे पूछा कि किस विषय की पढ़ाई कर रहे हो? मैंने कहा कि साइन्स बायोलॉजी विषय की। आचार्यश्री ने कहा कि इसमें तो फ्रॉग डिसेक्शन भी करना पड़ता होगा? मैंने कहा- हाँ। आचार्यश्री बोले कि यह तो जीव हिंसा है। यदि चिकित्सकीय डिग्री में कामयाब नहीं हुए और चिकित्सकीय सेवा नहीं मिली तो जीव हिंसा के दोषी बन जाओगे। सामाजिक, धार्मिक सेवा का उद्देश्य जीवन में सदैव रखना। ऐसी भावना से उच्च सफलता प्राप्त करोगे। मुझे चिकित्सकीय सेवा की डिग्री मिलने में कामयाबी नहीं मिली अर्थात् लिखने का तात्पर्य यह है कि शायद इसी दूरदर्शिता के कारण उन्हें केवली नहीं पर केवली सरीखे कहा जाता है।

अजमेर में एक बार मैंने कहा कि आप इतने ओजस्वी, मार्मिक, हृदयस्पर्शी, प्रभावशाली प्रवचन फरमाते हैं, लेकिन आप माइक का प्रयोग नहीं करते इस कारण प्रवचन में पीछे बैठने वालों को आवाज स्पष्ट सुनाई नहीं देती है। आपको जनहित में माइक का प्रयोग करना करना ही चाहिए। आचार्यश्रीजी ने फरमाया कि आप जब प्रवचन सुनने आएँ तब सबसे पीछे बैठना, फिर मुझे बताना कि आवाज सुनाई देती है या नहीं। अगले दिन प्रवचन सुनने हेतु सबसे पीछे बैठ गया। मैं आश्चर्यचकित रह गया कि खचाखच भरे प्रवचल स्थल में भी आचार्य श्री नानेश का एक-एक शब्द सभा के अन्त तक स्पष्ट सुनाई दे रहा था।

अजमेर चातुर्मास में एक बार आचार्य श्री नानेश की फोटो खींच ली गयी, जिसे भक्तों ने घरों में लगाना प्रारम्भ कर दिया। जब आचार्यश्री को मालूम हुआ तब आपश्रीजी ने प्रवचन सभा में खुलकर कठोर शब्दों में अपना फोटो घरों में लगाने का निषेध किया और भक्तों ने तुरन्त अपने घरों से आचार्यश्रीजी की फोटो हटा दी। आचार्यश्री को अपनी कठोर तप, संयम साधना, कथनी-करनी की समानता से परिपूर्ण साकार जीवन जीना प्रिय था। वे स्वकल्याण के साथ परकल्याण हेतु भी सदैव चिंतनशील रहते थे।

साधु-धर्म

-परम पूज्य आचार्य प्रवर 1008 श्री नानालालजी म.सा.

साधु का निर्वाह तो **साधु-धर्म** से ही होगा। शास्त्रकारों ने साधु के निर्वाह हेतु विधि बताई है। यदि इस विधि-विधान के अनुसार कोई साधु चलता है तो उसके लिए कोई कमी नहीं रहती। किन्तु यदि सामान्य स्थिति से सेवा कराई गई तो वह सामान्य धरातल पर पहुँच जाएगा। फिर साधु महाव्रती कैसे कहला सकेगा? यदि साधु को कोई गृहस्थ भोजन लाकर देता है तो यह सोचना होता है कि वह भोजन किस स्थान से लाया जा रहा है? वह जमीन को देखकर आ रहा है कि नहीं? कहीं वह किसी वनस्पति या कच्चे पानी को छूकर तो नहीं आ रहा है? भिक्षा सम्बन्धी जो बयालीस दोष कहे गए हैं उन्हें गृहस्थ नहीं टाल सकता है। वह तो अपनी गृहस्थ की स्थिति से चलता है। जो वस्तु जहाँ से भी खाने की मिली, वहीं ले आता है। अतः यदि ऐसी वस्तु को साधु ग्रहण कर लेता है तो गृहस्थ की दृष्टि तो सेवा हो सकती है, किन्तु इससे साधु दोष का भागी बनता है। गृहस्थ के इस प्रकार से भोजनादि लाने में छोटे-मोटे प्राणियों की हिंसा होती है। इस प्रकार करने-कराने एवं अनुमोदन करने की दृष्टि से दोनों दोष लग जाते हैं। साधु तो सृष्टि के समग्र जीवों को एक ही भाव से देखता है, उन सबको वह अपने परिवार के रूप में मानता है, सबके रक्षण की भावना अपने हृदय में रखता है, सबकी शान्ति की कामना करता है, तो ऐसी स्थिति में उन्हें किसी भी प्रकार का कष्ट पहुँचाकर अथवा उनकी हिंसा की चिन्ता न करके लाये गये भोजन को यदि साधु ग्रहण करता है तो उसका व्रत खंडित होता है, वह दोष का भागी बनता है।

मान लीजिए कि एक बड़ा परिवार है। उसमें प्रमुख दादा हैं तथा उनके बेटे, पोते, पड़पोते इत्यादि हैं। अब एक व्यक्ति उन दादा की सेवा करना चाहता है, उन्हें प्रसन्न करना चाहता है। वह उनके पास जाते हुए रास्ते में उनके किसी पोते-पड़पोते को पीटता है, किसी के कान काट लेता है, किसी की अंगुलियाँ काट लेता है और उनकी माला बनाकर दादा को पहनाता है तथा उनके चरण दबाता है और कहता है कि मैं आपकी सेवा करना चाहता हूँ, मुझे सेवा का अवसर दीजिए। तो उस व्यक्ति के उस व्यवहार से दादा प्रसन्न होंगे अथवा अप्रसन्न? उस कृत्य से उनकी सेवा होगी क्या? इसी प्रकार एक साधु जो कि सभी जीवों को अपना परिवार समझता है, सभी जीवों के प्रति दया भाव रखता है, उसकी सेवा के लिए यदि अनेक छोटे-मोटे जीवों को कष्ट पहुँचाते हुए, उनकी हिंसा करते हुए यदि कोई गृहस्थ साधु को भोजनादि लाकर देता है तो साधु उसे कैसे ग्रहण करेगा?

साभार- नानेशवाणी-22 (शान्ति के सोपान)

गंभीर साधक नाना

-रोमिका नवलखा, सूरत

भले ही तुम मुझे मात्र रेगिस्तान देना, मैं चल सकूँ ऐसे चरण देना।
भले ही हर घड़ी उलझन देना, मुझे संकल्प भी कठिन देना।
मैं बोलूँ बाद में मुँह खोलूँ बाद में, प्रथम तुम मुझे आचरण देना।
परमात्म को भी मैं पा सकूँ, मुझे ऐसा एक-आध क्षण देना।
कदाचित् भूल जाऊँ खुद को मैं हरदम, सतत् एक तेरा समर्पण देना।

-अज्ञात

नाना गुरु की बात ही निराली थी। स्वयं ने भी मोक्ष मार्ग की कठिन साधना की और दूसरों को भी सही मार्ग बताया। आचार्यश्री अपनी सरलता और दृढ़ संयम के कारण प्रसिद्ध थे। इसी संदर्भ में एक किस्सा याद आ रहा है - जब गुरुदेव देवगढ़ से होली चातुर्मास हेतु विहार कर रहे थे। बीच रास्ते में ही भयंकर तूफान ने सभी संत-मुनिराज को रुकने पर मजबूर कर दिया। एक पक्षी भी आसमान में नजर नहीं आ रहा था। ऐसी गंभीर स्थिति में भी आचार्यश्री किंचित् भी विचलित नहीं हुए और स्थिरता धारण कर बीच तूफान में सभी संतों को ध्यान करने का आदेश फरमाया एवं खुद भी ध्यान में मग्न हो गए। इस प्रसंग से हमें प्रेरणा लेनी चाहिये और स्वयं के जीवन में अगर उसका अंश मात्र संयम भी उतार पाएँ तो हमारा जीवन सफल हो जाएगा।

पर्युपासना की तीन अवस्थाएँ हैं-

काम : शरीर से केंद्रित, जिस तरह बर्फ होती है, उसी तरह हमारी काया भी हमें बाहरी रूप से वंदन-नमस्कार करने में सहायक है।

प्रेम : मन से केंद्रित, पानी की तरह एक रूप सरल और आनंद उमंग बढ़ाने वाला प्रेम।

भक्ति : आत्मा से केंद्रित, भाप की तरह हमें ऊर्ध्वगामिनी बनाएगी, आत्मा का परमात्मा से निर्मल नाता जोड़ेगी, भावनाओं में शुद्धि करेगी और हमारा जीवन पूर्णत: सफल होगा।

आचार्यश्री ने भावपूर्ण, श्रद्धायुक्त उच्च भक्ति की, जिससे वह मानव से महामानव का पद प्राप्त कर पाए। उनका सम्पूर्ण समर्पण, उनका एक-एक वचन, लाखों लोगों के अन्त:करण को छू जाने वाला था। उनका आचरण हमें परमात्मा से कम न लगे और उन्हीं की शरण में हम भी अपनी भक्ति, श्रद्धा को बढ़ाते जाएँ। हमारा रोम-रोम खिलता जाए और हम परमात्मा से नाता जोड़ने हेतु आगे बढ़ते जाएँ।

मूल और फूल-पत्ती साधना का दृष्टान्त

-परम पूज्य आचार्य प्रवर 1008 श्री नानालालजी म.सा.

एक साधक अपनी साधना के उच्च स्तर पर आरूढ़ होकर विचारने लगा कि वह शान्ति का दर्शन करे। शान्ति-लाभ की जिज्ञासा से उसने अन्न का भी त्याग कर दिया। उसने न तो सही ज्ञान का आधार लिया और न ही किसी श्रेष्ठ गुरु का माध्यम पकड़ा। वह जंगल में भोज्य सामग्री की तलाश करने लगा। एक वृक्ष की छाल हटाकर उसने उस पर अपनी जीभ फिराई और स्वाद ठीक समझकर उसने उस वृक्ष का रस चाटना शुरू किया। वह भूखा होने पर उस वृक्ष का रस चूसता और फिर गुफा में जाकर अपनी साधना में लग जाता है।

कुछ लोगों ने पता लगा लिया कि एक योगी अमुक वृक्ष का रस चूसता है और गुफा में साधना करता है। बात चारों ओर फैली। योगी की प्रशंसा होने लगी और लोग योगी के दर्शन के लिए एकत्रित होने लगे। यह खबर राजा तक पहुँची तो उन्होंने दीवान से कहा कि ऐसे ऊँचे साधक का तो अपने राजभवन में स्वागत करना चाहिए। दीवान ने बताया कि ऐसा प्रयास किया था किन्तु साधक ने प्रस्ताव ठुकरा दिया। राजा ने फिर प्रयास करने का आग्रह किया। दीवान ने सोचा कि यह साधक अपरिपक्व अवस्था से ही एकाकी है सो यह मूल में ही भूल है।

दीवान ने एक वेश्या को भेजा। वेश्या ने गुफा के पास ही अपने लिए तम्बू गड़वाया और नाना प्रकार के स्वादिष्ट भोज्य व्यंजन तैयार करवाकर वृक्ष के तने पर लिपटवा दिया। साधक हमेशा की तरह वृक्ष का तना चाटने लगा। आज उसे कुछ अनोखा ही स्वाद आने लगा। वेश्या इसी प्रकार विशेष स्वाद वाले रसदार पदार्थों का रसास्वादन साधक को कराने लगी। उसकी लोलुपता बढ़ी। वेश्या पुनः-पुनः साधक के जाने पर लेप लगवा देती और वह साधक पुनः-पुनः उसे चाटने बाहर आ जाता। एक दिन अकेले में वेश्या ने पूछ ही लिया कि आप रात में बार-बार बाहर क्यों आते हैं?

साधक ने सच्ची बात कह दी- ''क्या करूँ? स्वाद ने मुझे इतना वश में कर लिया है कि मैं क्षणभर के लिए भी योग में मन नहीं लगा पाता हूँ।''

वेश्या ने उसे अपने तम्बू में ले जाकर स्वादिष्ट पकवान खिलाये। स्वाद का लोलुप साधक उन्हें खाता गया। रसना की मूर्च्छा के साथ ही अन्य इन्द्रियाँ और मन भी मूर्च्छा में डूबने लगा। साधक अब योग से भोग में रमण करने लगा। साधक से वेश्या को सन्तान भी हो गयी। बच्चे को एक दिन पालने में झुलाते हुए वेश्या ने आग्रह किया कि अब तो वह वन में अकेली नहीं रहेगी, अपने निवास स्थान पर लौट जायेगी। साधक अब कहाँ साधक था? बच्चे को उठाकर वह भी पीछे हो लिया। सारी तैयारी थी ही। साधक को राजभवन में पहुँचा दिया गया। दीवान ने राजा को बता दिया कि एकाकी साधना अपूर्ण अवस्था में तथा स्वाद-लोभ में कहाँ से कहाँ पहुँच गई है?

साभार- नानेशवाणी-35 (सर्वत्याग की साधना)

जीवन निर्माण में सहायक : साधना

-डॉ. आभा किरण गांधी, धागड़मऊ

"समता साधना की आपने निज शिवत्व का बोध पाया।
समीक्षण ध्यान की पद्धति से सिद्धत्व सुधा का रसपान कराया।।"

आपकी समता साधना से भव्य जीवों को बोध मिला, सृष्टि का कण-कण पावन हुआ, उजड़े हुए चमन में नव पल्लव-सा सुमन खिला। आपका जीवन एक बांसुरी की भाँति है जो अपने में खाली और शून्य होते हुए भी संगीत का अपरिसीम सामर्थ्य लिए हुए है, पर सब कुछ बजाने वाले पर निर्भर करता है। जीवन वैसा ही हो जाता है जैसा व्यक्ति उसे बनाना चाहता हो। सत्य यह है कि आपने जीवन रूपी बांसुरी का दिव्य स्वर जगाया, आप जीवन के श्रेष्ठ कलाकार थे। आपने जीवन को अच्छी तरह से जाना, प्रशस्त रीति से जीवन जीया, आपका जीवन कृतार्थ हो गया, सार्थक हो गया।

मनुष्य कैसे मरता है इसका कोई महत्व नहीं है, अपितु वह कैसे जीता है उसका महत्व है। मोमबत्ती ज्यादा देर तो नहीं जलती परन्तु उसका थोड़ी देर तक जलना भी सार्थक है क्योंकि वह प्रकाश फैलाती है। अगरबत्ती ज्यादा देर नहीं जलती परन्तु उसका थोड़ी देर जलना भी सार्थक है, क्योंकि वह सुगन्ध फैलाती है। कोई फूल अधिक समय तक नहीं खिला रहता परन्तु उसका कुछ समय खिलना सार्थक है, क्योंकि वह सुवास तो बिखेरता है।

जीवन के दो आयाम हैं, एक है ऊँचाई और दूसरा है गहराई। आपके जीवन में महासागर जैसी गहराई थी और मेरु पर्वत जैसी ऊँचाई थी। आपने अपने जीवन की साधना का सही मूल्यांकन किया। आज आप नहीं है लेकिन आपकी अमृतवाणी हम सभी का पथ प्रशस्त कर रही है। आपकी साधना चन्दन के पेड़ की तरह थी जो वृक्ष के रूप में अवस्थित थी तो सुगन्ध देती थी। उसे कोई काटे तो वह काटने वाले को भी सुगन्ध देती थी और रगड़ने पर भी सौरभ बिखेरती थी। ऐसी सुवासित साधना ही सार्थक कहलाती है।

"साधना के शिखर पुरुष को शत-शत नमन हम करते हैं।
समत्व के सिन्धु का हर पल सुमिरण करते हैं।"

जन-जन की श्रद्धा के मसीहा, समत्वयोगी गुरु नानेश के जन्म-दिवस की बधाई एवं कोटि-कोटि वन्दन, अभिनन्दन!

1. संस्कार का अर्थ होता है जो कर रहे हैं, उसे संशोधित करके अच्छा बनावें यानी कि अपनी कृति को शुद्ध रूप दिया जाय। कृति के शुद्ध रूप के साथ जब श्रेष्ठता को भी जोड़ दें तो वे सुसंस्कार हो जाते हैं।

2. जो भी संस्कारों का निर्माण अथवा पारस्परिक आदान-प्रदान हो उसमें 'कु' का प्रवेश न होने दें तथा उन्हें 'सु' का रूप प्रदान किया जाता रहे।

3. ज्यों-ज्यों बुद्धि को अधिक प्रखर तथा ध्यान को अधिक केन्द्रित बनाते जाएंगे, त्यों-त्यों 'सु' और 'कु' की सूक्ष्मता का भी परिचय होता जाएगा।

4. संस्कृति क्या होती है? संस्कार से ही संस्कृति शब्द बना है। जो संशोधित रूप से किया जाता है वह संस्कार और संशोधित कृति बन जाती है, उसी का नाम संस्कृति बन जाता है।

5. सही अर्थों में देखें तो गृहस्थ धर्म भी एक साधना रूप ही होता है। वह साधना होती है अपने और अपने परिवारजनों के श्रेष्ठ निर्माण की तथा उस निर्माण के आस-पास के समूचे वातावरण को श्रेष्ठ बनाने की।

6. दया की आर्द्रता और करुणा की कोमलता के बिना जीवन का मधुर विकास नहीं हो पाता है। पानी चाहे कितना ही बरसे लेकिन चिकनी चट्टानों पर उसकी एक बूँद भी ठहर नहीं पाएगी, इसी प्रकार क्रूर और निर्दय वृत्ति वाले हृदयहीन एवं करुणाहीन होते हैं- उनके दिल पर सद्गुणमय उपदेश का एक भी वचन नहीं ठहरता है।

7. जीवन जब सुसंस्कार सम्पन्न एवं सद्गुणमय होगा तो वह जिनेश्वर देव के चरणों में अवश्य समर्पित होगा और अपने अन्तिम लक्ष्य को प्राप्त करने के लिए अवश्यमेव पुरुषार्थरत बनेगा। उस जीवन के कण-कण में सम्यक्त्व रमेगा तो समत्व का समरस सब ओर व्याप्त रहेगा।

साभार- नानेशवाणी-51 (परमानन्द)

नानेशवाणी

सुसंस्कार-सर्जना

-परम पूज्य आचार्य प्रवर 1008 श्री नानालालजी म.सा.

देवकी रानी अपने आठवें पुत्र गजसुकुमाल को जन्म देती है और यथासमय गजसुकुमाल अपने यौवन की देहरी पर पाँव रखते हैं। उस समय भगवान अरिष्टनेमि का उस नगर में पदार्पण हुआ। श्रीकृष्ण वासुदेव अपनी चतुरंगिनी सेना के साथ भगवान के दर्शन करने के लिए निकले तो उन्होंने गजसुकुमाल को भी बुला लिया। देशना के बाद श्रीकृष्ण अपने परिवार के साथ वापस लौट आये किन्तु उस समय गजसुकुमाल भगवान की सेवा में बैठे हुए थे। अतः उन्हें वे वहीं छोड़ आये।

जब गजसुकुमाल अपने स्थान पर लौटे तो उनका हृदय वैराग्य रस में हिलोरें मार रहा था। आते ही उन्होंने अपने अग्रजों के समक्ष दीक्षा ग्रहण करने के अपने भाव प्रकट किये। श्रीकृष्ण आदि सबने उन्हें बहुत समझाया कि इतनी छोटी आयु में दीक्षा लेने का विचार छोड़कर वे राज सिंहासन पर बैठने की तैयारी करें। किन्तु वे किसी भी तरह नहीं माने।

यह गजसुकुमाल की आदर्श सुसंस्कारिता का ही सुफल था कि वे मात्र दीक्षित ही नहीं हुए बल्कि दीक्षा के पहले ही दिन कठिनतम भिक्षु प्रतिमा को धारण करने की अनुमति प्राप्त करके श्मशान में रात्रिकाल के समय ध्यानस्थ खड़े हो गये। उस समय सोमिल ब्राह्मण ने इस कुविचार के साथ कि इसके साथ मेरी पुत्री का सम्बन्ध होने वाला था और यह तो दीक्षित हो गया है, उनके मस्तक पर मिट्टी की पाल बांधकर धधकते अंगारे रख दिये। उस अपार कष्ट को शान्तिपूर्वक सहन करके वे एक दिन की दीक्षा में मोक्षगामी हो गये। जीवन के चरम लक्ष्य की पूर्ति इस सुसंस्कारिता से हो सकती है।

इसलिए इस मानव जीवन को सुसंस्कारित बनाने के लिए सभी को कठिन प्रयास करना चाहिए, क्योंकि एक बार सुसंस्कारित जीवन की परम्परा डाल दी जाएगी तो उस परम्परा में आने वाली कई पीढ़ियाँ अपने जीवन निर्माण में सहजतापूर्वक प्रवृत्त हो सकेंगी। इस कारण एक बार संकल्पपूर्वक इस शुभ कार्य को सफल बनाने में सबको मन, वाणी और कर्म से जुट जाना चाहिए। सुसंस्कार-सर्जना एक पवित्रतम दायित्व है।

साभार- नानेशवाणी-51 (परमानन्द)

नानेशवाणी

गजसुकुमाल के आदर्श सुसंस्कार

-परम पूज्य आचार्य प्रवर 1008 श्री नानालालजी म.सा.

फक्कड़ महात्मा

-परम पूज्य आचार्य प्रवर 1008 श्री नानालालजी म.सा.

अंग्रेजों के शासन-काल की घटना है। एक आत्मिक शक्ति का प्राथमिक साधक अपने निजी कारणों को लेकर मद्रास की ओर रेल से यात्रा कर रहा था। एक अंग्रेज ऑफिसर भी उसी डिब्बे में आकर बैठा। उसने देखा कि यह हट्टा-कट्टा हिन्दुस्तानी है। वह भयभीत और आशंकित होने लगा। उसने रेल अधिकारियों से कहा कि इस व्यक्ति को इस डिब्बे से हटा दो। अंग्रेजों का साम्राज्य था। रेल अधिकारियों ने उस महात्मा को कहा कि तुम यहाँ से उठकर दूसरे डिब्बे में चले जाओ। उसने कहा, क्यों जाऊँ, मेरे पास भी टिकट है। मैं यहाँ से नहीं हटूँगा। अधिकारियों ने बहुतेरा कहा, परन्तु महात्मा भी फक्कड़ थे। वे अड़ गये। उधर वह अंग्रेज शीघ्रता कर रहा था। जल्दी उतारो इसको। अधिकारियों ने कहा- बाबा उतर जाओ नहीं तो घसीट कर उतार देंगे। उसने सोचा- अब जिद्द करना बेकार है, अपमानित होने से क्या लाभ है। वह उतर पड़ा। अंग्रेज ऑफिसर प्रसन्न हो गया। अधिकारियों ने गाड़ी चलायी, परन्तु यह क्या! इंजन आगे बढ़ा ही नहीं, ड्राईवर ने बहुत प्रयत्न किया, परन्तु सब निष्फल हुआ। दूसरा इंजन मंगवाया गया, परन्तु वह भी कारगर सिद्ध नहीं हुआ। तीसरा इंजन मंगवाया गया, वह भी निरर्थक हुआ। आखिर उन्होंने देखा कि बात क्या है। चर्मचक्षुओं से कुछ प्रतीत नहीं हुआ। सूक्ष्म-दर्शक यंत्र से देखने पर ज्ञान हुआ कि कुछ किरणें वहाँ सक्रिय हैं। उसका अनुसंधान किया गया कि आखिर ये किरणें कहाँ से आ रही हैं। अनुसंधान से पता चला कि जिस फक्कड़ महात्मा को गाड़ी से नीचे उतारा था, वह अपने सिर के पीछे हाथ रखकर बैठा हुआ था और उसकी दृष्टि इंजन पर लगी हुई थी। उसकी दृष्टि में इतनी ताकत थी कि इंजन की मशीनरी भी ठप्प हो गई। रेलवे के अधिकारी आश्चर्यचकित रह गये। उन्होंने अंग्रेज ऑफिसर को सारी स्थिति समझायी। वह ऑफिसर नीचे उतरा। फक्कड़ महात्मा के चरणों में टोप डाल कर कहा कि आप पधारिये और उसी डिब्बे में बैठिए। उसने कहा, नहीं, तुम जाओ! हिन्दुस्तानियों के प्रति तुम ऐसा दुर्व्यवहार करते हो! तुम बैठो उस डिब्बे में, हम बाद में आ जाएँगे। अंग्रेज ऑफिसर ने बहुत अनुनय-विनय की तब कहीं जाकर वह फक्कड़ महात्मा उसी डिब्बे में बैठा। उसके बैठते ही इंजन धड़-धड़ करता हुआ आगे बढ़ता गया।

भाइयो! यह चमत्कार तो आध्यात्मिक शक्ति का साधारण रूप है। इससे कई गुनी अधिक शक्ति होती है आत्मबल की।

साभार- नानेशवाणी-46 (दृष्टान्त सुधा)

कालजयी व्यक्तित्व आचार्य श्री नानेश

-जे.पी. आचार्य, बीकानेर

जिनका नाम स्मरण मात्र से दुःख एवं वेदना की काली घटाएँ विखण्डित हो जाती हैं, उन महापुरुष के विविध गुणों का बखान करें तो एक विशाल ग्रन्थ की रचना अवश्य हो जाएगी। मैं चर्चा कर रहा हूँ दाँता ग्राम के उस नन्हें बालक गोवर्धन यानी 'नाना' की, जिसने बचपन में रेल के इंजन को देखकर यह तय कर लिया था कि केवल खुद का हित साधने में कुछ लाभ नहीं, जीवन का उद्देश्य तो तब पूर्ण होता है जब सबको साथ लेकर चलें और सबका कल्याण करें। बाल्यावस्था में किया गया वह निश्चय कालान्तर में प्रत्यक्ष रूप से लक्षित हुआ।

काल परिवर्तन के साथ-साथ नन्हें बालक नाना में जो परिवर्तन हुआ उससे आप सुज्ञजन अनभिज्ञ नहीं हैं। अपनी माता की साधना में विघ्न उत्पन्न करने वाले बालक में आमूलचूल परिवर्तन हुआ और वही नन्हा बालक शनैः-शनैः साधना के पथ पर बढ़ते हुए साधना का सिरमौर बन गया। बालक नाना की आचार्य श्री नानालालजी म.सा. के रूप में परिणति किसी परिचय की मोहताज नहीं है। गुणग्राह्य व्यक्तित्व अपने क्षितिज पर अवस्थित होने पर गुणों की खान बन जाता है। ऐसे ही संयम साधना पथ पर बढ़ते-बढ़ते आचार्य श्री नानालालजी म.सा. गुणों की खान बन गये थे। उनके वे गुण नैपथ्य में रहकर भावी संघनायक का द्वार उद्घाटित कर रहे थे।

आचार्य श्री नानेश द्वारा रचित अनेकानेक साहित्यों में **जिणधम्मो, समता दर्शन और व्यवहार** जैसे ग्रन्थों की भूमिका का समीक्षण शक्य नहीं है। जीवन के उत्तरार्द्ध तक संघर्षों से अपने साधु जीवन को तपाते हुए हजारों किलोमीटर की पदयात्राएँ कर आप दीप स्तम्भ के रूप में उभरे। आप द्वारा प्रदत्त समता सिद्धान्त ने समाज को उद्वेलित कर दिया। आपके समता सिद्धान्त की जद में आने वाला प्रत्येक व्यक्ति स्व-पर कल्याण में समायोजित हो जाता है। समता दर्शन का चरम बिन्दु यही है कि सारा विश्व एक कुटुम्ब है, जिसमें लोक का प्रत्येक जीव समाहित है। आप द्वारा प्रदत्त प्रत्येक सिद्धान्त को सर्वप्रथम आपने स्वयं आत्मसात् किया। आपश्रीजी ने जब बलाई जाति के गाँवों में विचरण किया तो सामाजिक भेदभाव और उनका नारकीय जीवन देखकर आप दया के सागर में डूब गए और बलाई जाति के प्रमुख व्यक्तियों का निवेदन स्वीकार कर उन्हें **'धर्मपाल जैन'** का स्वर्ण तिलक लगाकर लाखों बलाइयों को समाज की मुख्य धारा में शामिल किया। आज धर्मपाल समाज की उच्च सामाजिक स्थिति देखकर आत्मसंतुष्टि होती है कि आचार्य श्री नानेश ने बलाई समाज को स्वर्ण सिंहासन पर आरोहित कर दिया है। तुलसीदासजी के दर्शन की इन पंक्तियों को आचार्य श्री नानेश ने अपना जीवन धर्म बना लिया था-

परहित सरिस धरम नहीं भाई। पर पीड़ा सम नहिं अधमाई।।

उनका दृष्टिकोण था कि आत्मा चेतन है और शरीर जड़ है। जड़ के साथ रहते हुए चेतन अपने स्वभाव से विगलित न हो। क्योंकि जब तक चेतन है तब तक ही जड़ रूप शरीर उपयोगी हो सकता है। आचार्य श्री नानेश के विहंगम व्यक्तित्व द्वारा तलस्पर्शी अध्ययन से उद्भाषित हुए चिन्तन एवं विचारों की गूढ़ता सामान्य व्यक्ति की समझ से परे है। तात्विक दृष्टिकोण से प्रतिपादित आपके सिद्धान्तों को आपके उत्तराधिकारी आचार्य श्री रामेश जन-तन तक पहुँचाने का प्रतिसाद कर रहे हैं। हम सभी गुरुभक्त आपके संयममय साधक जीवन की मंगल शुभेच्छा करते हैं।

समय का सदुपयोग करने से न चूकें

-परम पूज्य आचार्य प्रवर 1008
श्री नानालालजी म.सा.

यह समय फिर लौट कर नहीं आएगा। आए हुए समय का सदुपयोग करने से कतई न चूकें। ज्यों-ज्यों जीवन के क्षण बीतते जा रहे हैं, परिस्थितियाँ भी बदलती जा रही हैं। इन दिनों में आनन्द के प्रवाह को प्रभावशाली बनाने के लिए विशेष कार्यक्रम आयोजित किए जाने चाहिए, जिनमें अधिक से अधिक लोग शामिल होकर जीवन की नई कड़ियों का अनुसंधान कर सकें एवं टूटी कड़ियों को जोड़ सकें।

सन्त लोग कितने ही दृष्टान्तों से शास्त्रों की वाणी सुनाते व समझाते हैं, उसे ध्यानपूर्वक सुनिए और उन उपदेशों के साथ अपनी आत्मा की भावना एवं साधना को जोड़ने की कोशिश कीजिए। यह पर्युषण पर्व का प्रसंग सभी प्रकार से अन्तरावलोकन करने का है। उसके बाद जो करणीय कार्य आपने नहीं किये हैं, उनकी ओर इन दिनों में प्रवृत्ति करें ताकि अन्तर्जागृति का सजग वातावरण तैयार हो सके।

यह अन्तरावलोकन इन रेखाओं पर हो सकता है कि पिछले बारह माहों में आपने अपने जीवन के अन्दर किस प्रकार कलुषित भावनाओं को पैदा किया? इसके विपरीत श्रावक के कितने व्रत ग्रहण किये और उनका कैसा पालन किया? किस प्रकार के उत्तरदायित्व आपने ग्रहण किये और उनका निर्वाह कितनी ईमानदारी से आपने किया? जिम्मेदारी लेकर उसमें गलतियाँ निकालने की कोशिश तो आपने नहीं की? परिवार, समाज या राष्ट्र अथवा सम्पूर्ण प्राणी समूह के साथ आपने अपनी जिम्मेदारियाँ निभायी या नहीं? एक सूत के धागे के बिना समाज की माला के मोती जो अनादरपूर्वक इधर-उधर लुढ़क रहे हैं, क्या आपने किसी प्रकार उन्हें शान्ति पहुँचाने का प्रयत्न किया है? समाज का हर छोटा-बड़ा सदस्य मोती के मानिन्द है और जब आप अपनी सद्वृत्तियों से उनकी एक सूत्र में माला बनाना चाहेंगे तो वह एकता जीवन विकास की बहुत बड़ी सहायिका हो सकेगी। इन सब मुद्दों पर यदि आप चिन्तन करेंगे और सही दिशा की ओर अपने जीवन को मोड़ने की कोशिश करेंगे तो इस महापर्व के समय का अवश्य ही श्रेष्ठ उपयोग हो सकेगा।

साभार- नानेशवाणी-20 (बनो अभय तो पाओ जय)

Kids Corner

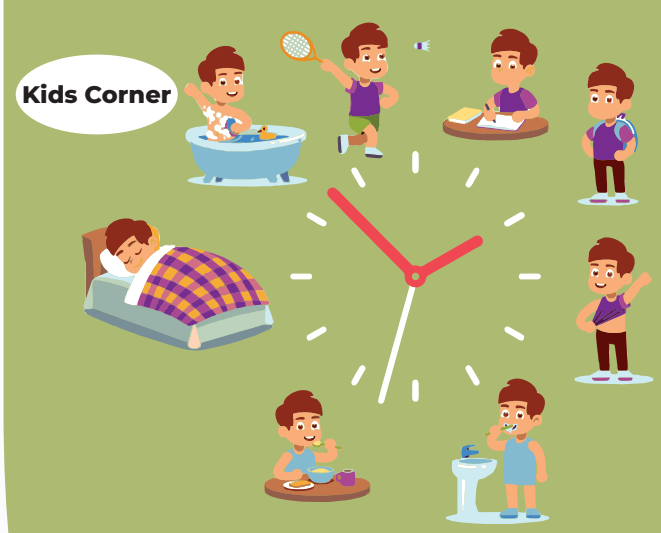

बालमन में उपजे ज्ञान

समय का सदुपयोग

- मोनिका जय ओस्तवाल,
ब्यावर

15-16 अप्रैल 2023 अंक से आगे...

जय जिनेन्द्र बच्चो! आप सभी के साथ कई महीनों से सफर चल रहा है जिसमें हमने कई प्रकार का Knowledge लिया, Good habits सीखी और अपने आपको बदला। ये सब कैसे हुआ, जानते हैं इस अंक में.....

सौरभ की माताजी - जय जिनेन्द्र बच्चो! आज हम कुछ भी नहीं सीखेंगे।
(सभी बच्चे आश्चर्य से एक-दूसरे को देखते हुए कि हमसे कोई गलती हुई है क्या?)

नितिन- क्यों आंटी?

सौरभ की माताजी- बेटा, आप लोग यहाँ Daily आते हो, कई Concepts समझते हो, Promises करते हो। ये सब कैसे Possible?

पंकज- क्योंकि आंटी, आप बहुत अच्छे से समझाते हो।

नीलिमा- हाँ आंटी, और हम इसके लिए सौरभ को भी Thanks बोलते हैं।
(सभी ने हाँ में हाँ मिलायी।)

सौरभ की माताजी- नहीं बेटा, ये सब आप लोगों के Time management से हुआ। आप लोग रोज आये, अपने समय का उपयोग अच्छी चीजों को सीखने में लगाया। आप सभी चाहते तो इस समय में TV देख सकते थे, खेल सकते थे, घूम-फिर सकते थे।
(बच्चों के चेहरे पर गौरव की रेखाएँ आ गयी।)

पंकज- आंटी, आप इतनी अच्छी-अच्छी बातें बताते हो कि हमारा मन ही नहीं करता कहीं जाने का।

सौरभ की माताजी- आप सभी ने अपने 1 hour का Proper use किया तो आप सभी को कितना अच्छा Feel हुआ। सोचो! यदि यही हम पूरे 24 hours अच्छे से use करें तो हम क्या कुछ नहीं कर सकते!
(आज बच्चों को एक ऐसी बात समझ आ चुकी थी जो निश्चय ही जीवन परिवर्तनकारी साबित होगी।)

आन्तरिक सुख ही सच्चा सुख होता है

-परम पूज्य आचार्य प्रवर 1008 श्री नानालालजी म.सा.

सुख दो प्रकार का होता है - एक बाहर का सुख और दूसरा भीतर का सुख। आप बाहर के सुख को तो प्रत्यक्ष अनुभव से जान सकते हैं। यह नहीं, कि आपको कभी भीतर का सुख अनुभव में नहीं आता, किन्तु या तो उसकी तरफ आप ध्यान नहीं देते अथवा उपेक्षा कर देते हैं- तभी उसकी वास्तविकता से आपका पूरी तरह से परिचय नहीं हो पाता है। आप सुख-सुविधाओं से भरे-पूरे भवन में रहते हों, बहुमूल्य वस्त्र पहनते हों, रुचिकर भोजन जीमते हों, लोगों में आपकी प्रतिष्ठा हो, सत्ता के अधिकार भी हों और सब जगह आपको आदर मिलता हो आपकी सम्पन्नता के कारण- तो आप समझते हैं कि आप बहुत सुखी हैं। दूसरी ओर अपने ही स्वार्थों में रचे-पचे रहकर भी कभी किसी गरीब की सहायता का या किसी पीड़ित के दुःख निवारण का छोटा-सा भी भला काम आपके हाथों से हो जाता है, उस समय भीतर में आपको एक अनोखे सुख का अवश्य ही अनुभव होता होगा- चाहे वह अनुभव कुछ देर के लिए ही हो। मैं आपसे कहता हूँ कि उस कुछ देर होने वाले भीतर के सुख की बाहर के सुख से तुलना करें तो अवश्य प्रतीत होगा कि वह भीतर का सुख अपूर्व होता है। अधिक बार और अधिक देर तक ऐसे भीतर के सुख का यदि आप अनुभव लेने लगेंगे तो आपका निश्चय बन जाएगा कि बाहर के विविध सुखों की अपेक्षा भी भीतर के सुख के वे क्षण अमूल्य थे। इसी तरह अभ्यासपूर्वक आप निर्णय कर सकेंगे कि बाहर का सुख सच्चा सुख नहीं है, क्योंकि वह बाहर के नश्वर पदार्थों पर टिका हुआ होता है। पदार्थों की अनुकूलता है तो सुख है- पदार्थ नहीं रहे तो सुख भी चला गया। पदार्थों के रहते हुए कई तरह के तनाव पैदा हो गये तब भी वह सुख नहीं रहा। इस तरह बाहर का सुख वास्तव में सुख नहीं, मात्र सुखाभास होता है। इसके विपरीत भीतर के सुख के जितने अधिक स्रोत आप खोलते जाएंगे, वह सुख बढ़ेगा ही नहीं, बल्कि वह स्थायी भी होता जाएगा और बाहर के तनावों में भी मन को विचलित नहीं होने देगा। सुख का अनुभव जैसे शाश्वत रूप ले लेगा। यही वास्तविक सुख होता है जो कहीं बाहर पर आधारित नहीं बल्कि भीतर के मन पर आधारित होता है। मन एक बार सध गया तो वह सुखानुभव भी सध जाता है।

निष्कर्ष यह है कि भीतर का सुख पैदा होता है और प्रगाढ़ बनता है - दूसरों के दुःखों को दूर करने से, पीड़ितों की सहायता करने से तथा चेहरों पर खुशी की रोशनी जगाने से। उनमें अपने शुभ प्रयासों से जो सुख पैदा किया जाता है और प्रसन्नता के रूप में जो आनन्दानुभव उन्हें होता है, उससे हजार गुना आनन्दानुभव उस व्यक्ति को होता है जो उनको सुखी करने में अपने प्रयास करता है। यही रहस्य है भीतर के सुख का और ऐसा आंतरिक सुख ही सच्चा सुख होता है। जो सदा एवं सर्वदा आनन्दानुभव कराता ही रहता है। सुकृत करने वाले को कभी दुःख का अनुभव नहीं होता, क्योंकि वह अपने स्वार्थ को साधने से बहुत ऊपर उठकर परमार्थ में तल्लीन हो जाता है। अपने आप को समर्पित कर देने से ही अपार एवं शाश्वत सुख मिलता है।

साभार- नानेशवाणी-52 (समाधान की राह)

समता-सन्देश प्रदाता : आचार्य श्री नानेश

-प्रो. सुमेरचन्द जैन, पूर्व प्राचार्य एवं पूर्व प्रान्तपाल, बीकानेर

अपने ही 'स्व' में रमण करने में कितना सुख, कितना संतोष है, यह वही जान सकता है जिसने आत्मज्ञान प्राप्त कर लिया हो। आचार्य श्री नानेश जानते थे कि इस जगत् में व्याप्त राग, द्वेष, मोह, माया आदि मनुष्य को भ्रमित करते हैं। ऐसे दिशाहीन मानवों को देखकर उनका हृदय द्रवित हो उठा। अतः उनके उद्धार हेतु आपने समता के चिंतन, दर्शन और व्यवहार का मार्ग दिखाया। आपने विभिन्न रूपों में समता को सँवारा और सरलता से अपनाये जाने वाले छोटे-छोटे मार्ग दर्शाये।

आचार्य श्री नानेश ने कहा कि निवृत्तियों से मुक्त होने के लिए सद्भाव ही सच्चा मार्ग है। सबसे पहले समता भाव से अपने जीवन को रंग लें तो क्रोध, मान आदि निवृत्तियों को दूर किया जा सकता है। जहाँ समता का भाव है, वहाँ अन्धेरा समाप्त होकर प्रकाश की अमृत वर्षा होने लगती है।

समतापूर्ण व्यक्ति को जब कोई गाली देता है तब भी वह यही मानता है कि उसके मन में क्रोध भरा होगा, चित्त परेशान होगा इसीलिए गाली निकल गयी। संयोग की बात है कि मैं पास में था और कोई पास में होता तो उस पर निकलती। इससे मुझे कुछ फर्क नहीं पड़ता। समताधारी की दृष्टि से सोचें कि जब हम क्रोध करते हैं तो वास्तव में हम दूसरे पर क्रोध नहीं करते। दूसरा सिर्फ निमित्त होता है। हम क्रोध को अपने कर्मों से अपने ही कल की यात्रा से संग्रहित किये होते हैं। वह क्रोध हमारे भीतर भरा होता है।

समतादर्शी हर परिस्थिति में, दर्शन की भाँति चलचित्रों को उदासीन होकर देखता है। किसी बात में विवाद नहीं करता क्योंकि प्रसन्नचित्त-सकारात्मक बन जाता है और हृदय सरल हो जाता है। सरल हृदय धर्म का पात्र है जिसमें समता की धारा प्रवाहित होती है।

समता-दर्शन का एक पहलू यह भी है कि संसार का प्रत्येक प्राणी सुख चाहता है। सुख कैसे मिलता है, इस बात पर विचार करें तो उत्तर मिलता है- दूसरों को सुख देने से सुख मिलता है। भौतिक दृष्टि से भले यह परिणाम दिखता नहीं, लेकिन आध्यात्मिक दृष्टि से यही घटित होता है।

प्रभु महावीर ने कहा- ''जो भी तुम कर रहे हो, जो भी भोग रहे हो, आन्तरिक रूप से तुम स्वयं ही उसके नियंता हो। अपने जीवन का मूल कारण व्यक्ति स्वयं है, बाकी सब निमित्त है।''

समस्त प्राणियों के सुख-दुःख को अपना ही सुख-दुःख समझना, यदि यह समझ हम विकसित कर लेते हैं तो हम स्वतः ही समत्वभाव में अवस्थित हो जाते हैं। ऐसे में हम किसी भी जीव के साथ हिंसावृत्ति नहीं अपना सकते। अहिंसक व्यवहार समताभाव की पहचान है। मनुष्य की तरह सभी प्राणियों को अपना जीवन प्रिय है। उन्हें वध अप्रिय है। वे जीवित रहना चाहते हैं।

आचार्य श्री नानेश द्वारा उपदेशित समता-दर्शन और व्यवहार आज के युग की आवश्यकता है। आचार्य भगवन् ने स्वयं पहले समता को अपने जीवन में उतारा। उसके उपरान्त उसके प्रचार-प्रसार पर बल दिया। आचार्य श्री नानेश द्वारा विवेचित समता-दर्शन जीवन में आमूलचूल परिवर्तन करने वाला चिन्तन है। यह सभी विवादों और दुर्भावनाओं को नष्ट करने वाला है। आस्थापूर्वक इसे प्रचारित और प्रसारित करने की आवश्यकता है।

समतामय जीवन

-परम पूज्य आचार्य प्रवर 1008 श्री नानालालजी म.सा.

समता शब्द का अर्थ भिन्न-भिन्न रूपों में लिया जाता है। वैसे मूल शब्द सम है, जिसका अर्थ समान होता है। यह समानता जीवन के विभिन्न क्षेत्रों में किस-किस रूप में हो, इसका विविध प्रकार से विश्लेषण किया जा सकता है।

सबसे पहले आध्यात्मिक क्षेत्र की समानता पर सोचें, तो अपने मूल स्वरूप की दृष्टि में सारी आत्माएँ समान होती हैं, चाहे वह एकेन्द्रिय यानी अविकसित प्राणी-आत्मा हो या सिद्ध भगवान की पूर्ण विकसित आत्मा। दोनों में वर्तमान समय की जो विषमता है, वह कर्मजन्य है। कुविचारों एवं कुप्रवृत्तियों का अविकसित अवस्था में आत्मा के साथ संलग्न होने से उसका स्वरूप भी मैला हो जाता है और जैसे मैले दर्पण में प्रतिबिम्ब नहीं दिखायी देता, उसी तरह मैली आत्मा भी श्रीहीन बनी रहती है। तो आध्यात्मिक समता यह है कि इस मैल को दूर करके आत्मा को अपने मूल निर्मल स्वरूप में पहुँचाया जाए।

एक-एक आत्मा इस तरह समता की ओर मुड़े तो दूसरी ओर परिवार, समाज, राष्ट्र और विश्व में भी ऐसा समतामय वातावरण बनाया जाए जिसके प्रभाव से समूहगत समता भी सशक्त बनकर समग्र जीवन को समतामुखी बना दे। राजनीति में समानता, अर्थनीति में समानता और समाजनीति में समानता के जब पर्दे उठाए जाएंगे और उसे अधिक से अधिक वास्तविक रूप दिया जाएगा, तो समता की द्विधारा - भीतर से बाहर और बाहर से भीतर की ओर बहेगी। तब भौतिकता और आध्यात्मिकता संघर्षशील न रहकर एक-दूसरे की पूरक बन जाएगी, जिसका समन्वित रूप जीवन के बाह्य और अन्तर को समतामय बना देगा।

यह परिवर्तन समाजवाद या साम्यवाद से आए अथवा विचार के कार्यान्वयन से, किन्तु लक्ष्य हमारे सामने स्पष्ट होना चाहिए कि मानवीय गुणों की अभिवृद्धि के साथ सांसारिक व्यवस्था में अधिकाधिक समता का प्रवेश होना और ऐसी समता का जो मानव-जीवन के आभ्यन्तर को न सिर्फ संतुलित रखे, बल्कि उसे संयम-पथ पर चलने के लिए प्रेरित भी करे। धरातल जब समतल और साफ होता है तो कमजोर आदमी भी उस पर ठीक व तेज चाल से चल सकता है, किन्तु इसके विपरीत अगर धरातल ऊबड़-खाबड़ और कंटीला-पथरीला हो तो मजबूत आदमी को भी उस पर भारी मुश्किलों का सामना करना पड़ेगा। व्यक्ति की क्षमता का तालमेल यदि सामाजिक विकास के साथ बैठ जाता है तो व्यक्ति की क्षमता भी कई गुनी बढ़ जाती है।

साभार- नानेशवाणी-13 (समता: दर्शन और व्यवहार)

वर्तमान परिप्रेक्ष्य में समता दर्शन की उपादेयता

-ऋषभकुमार मुरड़िया, कानोड़

वर्तमान परिप्रेक्ष्य में मानवतावाद को वाद से मुक्त बना, सुखी मानव जीवन के कल्याण हेतु हमारे जीवन में दया, करुणा, स्नेह व समन्वय की सम्पूर्ति करने, प्राणीमात्र के प्रति विषमतावादी दृष्टिकोण के विरुद्ध समभाव विकसित करने और विषम परिस्थितियों के संदर्भ में शत्रु-मित्र का भेद समाप्त कर विषमता एवं हिंसा से दूर, समता एवं अहिंसा के समीप आत्मा पर लगे कषायों को हटाने तथा भावी जीवन को श्रेष्ठता की दृष्टि से उन्नत बनाने के लिए परमाराध्य आचार्य श्री नानेश के **'समता दर्शन'** ने वर्तमान जीवनशैली को समग्र विकास के चरमोत्कर्ष पर पहुँचाने में अविस्मरणीय योगदान दिया है। ऐसे सार्वभौम व्यक्तित्व का 103वाँ जन्मोत्सव मनाकर हमारा मन हर्षित एवं प्रफुल्लित है।

समता का मूल आधार समभाव है। समभाव की उत्पत्ति मानव मन से होकर सम्पूर्ण विश्व को अपनी शीतल छाया से आच्छादित बना देती है। उसी छाया में मानव व्यावहारिक पक्ष की सफलता की सीढ़ियाँ चढ़ता है और मानव की अन्तर्यात्रा इहलोक से परलोक की सीमाओं तक समुन्नत बनती है। समता विभूति आचार्य श्री नानेश ने 'समता : दर्शन और चिंतन' में बताया कि समता का सीधा अर्थ तामसिक एवं राजसी गुणों से ऊपर उठकर सात्विक प्रवृत्तियों का विस्तार करना, समन्वय की भावना को परिवर्द्धित करना एवं दूसरों को अपना बनाना है। समता भाव समस्त मनोमालिन्य और अकर्मों को निष्कर्म अवस्था तक पहुँचाने का सोपान है। समता में न कोई वाद है न कोई विवाद। इहलोक और परलोक दोनों को समरसता से सरसब्ज बनाने का निर्विवाद मार्ग समता ही है। जिस समता दर्शन को देवाधिदेव प्रभु पार्श्व और भगवान महावीर ने **'समियाए धम्मे'** कहकर विवेचित किया, उसी दर्शन को आचार्य श्री नानेश ने प्रस्तुत किया। समता व विवाद परस्पर विरोधी शब्द हैं। समता का आरंभ विवाद का अन्तिम श्वास है अर्थात् जहाँ पर विवाद की समाप्ति है वहाँ से ही समता का सौन्दर्य प्रस्फुटित होता है। आचार्य श्री नानेश ने समता के दो स्वरूप बताए हैं- दर्शन और व्यवहार। **'मनसा वाचा कर्मणा'** रूप समता दर्शन से हमें समभाव चिंतन, मनन एवं वैचारिक प्रवृत्ति की प्रेरणा मिलती है।

वर्तमान परिप्रेक्ष्य में प्रबल आवश्यकता है कि हम आचार्य श्री नानेश के समता दर्शन और व्यवहार की उपयोगिता को समझें, उनके संदेशों को वर्तमान जीवनशैली में उतारें। ऐसे अव्याबाध शाश्वत सुख के जनक समता दर्शन को अपनी दैनिकचर्या, कार्य-कलापों में समाविष्ट कर समता के दार्शनिक एवं व्यावहारिक स्वरूप को दिन-प्रतिदिन निखार कर समता की सौरभ विसरित कर हमारे जीवन में निर्मलता के दिव्य स्वरूप को प्रतिफलित बना सकें तभी हम उस विराट सामाजिक सांस्कृतिक क्रान्ति के पुरोधा आचार्य श्री नानेश के प्रति कृतज्ञवान बन सकेंगे और तभी हमारा आचार्य श्री नानेश जन्म महोत्सव मनाना सार्थक होगा।

आचार्य श्री नानेश ने अपने संयमित जीवन में कुल 60 चातुर्मास विभिन्न स्थानों पर किये, जिनमें से 23 चातुर्मास मुनि अवस्था में एवं शेष 37 चातुर्मास आचार्य पदारोहण पश्चात् सम्पन्न किये। उनकी एक झलक क्षेत्रानुसार नीचे मानचित्रों के माध्यम से प्रस्तुत की गई है :

राजस्थान प्रदेश

जालौर जिला– 1945–बगड़ी

बीकानेर जिला– 1941–बीकानेर, 1943–बीकानेर, 1955–बीकानेर, 1973–बीकानेर, 1975–देशनोक, 1976–नोखामंडी, 1992–उदयरामसर, 1993–देशनोक, 1994–नोखामंडी, 1995–बीकानेर, 1996–गंगाशहर–भीनासर (राज.)

चूरु जिला– 1944–सरदारशहर, 1974–सरदारशहर

जयपुर जिला– 1949–जयपुर, 1972–जयपुर

नागौर जिला– 1954–कुचेरा, 1956–गोगेलाव

पाली जिला– 1991–पिपलियाकलां, 1980–राणावास

अजमेर जिला– 1942–ब्यावर, 1946–ब्यावर, 1971–ब्यावर, 1979–अजमेर, 1997 –ब्यावर

उदयपुर जिला– 1952–उदयपुर, 1959–उदयपुर, 1960–उदयपुर, 1961–उदयपुर, 1962–उदयपुर, 1981–उदयपुर, 1998–उदयपुर, 1999–उदयपुर

जोधपुर जिला– 1940–फलौदी, 1953–जोधपुर, 1978–जोधपुर

चित्तौड़गढ जिला– 1947–बड़ीसादड़ी, 1957–कानोड़, 1970–बड़ीसादड़ी, 1989–कानोड़, 1990–चित्तौड़गढ़

मध्य प्रदेश

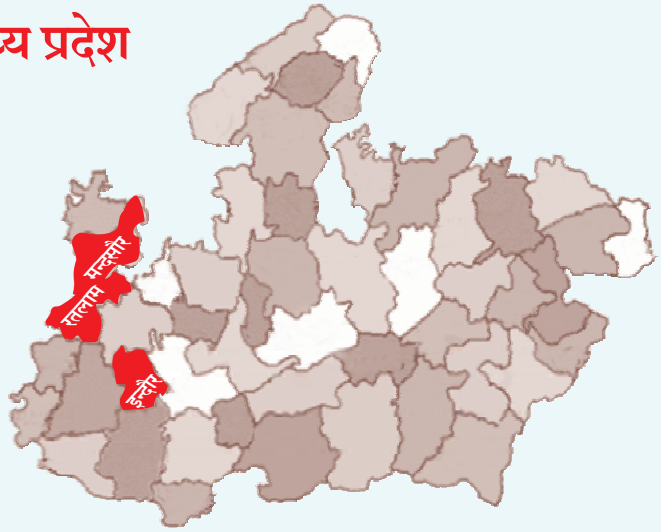

1964–इंदौर
1987– इंदौर

1948–रतलाम
1958–जावरा
1963–रतलाम
1988–रतलाम

1969–मन्दसौर

दिल्ली

1950- दिल्ली
1951- दिल्ली

महाराष्ट्र

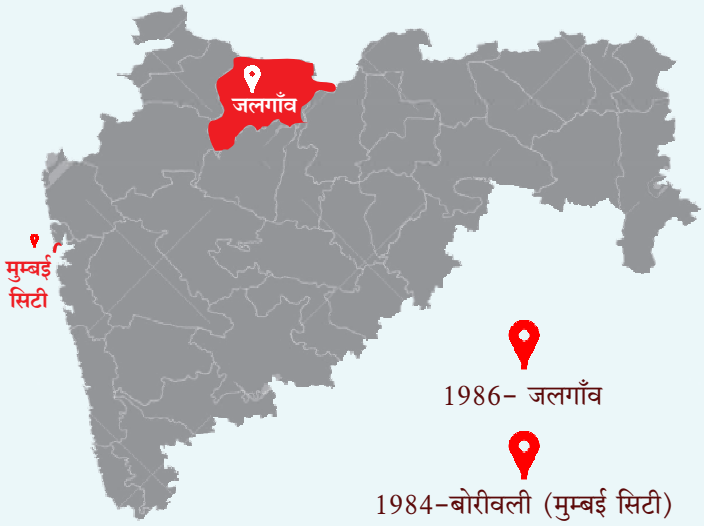

1986- जलगाँव

1984-बोरीवली (मुम्बई सिटी)
1985-घाटकॉपर (मुम्बई सिटी)

गुजरात

1982- अहमदाबाद

1983-भावनगर

छत्तीसगढ़

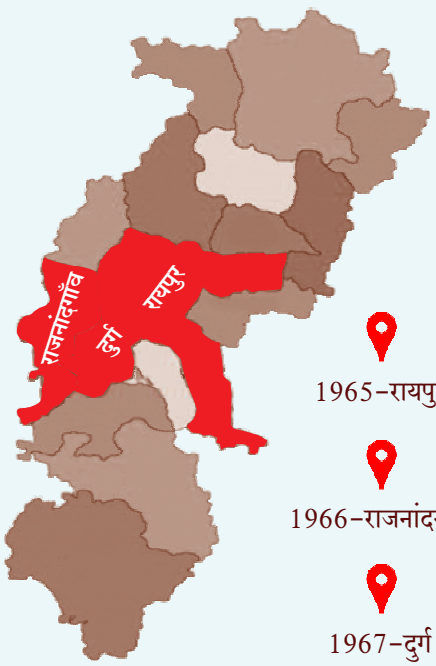

1965-रायपुर

1966-राजनांदगाँव

1967-दुर्ग

धोरा दूध री चादर

-संकलित

उदयपुर, 30 सितम्बर, 1962। सूरज गोखड़े का विशाल मैदान ठसाठस भरा, कहीं पर पैर रखने की भी जगह नहीं। आचार्य श्री गणेशलालजी म.सा. पाट पर आसीन हैं। उन्हें एक शुभ-धवल-शोभन चादर ओढ़ाई गई है।

चारों ओर गगनचुम्बी जयघोष हुआ है। अब यही चादर नानालालजी म.सा. को ओढ़ाई जा रही है। चतुर्दिश उल्लास की लहरें उमड़ पड़ी हैं। सब कुछ रोमांचक है। जय-जयकार अनुगुंजित हैं। नानालालजी म.सा. अब युवाचार्य पद पर आसीन हैं। आचार्यश्री/युवाचार्यश्री चादर की महिमा-गरिमा बता रहे हैं। युवाचार्यश्री कह रहे हैं- ''यह चादर नहीं है, गहन दायित्व है। मैं जैनधर्म को आलोकित करूँगा। उसका उज्ज्वल यश दिग्दिगन्त में व्याप्त होगा।''

जब श्री नानालालजी म.सा. को चादर ओढ़ाई जा रही थी, तब दो आँखें ऐसी भी थीं, जो अपने बेटे को नखशिख निर्निमेष निहार रही थीं। इन आँखों में जगदम्बा मरुदेवी से जगज्जननी त्रिशला तक का मातृत्व घनीभूत हुआ था। माँ शृंगारबाई अब मात्र शृंगारबाई कहाँ थी- उनके भीतर विजया, सेन्या, सिद्धार्था, सुमंगला, शिवादेवी, वामा, त्रिशला प्राय: सभी का मातृत्व और उनकी अपरम्पार वत्सलता जीवन्त हुई थी। माँ की आँखों के मंच पर नाना के जन्म से अब तक के सारे दृश्य एक साथ उपस्थित हुए थे। पास-पड़ोस में बैठे लोगों ने सुना- ''मेरा नाना इतना बड़ा हो गया। अरे, इसने तो चादर ओढ़ ली है!!! क्या यह सरल मन बालक युवाचार्य की गरिमा संभाल पाएगा? कहीं ऐसा न हो कि यह अपने भोलेपन में हार जाए।''

शृंगारबाई की आँखें आंचल बनी हैं। लग रहा है जैसे आँखों से होकर दूध की धवल धार पाटासीन युवाचार्य का अजस्र अभिषेक कर रही है। दाँता से आकर भी इस क्षण वह दाँता में ही है। वही घर, वही आंगन, वही 'नाना', वही किलकारियाँ, वही चहल कदमियाँ - बड़ा मर्मस्पर्शी दृश्य है।

समारोह सम्पन्न हुआ है। शृंगारबाई आचार्यश्री से उनकी सुखसाता पूछ रही है। आचार्यश्री कह रहे हैं- ''कई मांजी, बेटा महाराज का दर्शन कर लीधा? अबे ई 'नाना' नाना नीं रिया, घणां मोटा वेइग्या है।'' (क्या मांजी, बेटा महाराज के दर्शन कर लिए? अब यह 'नाना' छोटा नहीं रहा है, बहुत बड़ा हो गया है।) माँ की ममता आँसू बनी कह रही है- ''अन्नदाता, ई घणां भोला टाबर है, यां पे अतरो बोझो मती नाको।'' (प्रभो! यह बड़ा भोला बालक है। इस पर इतना वजन मत डालो।) फिर माँ ने युवाचार्य को अपलक सजल आँखों से देखा है। वह निहाल हुई। उसकी आँखों को नवनिधियाँ मिल गई हैं। भला उसे अब क्या करना चाहिए? वह अवाक् है और दोनों अंजलियों से खुशियों का दरिया अनथक उलीच रही है। उसने अपने बेटे की ओर मुड़कर देखा और बोली- ''म्हारे धोरा दूध री अणी चादर में काळो दाग मत लगाइजो'' (बेटे! मेरे धवल-शुभ दूध की इस चादर पर कोई काला दाग मत आने देना)। और पता नहीं, कब/कैसे युवाचार्य के नेत्रों में कबीर का यह पद अक्षरश: निनादित हो उठा-

झीनी झीनी बीनी चदरिया।
काहै कै ताना काहे कै भरनी, कौन तार बनी चदरिया।।
सो चादर सुर नर मुनि ओढ़ी, ओढ़ि कै मैली कीनी चदरिया।
दास कबीर जतन से ओढ़ी, ज्यों की त्यों धर दीनी चदरिया।।*

* हम चाहें तो दास कबीर की जगह 'नाना मुनि' या 'मैंने खूब' को रखकर इसका अलौकिक रसास्वाद ले सकते हैं।

जीवन नैया के खेवैया आचार्य श्री नानेश

-नाथीदेवी बोथरा, गंगाशहर

आचार्य श्री नानेश का नाम उच्चारण मात्र से जीवन पर छायी घनघोर काली घटाओं की बदली छंट गयी। बात आज से लगभग 50 वर्ष पहले की है, किन्तु जब-जब स्मरण में आती है तब-तब रोंगटे खड़े हो जाते हैं।

मैं अपनी छह पुत्रियों को लेकर असम से बीकानेर (राज.) अपने देवरजी के साथ आ रही थी। ट्रेन रात को बीकानेर स्टेशन पर पहुँची तो देशनोक के लिए दूसरी ट्रेन लेने हेतु हम सभी उतर गये। देवरजी ननदबाई को छोड़ने के लिए यह बोलकर चले गये कि देशनोक वाली ट्रेन आये तो आप उसमें बैठ जाना तब तक मैं बाई को ससुराल छोड़कर आता हूँ।

देशनोक वाली ट्रेन आयी तो मैं बच्चों को लेकर ट्रेन में बैठ गयी। मेरे पास ही तीन-चार महिलाएँ व पुरुष बैठे थे। वे आपस में बातें करने लगे कि आज का दिन बहुत अच्छा जाएगा। लगता है किसी भले मानस का मुख देखा है। उन्होंने हम सबको जगह देकर बैठा लिया और कहने लगे कि आप चिन्ता मत करो। हम आपको आराम से देशनोक उतार देंगे। इतने अनजाने अपनेपन से मेरे मन में कुछ शंका हुई। मैंने गौर से देखा तो मुझे औरतों के वेश में दाढ़ी-मूँछे दिखाई दी। कुछ अनहोनी की आशंका होते ही मैंने नवकार महामंत्र एवं जय गुरु नाना का स्मरण चालू कर दिया। ऐसा लगा कि भीतर से आवाज आ रही हो कि ''उतर जा, उतर जा, उतर जा।'' मैंने ट्रेन रुकते ही तुरन्त बच्चों को उतारा और सामान आदि स्टेशन पर फेंकना शुरू कर दिया। मैं नीचे उतरी इतने में ही ट्रेन रवाना हो गयी। एक पेटी मैं नीचे उतरकर खींच ही रही थी किन्तु वे लोग पुनः ट्रेन में खींचने लगे। यह दृश्य देखकर किसी भले मानुष ने जंजीर खींच दी, जिससे घबराबर उन लोगों ने पेटी को छोड़ दिया और वो पेटी सीधे मेरे ऊपर आकर गिरी। कुछ पल मैं निढ़ाल-सी स्टेशन पर पड़ी रही और प्लेटफॉर्म पर भीड़ लग गयी। गुरुदेव के नाम स्मरण मात्र से हमारे साथ होने वाली बहुत बड़ी दुर्घटना टल गयी। आज भी जब इस घटना का स्मरण आता है तो गुरुदेव को धन्यातिधन्य मान श्रद्धा से भर जाती हूँ। यह सब श्रद्धा का प्रभाव है।

श्रद्धा सदैव सफलीभूत होती है। श्रद्धा का जो सकारात्मक परिणाम प्राप्त होता है उसे बहुत से लोग चमत्कार मानकर दिग्भ्रमित हो जाते हैं। चमत्कार अर्थात् बिना आपके प्रयासों के प्राप्त होने वाला परिणाम। यदि चमत्कार के भरोसे रहेंगे तो कर्मशील नहीं बन पाएँगे। अतः अपने देव, गुरु, धर्म के प्रति सच्ची श्रद्धा धारण करें और निश्चिंत रहें कि जो भी होगा अच्छे के लिए ही होगा।

Pujya Hukmesh

DEEKSHA CEREMONIES

– Golden Glimpses of ACHARYA SHRI HUKMICHANDJI M.SA.

Continued from 15-16 April 2023-

Dear children!

Pujya Shri Ji was covering the surrounding areas with his fellow saints. Moving forward, Pujya Shri started covering the small and large areas like Udayramasar and Deshnok with his holy footprints, and began planting the seed of right awareness in the hearts of people through his holy teachings. Its essence began to spread in all directions. As the date of Deeksha was approaching, Pujya Shri Ji turned back towards Bikaner.

Meanwhile, in the Thali region, Shri Tikamchand Ji Malu and Jeta Bai's daughter, Kheta Ji, was inspired by Pujya Shri Ji's penance and self-control, and dedicated herself to the movement of their actions along with her supportive fellow female ascetics. Kheta Ji herself had taken Deeksha into the Marwari tradition.

After the holy Chaturmas period, Pujya Shri arrived outside of Bikaner to

Under the "Achar Vishuddhi Mahotsav" the english translated series of "Pujya Hukmesh" is presented below to make the readers aware about the life of Acharya Shri Hukmichand Ji M.Sa.

sanctify many small and large areas. As soon as this auspicious message was heard, a wave of incredible enthusiasm began to spread among the people. People gathered with their hearts, minds, and wealth to make the Deeksha ceremony an ideal one, taking advantage of the opportunity to see and listen to the discourse of Pujya Shri like a flowing river. The streets, squares, and alleys of Bikaner were filled with crowds of deeksharthis being respected and honoured. Every devotee and family member took

deeksharthis into their homes and offered them meals and refreshments, then escorted them back to their residence with sweet songs and sounds of celebration. Many families were distributing sweets in joy. Some were bringing renunciates, singing songs and shouting cheers during Pujya Shri's darshan and discourse from their homes.

On Vasant Panchami, the Deeksha ceremony for ascetics was taking place, where clothes, utensils, razor, and henna were being offered, along with singing auspicious songs. The entire city of Bikaner was immersed in the colour of the religious ceremony of Deeksha. The fifth day of the month of Magha (sudi) was an extraordinary day. Somewhere the cuckoos were singing on the trees and somewhere peacocks were dancing in joy. The trees were regaining their beauty with new leaves sprouting and the branches swaying with the joyous wind.

On this holy and auspicious day of Vasant Panchami, all the ascetics left their self-indulgent lives and with internal joy, left their respective homes to move to the new environment of a disciplined life with their relatives, singing and praising, making the sky echo with their celebration, and reaching the Deeksha site through the main roads in a grand procession. They were adorned in beautiful clothes and carrying beautiful flags. Upon reaching the initiation site, they descended from the chariots and went to where the revered saint Hukmesh was present on the high platform along with other saints.

All four of them offered their respects to Pujya Shri and other saints and with folded hands and great humility apologised to everyone seated. At that time, the faces of those four seekers were filled with such joy that it seemed as if they were about to receive an inexhaustible treasure of the three worlds. After reciting the Mangal Path from the lotus mouth of Pujya Shri and receiving permission, they went to the designated place in the northeast. They removed the worldly attire that they had been wearing and handed them to their relatives who were keeping them as the last gifts for the new deeksharthis. Then the women of their families joined together to sing songs of good fortune and to apply sandalwood paste on their bodies. After that, the head of each family were taking turns to shave the heads of those four renunciants, while their family members' eyes were filled with tears of joy upon seeing them in white clothes.

Continued...

ज्ञान पहेली

नियम :-

1. *यह ज्ञान पहेली अधिकांशतया आचार्य श्री नानालालजी म.सा. के जीवन चरित्र से संबंधित है।*
2. *आचार्यश्री के जीवन चरित्र से संबंधित साहित्य, नानेश चालीसा आदि से हल ढूंढ सकते हैं।*
3. *हल स्वयं ढूंढ़कर लिखें, किसी से पूछकर नहीं।*

Note : *निम्नोक्त ज्ञान पहेली को भरकर अपने नाम, पते एवं मोबाइल नंबर सहित 30 मई 2023 से पूर्व मो.नं. 9314055390 पर व्हॉट्सएप्प के माध्यम से भिजवाने का लक्ष्य रखें।*

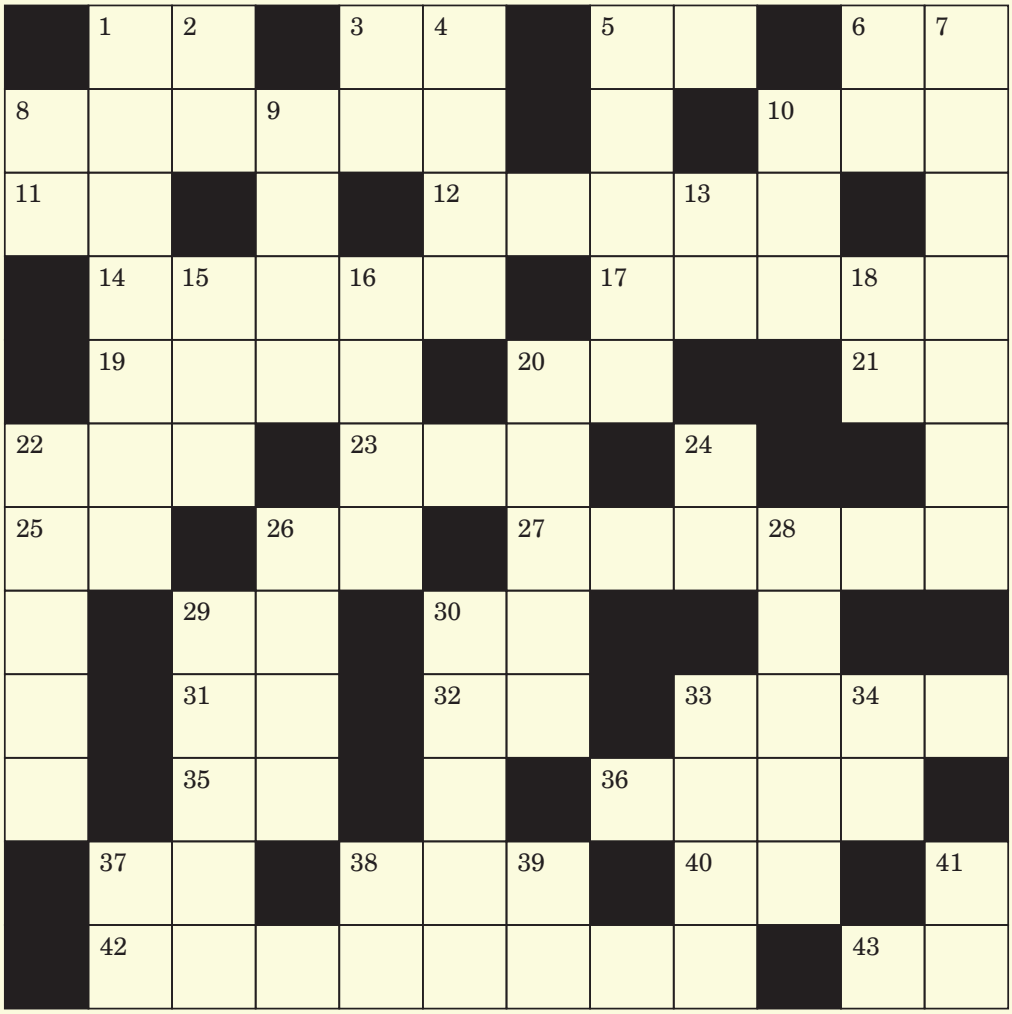

बाएँ से दाएँ

1. इसी समय (2)
3. कविता लिखने वाला (2)
5. बूढ़ी औरत, नयनहीन एक ..... माँई, दरसन कर ज्योति प्रकटाई (2)
6. वर्तमान दिन (2)
8. डॉ. नेमीचन्दजी जैन ने आचार्य श्री नानेश का जीवन चरित्र इस पुस्तक में लिखा (3, 3)
10. प्रतिक्रमण में आठवें अणुव्रत का एक आगार (2, 1)
11. मेरा (2)
12. नवविवाहिता धर्मपत्नी के साथ सजोड़े दीक्षा ली (2, 2, 1)
14. अजर-अमर का संयुक्त शब्द (5)
17. रावण का एक नाम (5)
19. आचार्य श्री नानेश का जन्म नाम (4)
20. बड़ी बहिन (2)
21. पुत्र, शृंगार माँ के ..... हो शासन प्रतिपाला हो (2)
22. जो भ्रमण नहीं करे, ज्योतिषी देवों का भेद (3)
23. समीक्षण ध्यान से इसे दूर किया जा सकता है (3)
25. ''अ'' रहित अमर (2)
26. कण का अपभ्रंश, उल्टा नक (2)
27. देवताजी म.सा. के नाम पहचाने जाने वाले म.सा. (3, 2, 1)
29. पाप का उल्टा (2)
30. मोक्ष की अभिलाषा करने वाला, ... भिलाषी (2)
31. स्वाद, फलों का तरल अंश (2)
32. तीर्थंकर किसकी स्थापना करते हैं (2)
33. जो प्रमत्त न हो (4)
35. एक कषाय (2)
36. आचार्य श्री रामलालजी म.सा. के लिए भक्तों में सर्वाधिक लोकप्रिय संबोधन (4)
37. किनारा, बाण (2)
38. लेखनी (3)
40. मरना सबको एक दिन अपनी-अपनी ..... (2)
42. नाना गुरु का नाम स्मरण करने से इनकी नाव डूबने से बच गयी (2, 2, 1, 3)
43. अद्‌भुत दृश्य, गजब आपकी भाषण शैली, समवसरण की ..... निराली (2)

ऊपर से नीचे

1. आचार्य श्री सिद्ध भगवान की जिस प्रार्थना से प्रवचन शुरू करते थे, उसके कुछ शब्द (3, 4)
2. मेवाड़ का एक छोटा शहर जहाँ आचार्यश्री के मुखारविन्द से एक दीक्षा सम्पन्न हुई थी (2)
3. रुक का उलटा (2)
4. साँप! सिंह, गज, अग्नि ..... सारे, भूतादिक भय दूर निवारे (4)
5. करेमि भंते के पाठ से स्वयं ने ही दीक्षा पच्चक्खान ले लिये थे (2, 2, 1)
6. गुरुवर ....., सभी के मन भाए (2)
7. आचार्यश्री के समकित दाता (4, 2, 1)
8. एक फल, जिसके पेड़ के नीचे आपश्रीजी की दीक्षा सम्पन्न हुई थी (2)
9. पुष्कर का आधा (4)
10. उपाध्याय प्रवर श्री राजेशमुनिजी म.सा. का सांसारिक नाम (3)
13. हाल, स्थिति (2)
15. ज्वर शब्द का अपभ्रंश (3)
16. तन-मन उलटा-पलटा हो गया (2, 2)
18. तत्त्व का ..... ज्ञान की कुँजी, एक पुस्तक (2)
20. जीव की रक्षा के लिए (2, 3)
22. महाराष्ट्र का एक शहर जहाँ आचार्य श्री नानेश एवं आचार्य श्री रामेश, दोनों गुरु-भगवंतों का चातुर्मास हुआ था (5)
24. खात्मा, नष्ट (2)
26. आचार्यश्री की दीक्षा स्थली (4)
28. आचार्यश्रीजी ने श्री रामलालजी म.सा. को युवाचार्य से पहले इस उपाधि से विभूषित किया था (2, 3)
29. गुरु ..... तुमने कीना, पंथ प्रभु महावीर का दीना (5)
30. ''हु शि उ चौ श्री ज ग नाना'' नारे के रचयिता का नाम (2, 2, 1)
33. पधारते हुए महापुरुषों के सामने आगे जाना (4)
34. तीन योग में से पहला (2)
37. गुप्तियाँ कितनी (2)
38. कभी नहीं आने वाला दिन (2)
39. स्याही (2)
41. वैरागी नानालालजी को गणेशलालजी म.सा. के प्रथम दर्शन कहाँ हुए थे (2)

मधुर वचन

ऐसी वाणी बोलिए

15-16 अप्रैल 2023 अंक से आगे...

परम पूज्य आचार्य प्रवर 1008 श्री रामलालजी म.सा. द्वारा लिखित 'ऐसी वाणी बोलिए' धारावाहिक वाणी पर संयम, नियंत्रण एवं संतुलन का संदेश देता है। इस धारावाहिक के कई शीर्षक भाषा सुधार हेतु प्रस्तुत किए जा चुके हैं। 'मित वचन' पूर्ण होने के पश्चात् 'मधुर वचन' प्रस्तुत किए जा रहे हैं। आप सभी इन वचनों को जीवन में उतारेंगे तो निश्चय ही व्यवहार संतुलन की नई दिशा प्राप्त करेंगे। आगे प्रस्तुत है.....

(ii) **किसी से कोई गलती हो जाने पर लोग उन्हें ऊपर उठाने के बजाय, शिकायत करके और नीचे गिरा देते हैं।**

★ **(iv) Situation 4 :** संघ में किसी नये व्यक्ति को अध्यक्ष/मंत्री बना दिया गया। कुछ लोग इसके पक्ष में नहीं थे। कार्य करते हुए उनसे कोई छोटी-मोटी गलती हो गई -

तरीका 1

उस व्यक्ति को बार-बार एहसास दिलाना कि वह उस काम के अयोग्य है : मैंने पहले ही कहा था। किसी अनुभवी को बनाओ। ये काम इनके बस का है ही नहीं। अब नहीं माने तो बैठे रहो। हम तो एक काम करने वाले नहीं हैं।

तरीका 2

उस व्यक्ति का सहयोग करना : काम करते-करते ही अनुभव बढ़ता है। आप गलतियों से घबराएँ नहीं, हम सब आपके साथ हैं ना। मिलकर काम करेंगे।

Note - आपको कौनसा तरीका उचित लगता है?

★ **(v) Situation 5 :** नई बहू घर पर आयी है। उसे पुराने रीति-रिवाज मालूम नहीं हैं। उसे बड़ों के पैर छूते समय पैर दबाना चाहिए था, पर उसने केवल पैर छू दिये -

तरीका 1

सुना-सुना के उसे Guilty (बुरा) Feel (महसूस) कराना : ऐसे कोई पैर छूते हैं। तुम्हें विवेक रखना चाहिए था। सब औरतें बातें बना रही थी।

Note - यदि आप अपने संबंध खराब करना चाहते हैं, तो हर एक गलती के लिए इसी प्रकार टॉर्चर कर सकते हैं।

तरीका 2

सहज भाव से जानकारी देना : मेरी गलती है, मैंने तुम्हें बताया नहीं। यहाँ बड़ों के पैर छूते समय उनके पैर दबाने का रिवाज है, इसका ध्यान रखना।

Note - आप जितना सहज रहेंगे, उतना ही सामने वाला भी आपके साथ सहज रहेगा।

★ **(vi) Situation 6 :** बच्चे को ऑफिस टेबल जमाने का काम दिया, परंतु वह काम तरीके से नहीं कर रहा :-

तरीका 1

उस पर चिढ़ना : अरे ऐसे कोई काम होता है? छोड़ो, हटो। तुमसे नहीं होगा। मेरी पूरी टेबल अस्त-व्यस्त कर दोगे।

तरीका 2

सहज रहना और उसे तरीका सिखाना : अरे-अरे एक बार रुको। मैं तुम्हें बता देता हूँ कि कौनसा सामान कहाँ जमाना है, फिर तुम कर लेना।
देखो : जो चीज जहाँ रहती है, उसे व्यवस्थित करके वहीं रखना है। ठीक है? (और फिर उसे करने देना, थोड़ी बहुत गड़बड़ हो तो Adjust कर लेना। (शालीनतापूर्वक गलती भी बता दें तो दिक्कत नहीं है)

Note 1 - हर व्यक्ति अपने Level (क्षयोपशम/समझ) के अनुसार ही काम करेगा। उसे डाँटने से क्या होगा? वह कभी कुछ सीख ही नहीं पाएगा। अत: समझदार श्रावक डाँटने के बजाय ट्रेनिंग देना सीखें।

2 - कुछ लोग परफेक्शनिस्ट होते हैं। उन्हें हर काम Perfect चाहिए। उन्हें जल्दी से किसी का किया हुआ काम अच्छा ही नहीं लगता। अत: वे हर चीज में नुक्स निकालते रहते हैं। इनके साथ रहने वाले या तो हीन भावना से ग्रसित हो जाते हैं या उग्र हो जाते हैं। कुछ लोग तो ऐसे होते हैं, जो काम करने वाले के सामने बैठ जाते हैं और टोकते ही रहते हैं। इससे काम करने वाले को बहुत अनकम्फर्टेबल फील होता है। अत: हमें काम सिखाकर कुछ देर तक देखना चाहिए, गड़बड़ लगे तो समझाना चाहिए (ये ऐसे करो)। अच्छा लगे उसके लिए Appreciate (प्रोत्साहित) करना चाहिए (तुम बहुत अच्छा कर रहे हो) और फिर उसके ऊपर छोड़कर कुछ देर के लिए इधर-उधर चले जाना चाहिए। इससे वो खुलकर काम कर पाएँगे और उनका कॉन्फिडेन्स भी बढ़ेगा।

★ **(vii) Situation 7 :** बच्चे ने गलती की है और उसे उस गलती के बारे में बताना भी जरूरी है -

तरीका 1

बच्चे को खराब बताना : तुम बहुत उद्दण्ड हो। हमेशा कोई न कोई गड़बड़ करते हो। तुम्हारी हरकतों से हमारी नाक कट जाती है।
उसी गलती के लिए भविष्य में भी डाँटना - तुमने पहले भी ऐसा ही किया था। तुम बिल्कुल समझदार नहीं हो।

तरीका 2

काम को खराब बताना, परंतु बहुत प्रेम से : जॉनी! तुमने जो किया है, वह ठीक नहीं है। तुम ऐसा नहीं करके वैसा करते तो क्या अच्छा नहीं होता? तुम बहुत अच्छे हो, पर ये काम अच्छा नहीं है। तुम्हारे करने लायक नहीं है। हमें तुमसे बहुत उम्मीद है, इसलिए हम तुम्हें कह रहे हैं।

Note 1 - मनोविज्ञान के अनुसार जिस व्यक्ति से जितनी बड़ी गलती होती है, उस व्यक्ति को सुधारने के लिए उतने ही अधिक प्रेम की जरूरत होती है। जब व्यक्ति को अपनी सद्भावना के द्वारा यह एहसास कराया जाता है कि 'वह योग्य है', केवल 'वह कार्य अयोग्य है' तब वह उस प्रेम की ताकत से बहुत जल्दी उस गलती से बाहर आ जाता है। टॉर्चर करने पर वह और अधिक बिगड़ सकता है अथवा डिप्रेशन में जा सकता है।

2 - कभी बच्चों के सामने कड़क होना भी पड़े तो कुछ समय में नरम जरूर हो जाएँ।

-क्रमशः

नाना के विविध रूप

-सुरेश बोरदिया, मुम्बई

जेठ सुदी 2, मेवाड़ का छोटा-सा गाँव - दाँता। अन्य दिनों की तरह सूरज आज भी अपनी पूर्ण लालिमा के साथ उदित हुआ, लेकिन आज भिन्नता थी, विशिष्टता थी। सूरज के साथ ही एक महापुरुष का अवतरण हुआ, जिन्हें जन्म देने वाली माता शृंगारबाई आज माता त्रिशला से कम नहीं थी और दाँता भी कुण्डलपुर की तरह धन्य हो चुका था।

शृंगारबाई की कोख से जन्म लेने वाला शिशु सामान्य से कुछ अलग लग रहा था। उसके चेहरे के तेज, चौड़े ललाट आदि से भावी महापुरुष की झलक स्पष्ट दिखाई दे रही थी। माता के गर्भ में आगमन के समय दिखाई दिये प्रकाश पुँज से विशिष्ट पुण्यात्मा के आगमन के संकेत तो पहले ही मिल चुके थे।

शिशु माता की गोदी में किलकारी गूँजा रहा था और बाल स्वभाववश रुदन भी कर रहा था। माता के लिए इस अवसर से बढ़कर और क्या हो सकता है? तीन लोक की खुशियाँ जिसकी गोदी में विद्यमान है, उसे और क्या चाहिए?

पारिवारिक रीति-रिवाज के अनुसार शुभ दिन एवं समय में बालक का नामकरण किया गया, नाम रखा गया - गोवर्धन। मेवाड़ में एक रिवाज है कि नामकरण के समय बालक की भुआजी आदि बड़ी महिलाएँ शिशु को हाथों में लेकर ऊपर की ओर उठाते हुए आशीर्वाद स्वरूप कहती हैं- ''म्हारो गोवर्धन अतरो-अतरो मोटो वैईज्ये'' अर्थात् हमारा गोवर्धन इतना-इतना बड़ा हो जाए। उनका आशीर्वाद तो असीम था, अनुमान सीमित ही रह गया। उन्होंने गोवर्धन के जितना बड़ा होने की कल्पना की, वह कल्पना तो मात्र बिन्दु ही रह गया और गोवर्धन सिन्धु से भी बड़ा बन गया।

सभी भाई-बहिनों में छोटा होने से गोवर्धन को लाड-प्यार भी कुछ अधिक मिलता था। इसी लाड-प्यार की अधिकता से गोवर्धन का नाम 'नाना' हो गया। धीरे-धीरे गोवर्धन नाम का स्थान **'नाना'** लेने लगा।

गोवर्धन नाम भी तो पूर्ण रूप से उपयुक्त ही था। गोवर्धन यानी एक पर्वत! अडिगता, स्थिरता, ऊँचाई का प्रतीक। कैसी भी परिस्थितियाँ आ जाए, पर्वत अडिग, अडोल ही रहता है। जिस गोवर्धन पर्वत को श्रीकृष्ण वासुदेव का स्पर्श मिला वह ऊपर उठ गया। इस गोवर्धन को भी दो-दो महापुरुषों का स्पर्श मिला - श्री जवाहराचार्य से समकित पायी एवं श्री गणेशाचार्य से संयम ग्रहण किया। इन दो महापुरुषों का स्पर्श पाकर गोवर्धन इतना ऊपर उठ गया कि मेरु की उपमा भी छोटी लगने लगी।

'नाना' शब्द की कई व्याख्याएँ हो सकती हैं - छोटा, लघु, विविध, अनेक। और भी अनेक व्याख्याएँ जो हमारी कल्पना से परे हैं।

ये नाना भी सचमुच में 'नाना' यानी छोटे ही बनकर रहे। गणेशाचार्य ने नाना को बहुत बड़ा, बहुत महान बना दिया था और युवाचार्य की चादर भी ओढ़ा दी थी, लेकिन माता के लिए... माता के लिए नाना बड़ा हुआ क्या? माता-पिता के लिए सन्तान कभी बड़ी होती है क्या? जवाब होगा- नहीं। यह एक निर्विवाद सत्य है। माता शृंगारबाई एक युवाचार्य के समक्ष खड़ी है, लेकिन माता अब भी वात्सल्य का दरिया बनी हुई है। उसे युवाचार्य में भी अपना 'नाना' भोला टाबर ही दिखाई दे रहा है। युवाचार्य तीन लोक के लिए हैं, माता के लिए 'टाबर' से अधिक नहीं है। यह है माता का वात्सल्य! ममता! प्यार! लाड़! दुलार!

भगवान महावीर की त्रिशला माता से पूर्व की माता देवानन्दा, जिसके गर्भ में भगवान का जीव मात्र कुछ ही दिन रहा था। एक बार समवसरण में देवानन्दा ने महावीर को देखा और उसके स्तनों से दूध की धार बहने लगी। यह दुग्धधारा तीर्थंकर महावीर के लिए नहीं, 'मेरे महावीर' को देखकर बहने लगी। अपने महावीर के लिए देवानन्दा के मन में कितना वात्सल्य उमड़ पड़ा था, सोच पाना भी मुश्किल है।

देवानन्दा ने तो महावीर को जन्म नहीं दिया, मात्र कुछ ही दिन गर्भ में रखा तो भी उसके मन में इतना वात्सल्य! लेकिन शृंगार माता ने तो 'नाना' को जन्म भी दिया, बड़ा भी किया, लाड भी लडाया तो सोचिए कि उनके मन में अपने 'नाना' के लिए कितना वात्सल्य रहा होगा? उसी वात्सल्यतावश बोल उठी- ''म्हारा धोळा दूध री धोळी चादर पे काळो दाग मती लगाईज्ये!''

ये शब्द युवाचार्यश्री के कानों में सुनाई दिये, लेकिन उन्होंने अपने आपको 'नाना' ही समझकर ग्रहण किये। चतुर्विध संघ के युवाचार्य हैं, लेकिन अब भी मातुश्री के वचनों को सहर्ष ग्रहण कर रहे हैं! इतने महान होकर भी नाना बने रहे। निश्चित ही नाना नाम को सुसार्थक किया। गहराई में स्वयंभूरमण समुद्र और ऊँचाई में मेरु से भी बढ़कर थे नाना, लेकिन अपने आपको सदा 'नाना' ही माना।

नाना का अर्थ विविध भी होता है। आपश्री कौशल्यानंदन राम की तरह अस्पृश्यता से कोसों दूर थे। मालवा में बलाई जाति को अछूत समझकर उनका तिरस्कार किया जाता था। नाना गुरु ने उन लोगों को सदुपदेश देकर दुर्व्यसनों से मुक्त कराया और **'धर्मपाल'** की संज्ञा दी। जैसे सतयुग में राम ने शबरी का उद्धार किया, वैसे ही कलयुग में नाना गुरु ने बलाई जाति के लाखों लोगों का उद्धार किया।

नाना की विविधि व्याख्याएँ हो सकती हैं, क्योंकि वे महापुरुष एक नहीं, एक में अनेक थे। भक्ति और श्रद्धावश उनके गुणों को व्यक्त करने की भावना, लालसा अवश्य ही रहती है, लेकिन ऐसे बिरले महापुरुषों का सम्पूर्ण गुणगान कर पाना दुष्कर भी है, असंभव भी है। उनके गुणगान करने की, वर्तमान आचार्य प्रवर श्री रामलालजी म.सा. के गुणगान करते रहने की लालसा प्रतिपल हमारे अन्तर में बढ़ती रहे, यही प्रार्थना करते हैं!

Every person wants to be happy and this drive for contentment sparks the creation of desires. These desires may include aspirations for wealth, fame, family, and more. However, it is undeniable that every person eventually realizes the cyclical pattern of desire. The pursuit of a desire initially intended to bring joy eventually leads to disappointment. After experiencing both the pleasures and the pains associated with desire, people are often left with a lingering question - is this all there is to life? Where can one find true happiness? Where is bliss?

This question often marks the beginning of a spiritual journey, as people begin to seek happiness from internal sources rather than external ones. The key question then arises - how can one attain such a state?

This led people to adapt to various methods of meditation to find inner peace. The conventional techniques of meditation failed to provide individuals with the satisfaction they sought because they solely focused on attaining physical balance. However, Acharya Shri Nanesh introduced a distinctive approach to meditation known as Samikshan Dhyaan. This technique enables individuals to go beyond physical balance and gives them peace along with stress relief. By embracing the practice of Samikshan Dhyaan, a person can enhance their external and internal growth.

Samikshan Dhyaan : An ultimate secret to a blissful life

-Urja Mehta, Indore

What is Samikshan Dhyaan?

"Samikshan Dhyaan" is a technique for awakening one's discerning mind. It involves the purification of one's thoughts and emotions by observing them. "Samikshan" means observing with equanimity, and "Dhyaan" means meditation or contemplation. This practice involves observing one's thoughts and actions and striving to redirect them from negative to positive. The objective of this technique is to liberate oneself from negative thought patterns and live a blissful life. Samikshan Dhyaan is a powerful tool for acquiring infinite knowledge, insight, and awakening. It is a means to develop a harmonious relationship between the body, mind, and soul, leading to the creation of a new

personality. It is the fundamental practice of self-realization, which involves observing oneself and examining the soul. By practicing Samikshan Dhyaan, one can observe the soul with a detached and impartial mindset.

The use of "Samikshan Dhyaan" is different for various practitioners, as it helps reveal many hidden powers of the soul and the body. The continuous practice of "Samikshan Dhyaan" yields different results at the physical, mental, emotional, and spiritual levels described below-

- **At the physical level :** The body becomes healthy, and blood circulation becomes natural, nourishing, and regular.
- **At the mental level :** Awareness and concentration of the mind increase, and mental illnesses are alleviated.
- **At the emotional level :** The seeds of pure feelings sprout in consciousness. Negative emotions and tendencies come to an end.
- **At the spiritual level :** The practitioner becomes discerning and reaches a higher state of consciousness beyond the mind.

There are a few essential points to keep in mind for Samikshan Dhyaan :-

1. Background Check : Similar to how before seed sowing, the farmer focuses his attention on the field; and before painting, the artist verifies the panel screen and its proper size. In the same way, before starting with Dhyaan it is necessary to check the surroundings.

2. Intense Determination : It is a psychological fact that our determination determines the direction of our development and decline. The more firmly we are active toward any behavior, the more successful we are. Therefore, before being present in Dhyaan, our minds should be filled with determination.

3. Place and Environment : The influence of the region and environment also excites the mind of the seeker. The most useful place for spiritual practice should be secluded - silent and free from all kinds of sensory attractions. A seeker who is surrounded by material opulence and external attractions cannot succeed quickly in the practice of Samikshan Dhyaan. "Simple living, and high thinking" should become the motto.

The more we practice Dhyaan, the awareness gets purer and the psychic bond with the material world will start to disappear. We will develop an eternal blissful state. This will not happen unless we make this change in our lifestyle consciously.

आचार्य श्री नानेश : व्यक्तित्व एवं कृतित्व

-कान्ता बैद, गाजियाबाद

जगती तल की पूर्ण विभूति तुमको नमन, सहस्र सूर्यों की किरण तुमको नमन।
झुक जाता शीश हमारा, कह उठता मन, परम पुनीत महान आत्मा, तुमको नमन।।

पुण्यश्लोका भारत की उर्वरा भूमि पर अनेकानेक महापुरुषों ने जन्म लिया है। उन्हीं में से एक महापुरुष हैं हमारे अनन्त श्रद्धा एवं आस्था के केन्द्र, बहुआयामी व्यक्तित्व के धनी परम पूज्य आचार्य श्री नानेश। मेवाड़ (राज.) के छोटे-से गाँव दाँता के पोखरणा कुल में पिता श्री मोडीलालजी एवं माता श्रीमती शृंगारबाई के पुत्र के रूप में गोवर्धन 'नाना' पल्लवित हुए। यौवन की दहलीज पर कदम रखते ही समय ने करवट ली और छठे आरे का विवरण सुन चेतन मन में अन्तर्द्वंद्व हुआ कि चौरासी लाख योनियों में दुर्लभ मानव तन पाया है तो इसे यूं ही नहीं गंवाना है। चिंतन चला और चलता ही गया कि श्रावक जीवन से श्रमण जीवन को अंगीकार करूँ और योग्य गुरु की तलाश में निकल पड़े तथा शीघ्र ही गुरु की खोज कर ली। **'जिन खोजा तिन पाइया'** की उक्ति को चरितार्थ करते हुए गुरु को योग्य शिष्य मिला तो शिष्य को योग्य गुरु मिल गए। कपासन गाँव में वि.सं. 1996 पौष शुक्ला अष्टमी को चतुर्विध संघ की साक्षी आचार्य श्री गणेश ने दीक्षा प्रदान की।

संयमचर्या के साथ-साथ स्वाध्याय और आगमों के तलस्पर्शी ज्ञान से हिन्दी, संस्कृत एवं प्राकृत आदि भाषाओं का ज्ञान प्राप्त कर अंग-उपांग, छेद सूत्र, चूलिका सूत्र, मूल सूत्र, न्याय भाषा, टीका-चूर्णि आदि के गहन अध्येता बन गये। जैन दर्शन के साथ-साथ पुराण, गीता, महाभारत, कुरान आदि धार्मिक ग्रन्थों का भी आपको विशेष ज्ञान था।

साधु जीवन की अनेकानेक कसौटियों पर कसने के पश्चात् आचार्य श्री गणेशलालजी म.सा. ने उदयपुर में आसोज सुदी 2 संवत् 2009 को युवाचार्य चादर प्रदान कर संघ को अलौकिक हीरा प्रदान किया।

सेवाभावी, कथनी-करनी में एकरूपता, सहनशील, विनयशील, सरलमना, वात्सल्य प्रियता आदि अनेकानेक उपमाओं से आपको उपमित किया गया। आप समिति, गुप्ति व महाव्रतों का सजगता से पालन करते थे।

धीर-वीर-गंभीर, प्रखर प्रतिभा के धनी मुनि श्री नानालालजी को संघनायक के रूप में वि.सं. 2019 माघ बदी 2 को सुशोभित किया गया। आपश्रीजी ने अष्टम् पाट की शोभा बढ़ाते हुए जिनशासन की भरपूर दलाली की और 300 से अधिक दीक्षाएँ देकर **'शासन प्रद्योतक'** कहलाए। आपश्रीजी द्वारा हरिजन को चरणस्पर्श की अनुमति देने, अछूत कहलाने वाली बलाई जाति को जैनत्व प्रदान कर 'धर्मपाल' से सम्बोधित करने जैसी अनेक ऐतिहासिक उपलब्धियाँ प्राप्त की।

आगमों के गूढ़ विवेचनकर्त्ता- नाना गुरु के पास हर शंका का समाधान था। जिनागम तत्त्वों का सार निकालने में आपश्री बड़े निष्णात थे। **'जिणधम्मो'** आपकी महान कृति है। साहित्य सृजन द्वारा आपने अपने साधना पथ को संवारा और समता को जीवन का मूलमंत्र बताकर 'समीक्षण से लेकर समता प्राप्ति की यात्रा ही जीवन की जय यात्रा है' की गहन व्याख्या की।

आपश्रीजी का मानना था कि समता विचार में हो, दृष्टि और वाणी में हो, आचरण के प्रत्येक चरण में हो। समता का अर्थ किसी किसी वस्तु के त्याग से नहीं, अपितु उसके प्रति निहित मूर्च्छा व आसक्ति का त्याग है। इस प्रकार समता सिद्धान्त के माध्यम से आपश्री ने अपरिग्रह को ग्रहण करने पर बल देते हुए कहा कि समता के द्वारा ही समाज का, देश का सम्पूर्ण विकास संभव है।

आचार्य भगवन् की दिव्य कारुण्य दृष्टि ने जब चारों ओर विषमता देखी तो दिल दहल गया। आपश्रीजी ने सोचा कि मैं साधु हूँ। अपनी मर्यादा में रहकर कैसे सृष्टि का, मानव का कल्याण करूँ? मेरा कर्त्तव्य क्या कहता है? हिंसा, आतंकवाद, गृहयुद्ध आदि समस्याओं के निराकरण के लिए भगवान महावीर की अहिंसापरक समता पर विशेष जोर देना होगा। जहाँ चाह वहाँ राह रूप **'समता : दर्शन और व्यवहार'** की विस्तृत सांगोपांग व्याख्या की। समता दर्शन को विश्व शांति का अमोघ उपाय एवं डूबते हुए जीवन की पतवार निरूपित किया। समता दर्शन को सकारात्मक रूप देने के लिए चार सिद्धान्त प्रतिपादित किये-

1. समता सिद्धान्त दर्शन : समता को जीवन में अपनाने से पूर्व उसके सिद्धान्तों को उपयोगी माना जाए। सम जानें, सम मानें, सम देखें, सम करें। जीवन के प्रत्येक कार्य में समता हो।

2. समता जीवन दर्शन : 'जीओ और जीने दो' के सिद्धान्त को जीवन में उतारना समता जीवन दर्शन है।

3. समता आत्मदर्शन : समता जीवन दर्शन से साधना की चेतना जब ऊपर उठने लगती है तब वह समता आत्मदर्शन की स्थिति में आती है। किसी का भी हनन स्वयं का हनन है।

4. समता परमार्थ दर्शन : समता परमार्थ दर्शन से साधक स्वयं के चरम विकास के साथ-साथ अन्य आत्माओं के विकास में सहयोगी बन जाता है। राग-द्वेष और तेरे-मेरे की भावनाओं से ऊपर उठ वीतरागी बन जाता है।

आचार्य श्री नानेश ने साधु मर्यादा को ध्यान में रखकर फरमाया कि चार सोपानों को मूल मानकर इक्कीस सूत्रों एवं तीन चरणों में आस्था रखने वाले समता समाज की स्थापना की जाए। संयम के वृक्ष पर समता फल तब ही लगेगा, जब समता समाज एकजुट होकर विश्व में समता का बिगुल बजाएगा।

आपश्रीजी ने अपना सम्पूर्ण जीवन समतामय बना लिया। आपश्रीजी को वृद्धावस्था में समता दर्शन की कठिन परीक्षा देनी पड़ी, जब प्रिय शिष्य-शिष्याओं का पृथक्करण हुआ। आप जरा भी उदासीन नहीं हुए और विपरीत परिस्थितियों में भी शान्त रहे।

धर्म ही जिनका जीवन था, समता जिनकी पूजा। 'नाना' जैसा अद्भुत संत, कहाँ मिलेगा दूजा।।

समता दर्शन विश्व दर्शन है। इसके अध्ययन के पश्चात् अन्य दर्शनों के अध्ययन की आवश्यकता ही नहीं रहती।

समता सागर आचार्य श्री नानेश वि.सं. 2056 कार्तिक बदी 3 को उदयपुर में संथारा साधना करते हुए देहातीत हो गये। आपश्रीजी के प्रति सच्ची समर्पणा यही होगी कि हम **''खामेमि सव्वे जीवा, सव्वे जीवा खमंतु मे। मित्ति मे सव्वभुएसु, वैरं मज्झं न केणई।।''** पर चलें।

आचार्य श्री नानेश ने अपने दृढ़मनोबल से अपनी पाट परम्परा को अक्षुण्ण बनाए रखने के लिए संघ को आचार्य प्रवर 1008 श्री रामलालजी म.सा. जैसे कठोर क्रिया पालक, चारित्रवान, आगममर्मज्ञ, प्रशांतमना, तरुण तपस्वी कोहिनूर हीरा सौंपा है, जो आज श्री अखिल भारतवर्षीय साधुमार्गी जैन संघ का गौरव बढ़ा रहे हैं।

:::: भक्ति रस

आचार्य श्री नानेश द्वारा की गई सामाजिक उत्क्रान्ति धर्मपाल समाज यात्रा : 1964 से आज तक

ये विकास की अकथ कहानी : हुक्मसंघ की अमिट निशानी

-प्रतिभा तिलकराज सहलोत, निम्बाहेड़ा

आस्था के अनुपम आस्थान, गुरु नाना को करो प्रणाम।
धीर वीर गंभीर गुणों के सागर, जिनके कार्य महान।।
रतलाम का पावन चौमासा, शासन को खूब दीपाया था।
पावन दर्शन आचार श्रेष्ठ, जन-जन का मन हर्षाया था।।

युगधर्म का अनुपालन करके, मार्मिक उपदेशों की धारा।
सिद्धान्त श्रेष्ठ व्यवहारों से, समता का सूत्र दिया प्यारा।।
चौमासा पूर्ण हुआ गुरुवर, दुर्गम क्षेत्रों में घूम रहे।
पीयूषवर्षिणी वाणी सुन, नर-नारी सारे झूम रहे।।

मालव के बीहड़ भागों में, जो नीच अछूत मानी जाती।
उस जात बलाई ने रखी, चरणों में भावभरी विनती।।
नागदा से भगवन् हुए रवाना, आए गुराड़िया गाँव।
सीतारामजी धूलजी प्रमुख बोले पार लगाओ नाव।।

नहीं लेने देती चैन हमें, अपमान रूपी कलुषित ज्वाला।
हे प्रभो! कृपा कर दो ऐसी, मिट जाए जाति कलंक काला।।
नहीं मिलता हमको सम्मान, यह वर्षों की अमर प्यास।
चरण शरण में ले लो भगवन्, निश्चित होगी पूरी आस।।

था 64 का वो साल भला, कर रहे थे नाना उग्र विहार।
राह दिखाई श्रम करके, हुआ आत्मशक्ति संचार।।
फूँका शंखनाद जन-जन में, अब जागृति का बिगुल बजा।
खोले नूतन द्वार पढ़ाया पल-पल पाठ भरी ऊर्जा।।

बालक वृद्ध जवान सभी में, नव उत्साह जगाया।
उद्‌बुद्ध हुए संस्कार, कुरूढ़ियों का भूत भगाया।।
सरल शब्दों के थे उपदेश, बन गये मंत्र समान।
इंगित मिला उत्साह बढ़ा, छाई सुमनों-सी मुस्कान।।

सूत्र दिया कर काम भलाई, हँसते खिलते जीना।
झगड़े झंझट को छोड़ो, क्यों ऐसा विष पीना।।
युगदृष्टा ने बोध दिया, हुआ सभ्यता का विस्तार।
नहीं जात-पात की बात कोई, सबके हैं सम अधिकार।।

स्वयं की पहचान कराने, डाली अमृत धार।
कुव्यसनों का त्याग कराया, चमका भाग्य सितार।।
ओजस्वी वाणी सुन-सुनकर, दूर हटा अंधिकार।
बदलो चिंतन सब कुछ बदलेगा, पाओगे सत्कार।।

सामाजिक उत्क्रान्ति हेतु धर्मनाथ की करी प्रार्थना।
गुण निष्पन्न बन धर्मपाल, शुद्ध समकित को पालना।।

पा सम्बोधन धर्मपाल, चरणों में झुक आई जनता।
उदात्त भाव से हो कृतज्ञ, संघ-समाज अभिनन्दन करता।।

पाई रामबाण औषध, हर क्षेत्र में मची ऐसी हलचल।
प्रयोग, प्रशिक्षण और शिविरों से, बना भविष्य भी उज्ज्वल।।
चलता रहा सतत् अभ्यास, फैली सुगन्ध गली-गली।
नियमित चलते कार्यक्रमों से, नव प्रकाश की किरण मिली।।

बनी समितियाँ हुई बैठकें, सम्मेलन और प्रवास चले।
मूर्च्छित मानवता ने ली करवट, नाना के सब अरमान फले।।
जिनत्व सुधा का पान कराने, बहता करुणा निर्झर।
सन्तों ने भी सहे परीषह, कष्ट सहिष्णु के संग रहकर।।

पाकर के पावन पथ दर्शन, टूट गया भ्रम का ताला।
दलितों की काया पलट गई, ऐसा हुआ उजाला।।
सदियों से पीड़ित जाति, जागी लेकर के अंगड़ाई।
हुआ क्रान्तिकारी परिवर्तन, नाना ने शुभ ज्योत जलाई।।

संघ प्रमुखों का स्नेहपूर्ण, व्यवहार उन्हें गद्‌गद् करता।
देख आत्मीयता महिलाओं की, विनय से सिर झुक जाता।।
पदयात्राओं की सरिता से, पाएँ शिक्षाप्रद आयाम।
धुलि कालिमा अन्तर की, खूब बढ़ाया ज्ञान।।

पाप पंक में जीने वाले, निपट अज्ञानी लोग जहाँ।
बदल गये सब संभल गये, देखो नहीं मिलते आज वहाँ।।
आर्य समाज के लोगों ने भी, माना गुरु का आभार।
नहीं कर पाती सरकार जहाँ, करते हैं संत वहाँ उपचार।।

दानवता को किया निढ़ाल, मानवता हो गई निहाल।
ऐसी बही धर्म की गंगा, धर्मपाल अब बने मिसाल।।
शुभ शुकुन में नींव पड़ी, बना दिलीपनगर में नूतन धाम।
चमक रहा है आज संघ में, इसकी प्रगति है अविराम।।

तन-मन सब स्वर्ण बनाया है, नाना सम पारस को छूकर।
मंगल राही ओ धर्मपाल, चलना सदा धर्म के पथ पर।।
मिला नेतृत्व सुगुरु राम का, जागे सदा जागो मतिमान।
निर्मल गंगा में नहाओ, पाना यदि अमूल्य निधान।।

ये विकास की अकथ कहानी, हुक्मसंघ की अमिट निशानी।
शिक्षा, साहित्य, कला, साधना से, लगती है सबको सुहानी।।
60 वर्षों की सफल यात्रा का, है सुन्दर इतिहास।
युग बदल गया ''प्रतिभा'' निखरी, नाना का यह पुण्य प्रयास।।

वात्सल्य वारिधि

15-16 अप्रैल 2023 अंक से आगे...

प्राचीन समय में शौर्यपुर नामक भव्य नगर था। वहाँ न्यायप्रिय, परदु:खकातर राजा अंधकवृष्णि राज्य करता था। उनकी रानी थी सुभद्रा। सुभद्रा की कुक्षि से दस पुत्र- समुद्रविजय, अक्षोभ, स्तिमित, सागर, हिमवान, अचल, चरण, पूरण, अभिचन्द्र और वासुदेव उत्पन्न हुए, जो अत्यन्त पराक्रमी व बलिष्ठ थे। उन्हें दशार्ह के नाम से सम्बोधित किया जाता था। उनकी दो बहिनें थी- कुन्ती और माद्री।

हस्तिनापुर में पाण्डु राजा राज्य करते थे। वे महाप्रतापी शौर्य शक्ति में अपूर्व तथा रूप-लावण्य से पूरित थे। अन्धकवृष्णि ने अपनी दोनों कन्याओं का पाणिग्रहण राजा पाण्डु से कर दिया। वे दोनों रानियाँ विदुषी, धर्मपरायण पतिव्रता व सौतिया-डाह से बिल्कुल अपरिचित थी। वे परस्पर सौहार्द्रपूर्ण वातावरण में रह रही थी। राजा के प्रति भी अत्यन्तप्रिय, कर्त्तव्यशीला व सौम्यमना थी।

पाण्डु राजा का समय अत्यधिक आनन्द में बीत रहा था। समय पर दोनों रानियाँ गर्भवती हुई। कुन्ती से युधिष्ठिर, अर्जुन व भीम हुए तथा माद्री से नकुल व सहदेव। क्रमशः जन्मोत्सव मना सम्बन्धियों को प्रीतिभोज से लाभान्वित किया।

वे पाँचों पाण्डव कहलाते थे। श्रेष्ठ गुरुओं से शिक्षा प्राप्त कर थोड़े समय में शस्त्र व नीतिपरक अध्ययन में दक्ष हो गये।

एक समय पाण्डु राजा वनविहार को निकले। साथ में दोनों रानी कुन्ती व माद्री थी। राजा का बसन्त की अपूर्व छटा निहारते-निहारते हृदयाघात हो जाने से प्राणान्त हो गया। दोनों रानियों पर वज्राघात टूट पड़ा। वे शोकमग्न हो गयी। नगर में समाचार पहुँचने पर सर्वजन शोक सागर में डूब गये। चारों ओर कोहराम बच गया। पाँचों पाण्डवों ने अपने पिता का दाह-संस्कार करके दोनों माताओं को प्रासाद की ओर लाकर उनकी विनय-भक्ति करते हुए कहने लगे कि यह विधि की विचित्रता का विधान है। इसके आगे सब नतमस्तक हैं।

महासती कुन्ती

योग्यवय होने पर कम्पिलपुर के राजा द्रुपद की कन्या से पाण्डवों का विवाह कर दिया गया। जो द्रौपदी के नाम से ख्यातिलब्ध थी। वह पतिपरायणा व धार्मिक संस्कारों से उद्‌भुत थी।

पाण्डु राजा के बड़े भाई थे प्रज्ञाचक्षु धृतराष्ट्र। उनकी पत्नी थी गान्धारी। उनके दुर्योधन आदि सौ पुत्र थे। वे कौरव कहलाते थे। बड़ा पुत्र दुर्योधन यथानाम तथागुणों से सम्पन्न था। वह ईर्ष्या की ज्वाला में आए दिन जलता रहता था। वह पाण्डवों के राज्य को अपने अधीन करने के लिए कुटिल चाल चल रहा था। वह पाण्डवों को द्युत-क्रीड़ा में पराजित कर राज्य हड़पना चाहता था। हुआ भी वही। शकुनि के पाशों की कुटिल चालों ने पाण्डवों को हरा दिया और राज्य अपने अधीन कर उन्हें वनवास के लिए प्रस्थित कर दिया।

एक दिन अपनी बुआ से मिलने त्रिपृष्ठ वासुदेव कृष्ण आये। कुशलक्षेम पूछने पर अत्यन्त खिन्न होती हुई कुन्ती ने वस्तुस्थिति चित्रित की। श्रीकृष्ण सर्वस्थिति से अपरिचित नहीं थे। बारह वर्ष वनवास व एक वर्ष अज्ञातवास का व्यतीत होने पर हस्तिनापुर लौटने पर महापराक्रमी श्रीकृष्ण के दिशा-निर्देश पर घमासान युद्ध हुआ। जिसमें दिग्गज योद्धा भीष्म पितामह, द्रौणाचार्य, अश्वत्थामा परास्त हो गये। वापिस राज्य पाण्डवों के अधिकृत हो गया।

अपरिहार्य कारणों से श्रीकृष्ण ने पाण्डवों को अपने राज्य से निष्कासित कर दिया, किन्तु कुन्ती के अनुनय-विनय से अपने शब्द वापिस ले दक्षिण में मथुरा में राज्य करने की अनुमति दी।

राजमाता कुन्ती ने जीवन में अनेक उथल-पुथल देखी। सुख-दुःख के खट्टे-मीठे अनुभवों से परिचित हो, वैराग्योद्रक जागृत हो गया। सृष्टि के विषमय वातावरण से अकुलाती हुई भगवान अरिष्टनेमि के भव्यागमन पर पाँचों पाण्डवों से सहर्ष अनुमति ग्रहण करके सर्वतोभावेन दीक्षित हो आत्मा को तप, जप, साधना द्वारा तापित करती हुई चिराभिलाषित शाश्वत पद को प्राप्त हुई।

-क्रमशः

गुरुचरण विहार

भव्यजनों के तारणहार,
राम गुरु की जय-जयकार।
जाते-जाते भूल न जाना,
लौट के वापिस जल्दी आना।।

भगवन् आपका सदा उपकार है, उदयपुर नगरी पर बरसाया प्रेम अपार है।
10 महीने के ठाठ के बाद मौका विदाई का द्वार है।।
कृपादृष्टि बनी रहे उदयपुर संघ करता अरदास है।
अश्रुपूरित आँखों से करता राम गुरु जय-जयकार है।।

सुपात्रदान की महिमा अपरम्पार
-आचार्य श्री रामेश

न्यू अशोक नगर, सुन्दरवास, उदयपुर, देबारी, आर्ची गैलेक्सी, गीतांजलि इंस्टीट्यूट, डबोक, दरोली, भटेवर, खेरोदा।

जन-जन में सदाचार, नैतिकता, ईमानदारी, व्यसनमुक्ति व धर्म की अलख जगाने वाले, युगपुरुष, साधना के शिखर, ज्ञान एवं क्रिया के बेजोड़ संगम, नानेश पट्टधर, परमाराध्य आचार्य प्रवर 1008 श्री रामलालजी म.सा. आदि ठाणा का उदयपुर के ऐतिहासिक चातुर्मास एवं उपनगरों में पावन प्रवास के बाद उदयपुरवासियों द्वारा ऐतिहासिक विदाई दी गयी। नम आँखों से श्रद्धालुओं ने उपकारों के प्रति कृतज्ञता ज्ञापित करते हुए भावभीनी विदाई दी। मेवाड़ के विभिन्न क्षेत्रों में अद्भुत धर्म जागरणा, उत्साह, उल्लासमय प्रभावी विचरण से पूरा मेवाड़ हर्षित व उत्साहित है। अलौकिक महापुरुष को अपने बीच पाकर जैन-जैनेतर सभी अपने भाग्य की सराहना कर रहे हैं। त्याग, नियम, पच्चक्खाण से हर कोई अपना जीवन सजाने को आतुर है।

आचार्य भगवन् के मुखारविन्द से 28 मई को मुमुक्षु बहिन कु. कुमकुम कोटड़िया सुपुत्री श्रीमती संजूदेवी-कमलेशजी कोटड़िया, धमतरी (छ.ग.) की जैन भागवती दीक्षा संभावित है। सम्पूर्ण मेवाड़ क्षेत्र में हर्ष की लहर व्याप्त है।

16 अप्रैल 2023। प्रकाशजी मोनिनजी सुराणा निवास, न्यू अशोक नगर में समता शाखा में अपूर्व उत्साह एवं उल्लास के साथ गुरुभक्तों ने भाग लिया। आचार्य भगवन् ने असीम कृपा करके मंगलपाठ प्रदान करने के पश्चात् अपनी शिष्य मंडल सहित यहाँ से विहार कर महावीर स्वाध्याय मंडल, सुन्दरवास में जय-जयकारों के साथ मंगल प्रवेश किया।

धर्मसभा में श्री आदित्यमुनिजी म.सा. ने *''णमो संघस्स गाता जा, नमो तित्थस्स गाता जा, गुरु राम को झुकता चला जा''* भजन के माध्यम से संघ व गुरु की महिमा का वर्णन करते हुए फरमाया कि संघ की एकता,

दृढ़ता, वृद्धि और जिनशासन की प्रभावना के लिए उत्तर से दक्षिण, पूर्व से पश्चिम तक प्रभावी विचरण कर दीक्षाओं का ठाठ लगाया। लगभग 10 माह तक आचार्य भगवन् के पावन सान्निध्य का लाभ उदयपुर, मेवाड़वासियों को मिला। अब विदाई की बेला आ चुकी है। गुरुदेव जहाँ भी विराजें स्वस्थ रहें और देश-विदेश में जिनशासन का परचम लहराता रहे। ऐसे गुरु का सान्निध्य प्राप्त कर यदि श्रेष्ठ कार्य नहीं कर पाए तो ये हमारा दुर्भाग्य है। मुनिश्री ने ***''गुरु दर्शन सुहाने मिलेंगे कहाँ, ये मांगलिक माधुरी मिलेगी कहाँ''*** भजन सुनाकर सबको भावविभोर कर दिया। सबके नयनों से अश्रुओं की धारा बहनें लगी। आचार्य भगवन् के आचार्य पदारोहण के पश्चात् अभी तक के होली चौमासे और वर्षावास का सजीव चित्रण भी प्रस्तुत किया।

इससे पूर्व श्री गगनमुनिजी म.सा. ने ***''उदयपुर के धर्मप्रेमियों सुनना, इस धर्म प्रेम को सदा बनाए रखना''*** गीतिका प्रस्तुत करते हुए फरमाया कि आचार्य भगवन् ने उदयपुर में लगभग 10 माह तक धर्म की पावन गंगा बहाई। गुरु आज्ञा में चलने वाला ही सच्चा भक्त है। धर्म में निरन्तरता सदैव बनी रहे।

स्थानीय संघ अध्यक्षजी सहित अनेक जनों ने क्षमायाचना का प्रसंग उपस्थित करते हुए उदयपुर संघ पर कृपादृष्टि बनाए रखने का निवेदन किया। अलौकिक पुरुष के दिव्यगुणों से प्रेरणा लेने का निवेदन महेश नाहटा ने किया। दोपहर में आगम वांचनी, ज्ञानचर्चा आदि कार्यक्रम हुए। समता युवा संघ, उदयपुर के सदस्यों ने ***''भगवन् मत जाना''*** विदाई गीत प्रस्तुत कर जनता को भाव-विह्वल कर दिया। संघ मंत्री ने सभी इकाइयों की ओर से क्षमायाचना करते हुए पुनः उदयपुर पधारने की भावभरी विनती प्रस्तुत की। दिनभर गुरुभक्तों का तांता लगा रहा।

उदयपुर से ऐतिहासिक विदाई

17 अप्रैल। महावीर भवन, सुन्दरवास में प्रातःकालीन मंगलमय प्रार्थना एवं आचार्य भगवन् द्वारा मंगलपाठ श्रवण करवाने के पश्चात् आपश्रीजी ने अपनी धवल सेना सहित जैसे ही विहार हेतु कदम बढ़ाए तो सैंकड़ों की संख्या में श्रद्धालु भाई-बहिन विदाई के लिए उमड़ पड़े। गुरुभक्तों ने नम आँखों से अपने आराध्यदेव को पुनरागमन के लिए विदाई दी। लगभग 300 दिन उदयपुर परिक्षेत्र में विचरण, ऐतिहासिक चातुर्मास में धर्म-ध्यान, त्याग-तप, ज्ञानाराधना, दीक्षा, शिविर आदि अनेकानेक आयोजन के पश्चात् आराध्यदेव के विहार में श्रद्धा-भक्ति सहित जनसैलाब उमड़ पड़ा। ***''जाते-जाते भूल न जाना, लौटकर वापिस जल्दी आना''***, ***''भक्तों के भगवान की, जय बोलो गुरु राम की''***, ***''जिनशासन के वरदान की, जय बोलो गुरु राम की''***, ***''नाना गुरु ने क्या दिया, राम दिया भई राम दिया''*** आदि गगनभेदी नारों से सम्पूर्ण माहौल भक्तिमय बन गया। बच्चे, युवा, प्रौढ़, महिलाएँ सभी उपस्थित जन अपलक नयनों से अपने आराध्यदेव को निहार रहे थे।

नाकोड़ा नगर में हेमन्तजी नंदावत के निवास पर जय-जयकारों के साथ आचार्य प्रवर सहित सहवर्ती चारित्रात्माओं का मंगल प्रवेश हुआ। धर्मसभा में श्री हर्षितमुनिजी म.सा. ने फरमाया कि श्रद्धापूर्वक धर्म-क्रिया करने के साथ अनुशासन भी जरूरी है। विधिपूर्वक धर्म-क्रिया करने से उसका लाभ मिलता है। कोई भी कार्य विधि एवं अनुशासन से करना चाहिए। सामायिक हो, प्रतिक्रमण हो या अन्य कोई भी धार्मिक क्रिया हो, विधि के साथ करें। सामायिक की साधु जीवन में ही नहीं अपितु श्रावक जीवन में भी महत्ता है। हम शान्ति एवं समाधि की

कामना करते हैं, पर अन्दर से साधना की चाह नहीं है। गुरुदेव के दर्शन के बाद जीवन में परिवर्तन होना चाहिए। आप खुद को सुधारेंगे तो बच्चों के जीवन में भी सुधार आएगा। प्रातः 7 बजे बाद भी बिस्तर पर पड़े रहेंगे तो बच्चों सहित परिवार के अन्य सदस्य भी बिस्तर नहीं छोड़ेंगे। सुबह का समय सामायिक, स्वाध्याय, साधना, नवकार जाप, सामूहिक प्रार्थना के लिए निश्चित होना चाहिए, तभी जीवन में निश्चित रूप से परिवर्तन आएगा।

श्री इभ्यमुनिजी म.सा. ने देव, गुरु, धर्म पर अटूट श्रद्धा रखने की प्रेरणा दी।

शासन दीपिका साध्वी श्री सुरुचिश्रीजी म.सा. आदि साध्वीवृंद सभा में सुशोभित थे। सभी सम्प्रदाय के लोगों ने दर्शन, प्रवचन का लाभ लिया। 15 मिनट सत्साहित्य पठन, स्वाध्याय करने, माह में एक दिन मोबाईल त्याग, 12 एकासन, 12 आयंबिल, 12 उपवास, 12 पोरसी, 1 घण्टा मौन आदि नियम कई लोगों ने लिये।

परम गुरुभक्त दिलीपजी भण्डारी, बोहेड़ा के निधन पर उनके परिजनों ने गुरुचरणों में उपस्थित होकर आध्यात्मिक शांति एवं सन्देश प्राप्त किया। दोपहर में श्री हर्षितमुनिजी म.सा. ने समाचारी व तत्त्वज्ञान का बोध कराया। भीण्डर, कुंथवास, बम्बोरा संघ ने क्षेत्र स्पर्शने की विनती गुरुचरणों में प्रस्तुत की।

शासन दीपक श्री आदित्यमुनिजी म.सा. आदि ठाणा-2 बलवन्तसिंहजी बोरदिया के आवास, भूपालपुरा में एवं शासन दीपक श्री नीरजमुनिजी म.सा. आदि ठाणा-3 आचार्य श्री नानेश ध्यान केन्द्र में सुखे-समाधे विराजमान हैं एवं धर्म की अद्‌भुत प्रभावना कर रहे हैं।

18 अप्रैल। हेमन्तजी नंदावत के निवास, नाकोड़ा नगर में प्रातःकालीन सामूहिक प्रार्थना के पश्चात् आचार्य भगवन् ने असीम कृपा करके मंगलपाठ प्रदान किया। यहाँ से विहार कर आचार्य भगवन् का जय-जयकारों के साथ श्री वर्धमान स्थानकवासी जैन भवन, देबारी में मंगल प्रवेश हुआ। सभी सम्प्रदाय के श्रावक-श्राविकाओं ने अगवानी की। धर्मसभा को सम्बोधित करते हुए श्री हर्षितमुनिजी म.सा. ने फरमाया कि जिसकी विवेक, बुद्धि जागृत हो जाए वह दुनिया में सबसे बड़ा है। धन-दौलत, मान-सम्मान आदि संसार की अन्य वस्तुओं में एवं काम-भोगों में सच्चा सुख नही है। सच्चा सुख त्याग में, संयम में, आत्म-स्वरूप में है। हर छोटी-बड़ी परिस्थितियों में हम समभाव का परिचय दें। सम्पूर्ण साधना का सार समभाव है। भोजन पर कोई प्रतिक्रिया नहीं करने का प्रयोग एक सप्ताह के लिए अवश्य करें।

श्री इभ्यमुनिजी म.सा. ने फरमाया कि मनुष्य जन्म अत्यन्त दुर्लभता से प्राप्त हुआ है। इसे व्यर्थ बातों में, चर्चाओं में बर्बाद नहीं करना है, अपितु सामायिक, स्वाध्याय व साधना में जीवन को लगाना है।

शासन दीपिका साध्वी श्री सुरुचिश्रीजी म.सा. आदि साध्वी मण्डल सभा में विराजमान थे। महेश नाहटा ने दिव्य महापुरुषों से प्रेरणा लेने का निवेदन किया। कई व्यक्तियों ने नवकार महामंत्र की माला फेरे बिना मुँह में पानी नहीं डालने एवं धर्मस्थानक में प्रतिदिन आने का संकल्प लिया।

दोपहर में श्री हर्षितमुनिजी म.सा. द्वारा साधु समाचारी एवं तत्त्वबोध व प्रश्नोत्तरी आदि करवाए गए। मावली के विधायक धर्मनारायणजी जोशी ने गुरुदर्शन, सेवा का लाभ लेकर अनेक विषयों पर चर्चा की।

19 अप्रैल। देबारी जैन स्थानक में मंगलमय प्रातःकालीन प्रार्थना एवं आचार्य भगवन् के श्रीमुख से जनता ने मंगलपाठ ग्रहण किया। यहाँ से आचार्य भगवन् का अपने शिष्यों सहित आर्ची गैलेक्सी पॉवर हाऊस में जय-जयकारों के साथ मंगल प्रवेश हुआ। धर्मसभा को सम्बोधित करते हुए श्री हर्षितमुनिजी म.सा. ने फरमाया कि हम

घर, परिवार, संघ-समाज में कहीं भी रहें, पर शांति एवं प्रेम से रहें। जिनशासन हमें सही जीवन जीना सिखाता है। हम स्वयं खुश रहना और परिवार को सुखी रखना सीखें। प्रतिदिन 15 मिनट का समय हम अपने लिए निकालें। किसी के प्रति बुरा बर्ताव ही नहीं अपितु बुरा भाव भी न सोचें। कोई हमारा बुरा करे तो उसके प्रति भी अच्छी भावना रखें। शांतचित्त में ही अच्छे विचार आते हैं। आलस्य शारीरिक बीमारियों का जड़ है।

श्री इभ्यमुनिजी म.सा. ने आगार धर्म व अणगार धर्म की व्याख्या के पश्चात् फरमाया कि राम गुरु की शरण में आने वाले का कल्याण निश्चित है। विभिन्न त्याग-प्रत्याख्यान हुए। घर में रहते हुए प्रतिदिन कम से कम एक गिलास धोवन पानी पीने का नियम अनेक जनों ने लिया।

दोपहर में श्री हर्षितमुनिजी म.सा. ने तत्त्वज्ञान का बोध कराते हुए जिज्ञासाओं का समाधान किया।

भूपालपुरा में शासन दीपक श्री आदित्यमुनिजी म.सा. ने फरमाया कि आठ कर्मों में से मोहनीय कर्म खतरनाक है। कर्मों की सेना बड़ी है, पर आत्मा के पास उससे भी ज्यादा बड़ी सेना है। समता को धारण करेंगे तो कर्मों को जीत सकते हैं। तपस्या, ज्ञान, आचरण व क्रिया का फल समाधि है। समाधि प्राप्त कर ली तो सब कुछ प्राप्त कर लिया। श्री अटलमुनिजी म.सा. ने प्रेरक उद्‌बोधन दिया।

आचार्य श्री नानेश ध्यान केन्द्र में शासन दीपक श्री नीरजमुनिजी म.सा. आदि ठाणा-3 के पावन सान्निध्य में धर्माराधना हो रही है। रात्रि में भजन संध्या आयोजित हुई, जिसमें गुरुभक्तों ने सुन्दर भक्ति प्रस्तुति देकर सबको गुरु समर्पण भावों से भर दिया।

शासन दीपिका साध्वी श्री सुशीलाकँवरजी म.सा. (उदयपुर वाले) आदि साध्वीवर्याएँ उदयपुर के उपनगरों में जिनशासन की अद्‌भुत प्रभावना कर रहे हैं।

20 अप्रैल, आर्ची गैलेक्सी, देबारी पॉवर हाऊस। सामूहिक प्रार्थना पश्चात् तरुण तपस्वी आचार्य भगवन् ने मंगलपाठ प्रदान किया। तत्पश्चात् आचार्य भगवन् आदि ठाणा-4 का यहाँ से गीतांजलि इंस्टीट्यूट, डबोक में जय-जयकारों के साथ मंगल पदार्पण हुआ। ओसवाल पंचायत नोहरा में धर्मसभा को संबोधित करते हुए शासन दीपिका साध्वी श्री चंचलकँवरजी म.सा. ने फरमाया कि अनंत पुण्यवानी से जिनेश्वर भगवान की वाणी सुनने को मिलती है। जिनवाणी का अवलम्बन लेकर साधना में आगे बढ़ सकते हैं। अपनी आत्मा का हमें दमन करना चाहिए। दूसरों की गलती देखने से पहले अपनी गलती की ओर देखना चाहिए। क्रोध भयानक शत्रु है। इसने हमारा बहुत नुकसान किया है। क्षमा का शस्त्र लेकर क्रोध को जीतना चाहिए।

साध्वी श्री सुनिधिश्रीजी म.सा. ने फरमाया कि जो सत्य के मार्ग पर चलता है, वह भयभीत नहीं होता। इस अवसर पर विभिन्न त्याग-प्रत्याख्यान हुए।

दोपहर में गीतांजलि इंस्टीट्यूट, डबोक में श्री हर्षितमुनिजी म.सा. के सान्निध्य में जिज्ञासा समाधान कार्यक्रम हुआ, जिसमें मुनिश्री ने नवकार महामंत्र के पाँच पदों की हृदयस्पर्शी व्याख्या में फरमाया कि

अरिहंत पद में शक्ति सम्पन्न आत्मा को नमस्कार,

सिद्ध पद में अशरीरी आत्मा को नमस्कार,

तृतीय पद में सम्यक् निर्णय क्षमता सम्पन्न आचार्य को नमस्कार,

उपाध्याय पद में सम्यक् ज्ञान सम्पन्न को नमस्कार एवं

साधु पद में हर परिस्थिति में समभाव रखने वाले आनंद सम्पन्न साधु-साध्वी को नमस्कार किया गया है।

कई भाई-बहिनों ने अर्थ सहित 11 नवकार महामंत्र स्मरण करने का नियम लिया। मुनिश्री ने एक प्रश्न के उत्तर में श्रावक दिनचर्या का विस्तार से उल्लेख किया। पूर्व राष्ट्रीय अध्यक्षजी ने मंगलवाड़ क्षेत्र स्पर्शने एवं विभिन्न प्रसंगों की भावभरी विनती श्रीचरणों में प्रस्तुत की।

21 अप्रैल। गीतांजलि इंस्टीट्यूट, डबोक में प्रातःकालीन सामूहिक प्रार्थना की गई। तत्पश्चात् आचार्य भगवन् ने मंगलपाठ फरमाया। यहाँ से विहार कर आचार्य भगवन् आदि ठाणा-4 का डबोक जैन स्थानक में गगनभेदी जय-जयकारों के साथ मंगलमय पदार्पण हुआ।

शासन दीपक श्री नीरजमुनिजी म.सा. आदि ठाणा-3 नाकोड़ा नगर से देबारी होते हुए डबोक पधारे। शासन दीपिका साध्वी श्री विनयश्रीजी म.सा. आदि ठाणा-4 का आर्ची गैलेक्सी से डबोक पधारना हुआ।

वर्धमान जैन स्थानक में विशाल धर्मसभा को संबोधित करते हुए श्री हर्षितमुनिजी म.सा. ने फरमाया कि हमारी नीति-नियत साफ होनी चाहिए। अंदर चल रही गलत सोच गलत कार्य की ओर ले जाती है। अगर कुछ भी हमारा बुरा हो रहा है तो निश्चित रूप से कुछ न कुछ बुरा चल रहा है। हमारा अंतर पवित्र है तो शांति, समाधि और प्रसन्नता हमारे से दूर नहीं है। जिस श्रद्धा के साथ कार्य प्रारंभ किया जाता है, वही उत्साह अंत तक बना रहना चाहिए। अपना सुधार करने हेतु अपने वचन प्रयोग पर हमें ध्यान देना चाहिए। किसी भी व्यक्ति को अपशब्द नहीं बोलने चाहिए।

संघ अध्यक्षजी ने आचार्य भगवन् के आगमन पर अक्षय तृतीया का पावन प्रसंग प्रदान करने की विनती प्रस्तुत की। कई भाई-बहिनों ने 12 उपवास, 12 एकासन, 12 आयंबिल करने का नियम लिया। जैन-जैनेतर सभी सम्प्रदाय के भाई-बहिनों ने पावन सान्निध्य का लाभ लिया। दोपहर में साध्वी श्री सुरुचिश्रीजी म.सा. ने चौदह नियम की विस्तृत व्याख्या की।

22 अप्रैल, वर्धमान जैन भवन, डबोक। धर्मसभा को संबोधित करते हुए श्री इभ्यमुनिजी म.सा. ने फरमाया कि जिनवाणी का एक शब्द भी अगर हम सुनेंगे तो हमारा कल्याण हो जाएगा। क्रोध, मान, माया, घमण्ड के कारण सुनी हुई जिनवाणी सफल नहीं होती।

श्री हर्षितमुनिजी म.सा. ने फरमाया कि मनुष्य जन्म, धर्म का श्रवण, धर्म पर श्रद्धा और संयम में पराक्रम ये चार दुर्लभ अंग बताए गए हैं। इसमें धर्म पर श्रद्धा तो परम दुर्लभ है। देव, गुरु, धर्म के प्रति आस्था होना बहुत दुर्लभ है। भक्ति भक्त को भगवान बना देती है, पर उस भक्ति को भीतर में सम्पन्न रूप से धारण करने वाला हो। सम्यक् ज्ञान, सम्यक् दर्शन, सम्यक् चारित्र मोक्ष का मार्ग हैं। किसी व्यक्ति के पास श्रद्धा भरपूर है किन्तु चारित्र नहीं है, वह व्यक्ति अपनी मंजिल को प्राप्त नहीं कर सकता। डांवाडोल होने वाले व्यक्ति का विकास रुक जाता है। अनुकूल हो या प्रतिकूल दोनों अवस्थाओं में हमारी श्रद्धा अविच्छिन्न होनी चाहिए।

शासन दीपिका साध्वी श्री चंचलकँवरजी म.सा., साध्वी श्री वन्दनाश्रीजी म.सा., साध्वी श्री विनयश्रीजी म.सा., साध्वी श्री सुप्रतिभाश्रीजी म.सा., साध्वी श्री सुरुचिश्रीजी म.सा. आदि साध्वीवर्याएँ सभा में शोभायमान

थे। विभिन्न त्याग-प्रत्याख्यान हुए। संघ अध्यक्षजी ने आचार्यदेव के श्रीचरणों में अधिकाधिक विराजने की विनती की। दोपहर में आचार्य भगवन् के सान्निध्य में आगम वांचनी, ज्ञानचर्चा, प्रश्नोत्तरी आदि कार्यक्रम हुए।

सुपात्रदान की महिमा अपरंपार

23 अप्रैल, डबोक। रविवारीय समता शाखा में सभी गुरुभक्तों ने उत्साहपूर्वक भाग लिया। तत्पश्चात् आचार्य भगवन् ने मंगलपाठ के माध्यम से महती कृपा बरसायी। धर्मसभा को संबोधित करते हुए परम प्रतापी प्रशान्तमना आचार्य भगवन् ने अपनी दिव्यदेशना में फरमाया- ''दान की अक्षय धारा आज के दिन प्रवाहित हुई। मान्यताएँ भिन्न हो सकती हैं। मुक्ति में जाने का सरल उपाय सुपात्रदान है। अनेक आत्माओं ने सुपात्रदान देकर मोक्ष प्राप्त कर कल्याण का मार्ग प्रशस्त किया। इसमें 42 दोष टाले जाते हैं। साधु के लिए बनाया गया आहार साधु को नहीं कल्पता है। ऋषभदेव प्रथम राजा बने, मुनि बने। भगवान के साथ लोगों ने साधु जीवन स्वीकार कर लिया। प्रीतिवश अनेक राजकुमारों ने दीक्षा ली। भगवान ऋषभदेव धैर्यशाली थे। बिना धैर्य के साधना सधती नहीं है। विचारक स्वेट मार्डन कहते हैं कि आपके पास धैर्य है तो सफलता आपको निश्चित मिलेगी। ऋषभदेव भगवान ने भिक्षा हेतु 400 दिन तक धैर्य रखा। यह कितनी बड़ी बात है। उन्होंने धैर्य नहीं छोड़ा।

धीरज, धर्म, मित्र और नारी, आयत काल परखिये चारी।

धैर्य जहाँ रहेगा वहाँ शांति रहेगी। आज अधिकांश लोग अशांति में जी रहे हैं। जितना अधीर होते हैं, उतना अशांत होते हैं। धर्म केवल स्थानक में नहीं अपितु हर जगह, हर समय होना चाहिये। मनुष्य की पहचान तीन जगह होती है- पहला घर में, दूसरा ऑफिस में, तीसरा मार्केट में, जहाँ पता चलता है कि आपका व्यवहार कैसा है? वचन का पक्का है या नहीं? धर्म एवं सत्य पर डट जाना वीरों का काम है। सत्य के साथ जीना सीखें। ऋषभदेव प्रभु को एक वर्ष बाद आहार मिला, फिर भी उन्होंने धैर्य धारण किया। दान देने वालों की भावना अच्छी होनी चाहिये। श्रेयांसकुमार के हाथों से भगवान का पारणा हुआ। किसी भी कार्य की सफलता के लिए निरंतर अभ्यास की जरूरत है। धैर्य की सीमा नहीं होती है।''

आचार्यदेव ने जैसे ही ''***सुपात्रदान की महिमा होती है तीन लोक में***'' भाव गीतिका प्रस्तुत की सम्पूर्ण सभा भावविभोर हो गई।

श्री इभ्यमुनिजी म.सा. ने अक्षय तृतीया के महत्त्व पर प्रकाश डालते हुए दान, शील, तप भावना को जीवन में निरंतर आगे बढ़ाने की प्रेरणा दी। शासन दीपिका साध्वी श्री चंचलकँवरजी म.सा., साध्वी श्री वंदनाश्रीजी म.सा., साध्वी श्री ललिताश्रीजी म.सा., साध्वी श्री विनयश्रीजी म.सा., साध्वी श्री सुप्रतिभाश्रीजी म.सा. आदि साध्वी मण्डल ने ''***जिनशासन के हुक्मसंघ के तुम तो राजा हो गुरुवर***'' गीतिका प्रस्तुत की। संघ अध्यक्षजी ने अहोभाव व्यक्त किये। रसोईघर एवं भोजनशाला में गुस्सा नहीं करने का संकल्प कई भाई-बहिनों ने लिया। अन्य कई त्याग-प्रत्याख्यान हुए। दर्शनार्थियों एवं तपस्वियों का तांता लगा रहा।

24 अप्रैल, दरोली। परमागम रहस्यज्ञाता आचार्य भगवन् का शिष्य मण्डली सहित जय-जयकारों के साथ डबोक से विहार कर दरोली में मंगल प्रवेश हुआ। जैन स्थानक में आयोजित धर्मसभा को संबोधित करते हुए श्री हर्षितमुनिजी म.सा. ने फरमाया कि जैसे-जैसे लाभ होता है वैसे-वैसे लोभ बढ़ता है। व्यक्ति की पुण्यवानी के

कारण लाभ बढ़ता है। पुण्यवानी नहीं है तो लोभ बढ़ते जाना है। अकारण ही मनोकामना जागृत हो जाती है। लाभ-अलाभ में समभाव रखना चाहिए। मान-सम्मान, अपमान, सुख-दुःख हर परिस्थिति में समभाव रहे, लेकिन हमें खुराफात एवं मौज-शौक करने में आनंद आता है।

श्री इभ्यमुनिजी म.सा. ने फरमाया कि त्याग-नियम, प्रत्याख्यान-व्रत धारण करने से कल्याण निश्चित होता है। स्थानीय सुश्रावकों ने आचार्य भगवन् के आगमन को पुण्यवानी का उदय बताते हुए आचार्यदेव से अधिकाधिक विराजने की विनती की। गाँव में रहते हुए प्रतिदिन एक बार धर्मस्थानक में जाने का संकल्प कई भाई-बहिनों ने लिया। स्थानीय संघ की सेवा-भक्ति सराहनीय रही।

25 अप्रैल। प्रातःकालीन मंगलमय प्रार्थना के पश्चात् सिरीवाल प्रतिबोधक आचार्य भगवन् ने असीम कृपा करके मंगलपाठ फरमाया। धर्मसभा को संबोधित करते हुए श्री हर्षितमुनिजी म.सा. ने फरमाया कि हमारा व्यवहार अगर शालीन है तो हर जगह हमें सम्मान मिलेगा। मैंने अगर किसी का बुरा किया है तो मेरा बुरा होना निश्चित है। किसी का अच्छा किया तो उसका परिणाम भी अच्छा और शीघ्र मिलेगा। धर्मचर्चा का विषय नहीं, चर्या का विषय होना चाहिए। हमारा आचार-विचार शुद्ध होना चाहिए। हम अपने जीवन/मन को साध लेवें। हमारी दिनचर्या व्यवस्थित होनी चाहिए। सुबह का समय साधना के लिए निश्चित होना चाहिए। सामायिक, स्वाध्याय, ध्यान, आत्मचिंतन दिन की शुरूआत में करें। 60 वर्ष के बाद माता-पिता को निवृत्ति मार्ग पर आगे बढ़ना चाहिए। बच्चों के कार्यों में ज्यादा टोका-टोकी ना करें।

शासन दीपिका साध्वी श्री विनयश्रीजी म.सा. आदि ठाणा सभा में सुशोभित थे। सभा में उपस्थित कुछ भाइयों ने 70 वर्ष पश्चात् व्यापार से निवृत्ति लेने, नवकार महामंत्र की एक माला फेरने के पश्चात् ही आहार-पानी ग्रहण करने का संकल्प लिया। चिकारड़ा, निम्बाहेड़ा संघ ने चातुर्मास व दीक्षा प्रसंग की विनती आचार्य भगवन् के श्रीचरणों में प्रस्तुत की। दोपहर में आचार्य भगवन् के पावन सान्निध्य में आगम वांचनी, ज्ञानचर्चा, प्रश्नोत्तरी, जिज्ञासा समाधान आदि कार्यक्रम हुए। बाहर से दर्शनार्थियों का आवागमन जारी रहा। नीमच संघ ने शीघ्र पधारने की विनती की।

26 अप्रैल, भटेवर। दिव्य साधक आचार्य भगवन् आदि ठाणा का जय-जयकार के उद्घोष के मध्य भटेवर में महावीरजी धाकड़ के निवास स्थान में मंगलमय प्रवेश हुआ। लादुलालजी जैन के निवास स्थान पर आयोजित धर्मसभा में आचार्य भगवन् ने अपनी दिव्यदेशना में फरमाया कि **'''धम्मो सुद्धस्स चिट्ठई' अर्थात् धर्म शुद्ध व सरल हृदय में ठहरता है। छल-कपट, माया-अहंकार से जीवन धर्म से दूर हो जाता है। हमें दूसरों की बुराई नहीं, अच्छाई देखनी है। ना किसी की निंदा करनी है और ना ही सुननी है। हमारे लिए कौन क्या बोल रहा है, ये चिंता नहीं करके श्रेष्ठ कार्य का संपादन करते रहना चाहिए। जो कार्य करें उसमें तल्लीन हो जाएँ। इससे शक्ति उत्पन्न होती है। यतना से चलें, यतना से बैठें, यतना से सोएँ, यतना से भोजन करें, यतना से बोलें तो पाप कर्म नहीं बंधेंगे। यतना को धर्म का प्राण कहा गया है।''**

आचार्य भगवन् ने असीम कृपा करके मंगलपाठ श्रवण करवाये। गाड़ी चलाते व भोजन करते समय मोबाईल का उपयोग नहीं करने का संकल्प कई भाई-बहिनों ने लिया। अन्य अनेक त्याग-प्रत्याख्यान हुए।

दरोली से भटेवर मार्ग पर शांत-क्रांत संघ के संत श्री नवीनप्रज्ञजी म.सा. आदि ठाणा-5 ने आचार्य भगवन् के पावन दर्शन कर वंदन-सेवा का लाभ लिया।

आसक्ति सबसे बड़ा पाप

27 अप्रैल, खेरोदा। परम श्रद्धेय आचार्य प्रवर 1008 श्री रामलालजी म.सा. आदि ठाणा का भटेवर से खेरोदा की ओर विहार हुआ। मार्ग के दोनों ओर श्रद्धालुओं ने दर्शन-वंदन का लाभ लिया। शासन दीपक श्री नीरजमुनिजी म.सा. आदि ठाणा-3 ने 2 किमी. सामने पधारकर आराध्यदेव की अगवानी की। धर्मसभा को संबोधित करते हुए श्री हर्षितमुनिजी म.सा. ने फरमाया कि सुखी जीवन जीने के लिए किसी पद, वस्तु, पदार्थ, व्यक्ति से जुड़ाव न करें। ये जुड़ाव हमें गहरा दुःख देने वाला बनेगा। सभी संयोग, रति, प्रशंसा, अपेक्षा से मन को हर्षित ना होने दें, क्योंकि इसकी परिणति अवश्य ही दुःख-विषाद को उत्पन्न करने वाली है। अनुकूलता में अहं का पोषण ही नहीं होने देंगे तो प्रतिकूलता में दुःख उत्पन्न नहीं होगा। चंचलता हमें गंभीर ज्ञानी बनने से रोकती है। सुखी बनने के लिए किसी भी स्थिति में त्याग करने की तत्परता होनी चाहिए। आसक्ति में ना फँसें। आसक्ति सबसे बड़ा पाप है। एक बार किसी संत के मुँह से आचार्य भगवन् के आसन के लिए 'बहुत अनुकूल है' ऐसा वाक्य निकल गया। गुरुदेव ने तत्काल ऐसा मानकर कि इसकी जरूरत इन संत को है, अपना वो आसन उन्हें प्रदान कर दिया। जबकि उस प्रकार के साताकारी आसन का पुनः शीघ्र मिलना संभव नहीं था। इससे सिद्ध है कि आचार्य भगवन् का किसी भी चीज से किंचित् मात्र भी जुड़ाव नहीं था।

माह में एक दिन मोबाईल का त्याग कई जनों ने ग्रहण किया। परम गुरुभक्त गिरिशजी चावला, इंग्लैंड, वीर पिता देवेन्द्रजी सेठिया, विराटनगर (नेपाल) सहित अनेक स्थानों के श्रद्धालुओं ने गुरुदर्शन, सेवा का लाभ लिया। दोपहर में श्री गगनमुनिजी म.सा. ने ज्ञान के भेदों की विस्तृत व्याख्या की एवं जिज्ञासाओं का समाधान किया।

28 अप्रैल, वर्धमान जैन स्थानक, खेरोदा। प्रातः शुभ बेला में मंगलमय प्रार्थना के पश्चात् परम श्रद्धेय आचार्य प्रवर ने मंगलपाठ फरमाकर उपस्थित भक्तों पर अपूर्व कृपा बरसायी। धर्मसभा को संबोधित करते हुए श्री हर्षितमुनिजी म.सा. ने फरमाया कि मोक्ष का मूल्य विनय है। वर्तमान में अहंकार के कारण समस्या होती है। भाई-भाई का प्रेम बंट रहा है। बड़ा भाई छोटे भाई को पूछता नहीं है। बच्चों के झगड़े में बड़े आपस में लड़ पड़ते हैं। कभी दूसरों से तुलना ना करें। अहंकार के कारण परिवार व समाज से दूरियाँ बन रही हैं। असली सम्पत्ति वह है जो सम्पत्त करवाए। कोई भी काम नाम के लिए नहीं करें। अपने नाम की चिंता किये बिना बस काम होना चाहिए। अपनी वाणी, व्यवहार से अहंकार को दूर रखें।

श्री इभ्यमुनिजी म.सा. ने फरमाया कि हर परिस्थिति में समभाव रखें। अच्छे कार्यों में सदैव आगे रहें।

घर में रहते हुए धोवन पानी पीने एवं टी.वी. देखते हुए सब्जी नहीं सुधारने का संकल्प कई भाई-बहिनों ने लिया। दोपहर में श्री मयंकमुनिजी म.सा. ने तत्त्वज्ञान का बोध करवाया। छत्तीसगढ़ शासन के पूर्व संसदीय सचिव परम गुरुभक्त लाभचंदजी बाफना ने गुरुदर्शन-सेवा का लाभ लिया।

29 अप्रैल। प्रातः मंगलमय प्रार्थना श्री गगनमुनिजी म.सा. ने करवायी। परमाराध्य आचार्य प्रवर 1008 श्री रामलालजी म.सा. ने धर्मसभा को संबोधित करते हुए फरमाया कि **''दूसरे जिनेश्वर श्री अजितनाथ**

भगवान के पथ को मैं देखूँ। भगवान अजितनाथजी का पथ या मार्ग हमें विजय दिलाने वाला है। जहाँ जाने के बाद हमारे भीतर कोई शत्रुता नहीं रहती, सारे शत्रुओं का नाश हो जाता है। जब नयन जागृत हो जाते हैं तब मार्ग प्रशस्त हो जाता है। हमने अपने सौभाग्य का लाभ नहीं उठाया। देव, गुरु, धर्म मिला, पर हमें उसकी कीमत नहीं है। जिनेश्वर देव का मार्ग वीतरागता का मार्ग है। हमने राग-द्वेष जीतने के लिए कितना पुरुषार्थ किया। सम्यक् ज्ञान, दर्शन, चारित्र ये तीन रत्नत्रय हैं। जैसे तीन दिन के भूखे व्यक्ति को खाने की तीव्र लालसा होती है, वैसे ही सम्यक्दृष्टि जीव वीतराग प्रभु की वाणी सुनने के लिए हर पल, हर समय लालायित रहता है। मेहनत के बिना अगर कोई चीज मिलती है तो हमें उसकी कीमती नहीं होती और जो चीज मेहनत से मिलती है उसकी कीमत अधिक होती है। मेहनत से मिली वस्तु का महत्त्व ज्यादा होता है। जिनेश्वर देव का मार्ग कल्याण का मार्ग है। नवकार महामंत्र की महिमा अपरम्पार है। सदैव श्रद्धा, भक्ति भाव के साथ नवकार महामंत्र का स्मरण करें।''

श्री इभ्यमुनिजी म.सा. ने सामायिक, स्वाध्याय करने की प्रेरणा दी। शासन दीपिका साध्वी श्री चंचलकँवरजी म.सा., साध्वी श्री सुप्रतिभाश्रीजी म.सा. आदि साध्वीवर्याओं ने ''*गुरुवर पधारो हृदय में विराजो, यही कामना है*'' गुरुभक्ति गीत प्रस्तुत किया। प्रतिदिन 10 मिनट नवकार महामंत्र जाप करने का नियम कई भाई-बहिनों ने लिया।

परम गुरुभक्त, समाजसेवी श्री हरिसिंहजी रांका, मुम्बई के निधन पर पारिवारिकजनों ने गुरुचरणों में आध्यात्मिक शान्ति व संदेश प्राप्त किया। खेरोदा संघ की ओर से स्थानीय गुरुभक्तों ने अधिकाधिक विराजने की विनती गुरुचरणों में समर्पित की। दोपहर में आचार्य भगवन् के पावन सान्निध्य में आगम वांचनी, ज्ञानचर्चा आदि हुए। श्रावक-श्राविकाओं को श्री हर्षितमुनिजी म.सा. ने तत्त्वज्ञान का बोध कराया। खेरोदा संघ की धर्मनिष्ठा, सेवाभक्ति सराहनीय रही।

30 अप्रैल। प्रातःकालीन रविवारीय समता शाखा में भाई-बहिनों ने उत्साहपूर्वक भाग लिया। आचार्य भगवन् आदि ठाणा का अमरपुरा से कुँथवास महावीर भवन में गगनभेदी जय-जयकारों के साथ मंगल प्रवेश हुआ। आज ही बहुश्रुत, वाचनाचार्य उपाध्याय प्रवर श्रद्धेय श्री राजेशमुनिजी म.सा. आदि ठाणा-4 का भी मंगल पदार्पण हुआ।

धर्मसभा को संबोधित करते हुए श्री नीरजमुनिजी म.सा. ने फरमाया कि सत्कर्म करो, क्योंकि सत्कर्म सदा शुभ फल देता है। सत्कर्म सब संकट दूर हटाकर जीवन खुशियों से भर देता है। हर व्यक्ति कोई न कोई प्रयोजन, उद्देश्य से ही कार्य करता है। कार्य करने से पूर्व व्यक्ति का प्रयोजन स्पष्ट होना चाहिए। हमारे जीवन का वास्तविक उद्देश्य स्पष्ट होना चाहिए। हमारा उद्देश्य इतना बड़ा होना चाहिए कि उसके सामने कोई दूसरा प्रयोजन नहीं हो। हमारा प्रयोजन निश्चित हो जाए कि मुझे मोक्ष जाना है। तीर्थंकर भगवान की वाणी एकदम यथार्थ सत्य है। जिज्ञासा होना गलत नहीं है, लेकिन शंका का मलिन भाव गलत है। साध्वी श्री ताराकँवरजी म.सा. फरमाते थे कि गुरु आज्ञा शिरोधार्य नहीं चरणोधार्य होनी चाहिए। ज्ञान, दर्शन, चारित्र तीनों का सामंजस्य होगा तो ही मोक्ष मिल सकता है। निरन्तरता बहुत जरूरी है।

श्री हर्षितमुनिजी म.सा. ने फरमाया कि पानी की कीमत प्यासा व्यक्ति ही जानता है। औषध की कीमत रोगी ही जानता है। वैसे ही हमारी जिज्ञासा आत्म-साधना की होनी चाहिए। गौतम स्वामी भगवान की वाणी को एकदम सरल होकर बच्चे की तरह सुनते थे। जितना पढ़ेंगे उतना उलझेंगे। जितना उलझेंगे उतना सुलझेंगे। आध्यात्मिक क्षेत्र में बीमारी को विश्लेषित करने से आधी बीमारी तो वैसे ही ठीक हो जाती है। अपना ईलाज अपने को ही करना पड़ता है। व्यक्ति स्वयं पर ध्यान देने लग जाए तो स्वतः विकास हो जाता है। हर व्यक्ति की आत्मा इस संसार से मुक्त हो जाएगी।

जैन-जैनेतर सभी ने आचार्य भगवन् के पावन सान्निध्य का लाभ उठाया। विभिन्न त्याग-प्रत्याख्यान हुए। दोपहर में महापुरुषों के पावन सान्निध्य में आगम वांचनी, ज्ञानचर्चा, प्रश्नोत्तरी आदि हुए। पूरे मेवाड़ क्षेत्र में धर्म की पावन गंगा प्रवाहित हो रही है।

तपस्या सूची	
आजीवन शीलव्रत	ममताजी राजेशजी बरड़िया-सिलचर, अनिताजी भण्डारी-बोहेड़ा, मूलचन्दजी शशिकलाजी पटवा-हावड़ा, भगवतीलालजी सिंघवी, शांतिलालजी सियाल, रमेशजी पुष्पादेवी सोनी, सुरेशजी लसोड़
गाथा का स्वाध्याय	1 लाख- संजूजी कोठारी-अहमदाबाद
पोरसी	200- पवनजी गांग

-महेश नाहटा

रचनाएँ आमंत्रित

आप संघ के मुखपत्र के नियमित पाठक हैं यह हमारे लिए हर्ष का विषय है। श्रमणोपासक के धार्मिक अंक विभिन्न विषयों पर आधारित होते हैं। आगामी 15-16 जून 2023 का धार्मिक अंक 'भोजन-विवेक/धर्म-विवेक' पर आधारित रहेगा।

इसी क्रम में 15-16 जुलाई 2023 का धार्मिक अंक 'गोचरी-विवेक/धोवन पानी विवेक' विषय पर आधारित रहेगा। सम्माननीय पाठकगण अपनी रचनाएँ शीघ्रातिशीघ्र भिजवाने का लक्ष्य रखें। यदि आपके पास श्री अ.भा. साधुमार्गी जैन संघ द्वारा साधुमार्गी परिवारों को जारी M.I.D. (ग्लोबल कार्ड) नं. हो तो उसका उल्लेख अवश्य ही करें। प्राप्त मौलिक एवं सारगर्भित रचनाओं को समाहित करने का लक्ष्य रहेगा। विषय सन्दर्भित आपकी रचनाएँ- लेख, कविता, भजन, कहानी आदि **मो.: 9314055390, email : news@sadhumargi.com** पर हिन्दी व अंग्रेजी में सादर आमंत्रित हैं। उल्लेखित विषयों के अलावा भी आपकी सारगर्भित रचनाएँ भी आमंत्रित हैं।

– श्रमणोपासक टीम

उपाध्याय प्रवर के सान्निध्य में अक्षय तृतीया पारणा एवं शिविर आदि सम्पन्न

चित्तौड़गढ़। बहुश्रुत, वाचनाचार्य उपाध्याय प्रवर श्रद्धेय श्री राजेशमुनिजी म.सा. आदि ठाणा-4 का 9 अप्रैल 2023 को तप-त्याग, बलिदान की पुण्यधरा चित्तौड़गढ़ के मीरानगर सामायिक भवन में जय-जयकारों के साथ मंगल पदार्पण हुआ। आत्मकल्याण के प्रेरक उद्‌बोधन से श्रावक-श्राविकाएँ धन्य हो गये। आत्मा को साधने से जीवन में उच्च चारित्र का निर्माण कैसे होता है, यह उपाध्याय प्रवर के जीवन से सहज ही सीखा जा सकता है। ऐसे उपाध्याय को पाकर संघ धन्य हो गया।

आपश्रीजी का 12 अप्रैल को कुम्भानगर महेश भवन में पदार्पण हुआ। यहाँ एक दिन विराजने के पश्चात् अरिहन्त भवन सेंती में मंगल प्रवेश हुआ, जहाँ धर्म का अद्‌भुत ठाठ लगा रहा। सेंती से उपाध्याय प्रवर आदि ठाणा का 17 अप्रैल को आचार्य नानेश रामेश ज्ञान विद्यापीठ (समता भवन) गांधीनगर में पदार्पण हुआ। चतुर्विध संघ की उपस्थिति से समता भवन में अलग ही छटा देखने को मिली।

उपाध्याय प्रवर आदि ठाणा सहित शासन दीपिका साध्वी श्री प्रेमलताजी म.सा. आदि ठाणा, शासन दीपिका साध्वी श्री समताश्रीजी म.सा. आदि ठाणा, शासन दीपिका साध्वी श्री अर्पणाश्रीजी म.सा. आदि ठाणा, शासन दीपिका साध्वी श्री मनीषाश्रीजी म.सा. आदि ठाणा, शासन दीपिका साध्वी श्री रश्मिश्रीजी म.सा. आदि ठाणा के सान्निध्य में तपाराधन हुआ।

परम पूज्य आचार्य भगवन् की कृपा से ऐसा पुनीत क्षण चित्तौड़गढ़ संघ को मिला। उपाध्याय प्रवर के चित्तौड़गढ़ में प्रवेश के साथ ही दशवैकालिक के प्रथम अध्ययन की 5 गाथाएँ कंठस्थ करने की मानो होड़-सी लग गयी। सैंकड़ों की संख्या में संवर, संवर का तेला, शीलव्रत के प्रत्याख्यान आदि हुए।

22 अप्रैल को आचार्य श्री नानालालजी म.सा. द्वारा वर्तमान आचार्य श्री रामलालजी म.सा. को मुनिप्रवर की उपाधि प्रदान करने का ऐतिहासिक दिवस का प्रसंग उपस्थित हुआ। इसी दिन भविष्य के आचार्य की मजबूत नींव का साक्षी बना यहाँ का खातर महल।

23 अप्रैल को अक्षय तृतीया के पावन प्रसंग पर खातर महल में विशाल धर्मसभा में अनेक लोग चिलचिलाती धूप में भी खड़े होकर प्रवचन श्रवण कर रहे थे। धर्मसभा में संघ, महिला समिति एवं युवा संघ के राष्ट्रीय अध्यक्षगणों की गरिमामय उपस्थिति रही। हजारों गुरुभक्तों की उपस्थिति में 88 तप साधकों के वर्षीतप पारणों की व्यवस्था पुरुषार्थी स्कूल में रखी गई, जहाँ तपस्वियों का पारणा इक्षुरस से करवाया गया। ***''इक्षुरस से किया पारणा आखातीज महान, जय-जय आदिनाथ भगवान''*** की मधुर स्वर लहरी से सम्पूर्ण पाण्डाल गूँज रहा था। जैनेतर बहिन श्रीमती कैलाशबाई, बाड़ी ने 2 वर्षीतप ग्रहण किये। धार के 17 वर्षीय तनयजी एवं उनके पिताजी नीरजजी

(चौथा वर्षीतप) ने एक साथ वर्षीतप की आराधना की। इन्दौर की निर्मलाजी के 9वाँ वर्षीतप था।

पारणा पश्चात् उपाध्याय प्रवर का केसरबाग नई आबादी में मंगलमय प्रवेश हुआ। सभी कार्यक्रमों में संघ एवं समता परिवार के सदस्यों ने बढ़-चढ़कर भाग लिया। स्थानीय संघ अध्यक्ष एवं महामंत्री ने आभार व्यक्त किया।

बहु मण्डल का शिविर सम्पन्न

बहुश्रुत, वाचनाचार्य उपाध्याय प्रवर श्रद्धेय श्री राजेशमुनिजी म.सा. आदि ठाणा-4 के सान्निध्य में दिनांक 13 से 15 अप्रैल तक तीन दिवसीय बहुमण्डल शिविर का आयोजन हुआ, जिसमें बहुओं ने बढ़-चढ़कर भाग लिया।

शिविर में उपाध्याय प्रवर ने आत्मिक रूप से खुश रहने की ताकत को जगाते हुए दुःखी होने पर सहनशील बनने, प्रत्येक समस्या का समाधान हमारे अन्दर होने, हमारी प्रसन्नता केवल हम पर निर्भर होने, सबका हित करने, अतीत का तनाव ना लेकर वर्तमान में अच्छे भाव एवं क्रिया करने, स्वयं की तुलना दूसरों से नहीं स्वयं से कर मनोबल बढ़ाने सहित अनेक विषयों पर समझाईश देकर आत्मजागृति का स्रोत बताया।

आपश्री ने फरमाया- ''**जो हमसे हो सकता है वो करते जाओ। महिलाएँ यह सोचें कि मैं क्या कर सकती हूँ, ये सब आत्मविश्वास का खेल है। ज्ञान दोहराने से दिमाग अगले चरण की ओर बढ़ेगा। हमारे मन में हमेशा यही रहना चाहिए कि मुझे मोक्ष जाना है। आप सामान्य गृहस्थ स्त्री नहीं होकर एक श्राविका हैं। दैनिकचर्या में केवल 15 मिनट हम सिर्फ अपने आपको दें व उन 15 मिनट का उपयोग करें। हमारा विकास तभी हो सकता है जब हमारा मनोबल मजबूत हो। धीरे-धीरे हमें आध्यात्मिक जीवन को आगे बढ़ाना है। हम संघ के लिए क्या कर सकते हैं? हमें अपने संघ, देव, गुरु व धर्म के वास्तविक गुण सभी को बताने चाहिए। धर्म प्रभावना में सहयोगी बन, नाम की इच्छा से मुक्त होकर कार्य करना चाहिए। कहीं भी देव, गुरु, धर्म की निन्दा हो तो तथ्यपूर्वक उत्तर देना चाहिए।**''

शिविर के माध्यम से उपाध्याय प्रवर ने बहुमण्डल को प्रसन्न रहकर हर परिस्थिति का सामना करने की नई ऊर्जा प्रदान की। सभी बहुओं ने भ्रूणहत्या नहीं करने व न करवाने तथा वर्ष में 12 आयंबिल/एकासन करने सहित छोटे-छोटे पच्चक्खाण ग्रहण किये। शिविरार्थी बहुओं में सजगता के साथ समय से पूर्व उपस्थित होकर कुछ नया सीखने की झलक स्पष्ट दृष्टिगोचर हो रही थी। सम्पूर्ण हॉल में केसरिया वस्त्रों में बहुएँ ऐसे लग रही थी जैसे सूर्य के सामने पंक्तिबद्ध किरणें झलक रही हों।

महिलाओं हेतु ज्ञान-ध्यान शिविर की धूम

चित्तौड़गढ़ में 17 से 21 अप्रैल तक महिलाओं के लिए पाँच दिवसीय ज्ञान-ध्यान शिविर का आयोजन किया गया। भयंकर गर्मी में जैन-जैनेतर 200 महिला शिविरार्थियों का उत्साह-उमंग देखने लायक था।

शिविर में उपाध्याय प्रवर ने पाँच आचारों की विस्तृत जानकारी देते हुए फरमाया कि सुख में लीन और दुःख में दीन नहीं होना।

श्री धीरजमुनिजी म.सा. ने प्रतिदिन 100 गाथाओं का स्वाध्याय, नौ आचार्यों का जीवन पढ़ना, स्वाध्याय माला पढ़ना एवं सत्य धर्म, सुधर्म, सुगुरु पर श्रद्धा रखना आदि जानकारी दी एवं विकथा नहीं करना, गुणानुरागी बनना, निंदा नहीं करना और ना ही निंदा सुनना आदि के प्रत्याख्यान करवाये। साथ ही आनन्द श्रावक का उदाहरण देते हुए छोटे-छोटे प्रत्याख्यान व मर्यादा करने का संदेश दिया। आपश्रीजी ने तप के प्रकार व तप का महत्त्व बताते हुए फरमाया कि हमारा तप वैराग्य केन्द्रित होना चाहिए। हमें अपने कर्त्तव्य से दूर नहीं हटना चाहिए। दूर हटने का मतलब शक्ति को छिपाना होता है।

शिविर के अंतिम दिवस उपाध्याय प्रवर ने फरमाया कि कठिन से कठिन परिस्थिति में भी आध्यात्मिक दृष्टि रखनी चाहिए। अंजना सती ने 12 वर्ष तक पति का मुख नहीं देखा, फिर भी कभी किसी से शिकायत नहीं की। बोलने के लिए अंजना के पास भी वाणी थी, लेकिन उसकी आध्यात्मिक दृष्टि ने उसे महान सती बना दिया। शिकायत समस्या का समाधान नहीं। हम आध्यात्मिक दृष्टि का विकास करेंगे तो आत्मिक सुख को प्राप्त कर सकेंगे।

अक्षय तृतीया पर वर्षीतप पारणे एवं बहुमण्डल व महिलाओं हेतु शिविर आयोजन के पश्चात् आपश्रीजी ने अनेक उपनगरों को पावन किया। तत्पश्चात् कैलाशनगर, सावा, भादसोड़ा, बानसेन, नपानिया, मंगलवाड़ चौराहा, भीण्डर आदि क्षेत्रों को पावन कर जिनशासन की अद्भुत प्रभावना की। प्रतिमाह 1 आयंबिल एवं दशवैकालिक सूत्र के प्रथम अध्ययन की गाथा याद करने की पावन प्रेरणा दे रहे हैं।

-बंशीलाल श्रीश्रीमाल

I JAIN MY JAIN

A residential camp held in Neemuch, M.P.

This is knowledge based inspiring camp for the age group of 15 to 30 years unmarried girls.

The Motto of this camp is to build the importance of Jain religion in every individual.

Forms will be filled online

https://forms.gle/gzmVfgZCPvrBTscw9

Duration of camp will be 9 days, from **May 31st 2023 to June 08th 2023**

Bus and Train ticket expenses will be provided for the participants by the organization itself.

There are limited seats for the camp.

Living, stationary, food and medical facilities will be provided.

Participants have to follow some basic rules of camp.

At the end of this camp they will be certified.

For further queries contact **7877883784, ijmjcamp@gmail.com**.

Interested candidates can contact team as soon as possible.

–By **I Jain my Jain team**.

Terms & conditions apply

मुमुक्षु श्रीमती बेबीबाई कटारिया

नाम	:	मुमुक्षु श्रीमती बेबीबाई कटारिया
जन्मस्थान	:	बूसी (राज.)
जन्मतिथि	:	02 फरवरी 1960
वैराग्यकाल	:	लगभग 8 वर्ष
व्यावहारिक शिक्षा	:	5वीं
धार्मिक ज्ञान	:	पुच्छिंसु णं, श्रीमद् दशवैकालिक सूत्र के 4 अध्ययन, थोकड़े- जैन सिद्धान्त बत्तीसी गति-आगति, लघुदण्डक, अन्य छोटे-छोटे थोकड़े
धार्मिक शिक्षा	:	आरुग्गबोहिलाभं
धार्मिक परीक्षा	:	जैन संस्कार पाठ्यक्रम 1-2 तक
तपाराधना	:	51, 36, 34, 32, 31 तीन, मासखमण तीन, 1 से 16 की लड़ी, 500 आयंबिल, सिद्धि तप, 250 पच्चक्खाण, वर्धमान पाया की ओली 21 तक, 15 अठाई, 9 की तपस्या 10, 20 साल से वर्षीतप चालू, मौन बेला 12, 24 तीर्थंकर भगवान के आयंबिल, नवपद ओलीजी 20, छः माह से बेले जारी, रात्रि चौविहार, धोवन पानी पीने का नियम एवं जमीकंद त्याग, गौतम लब्धि तप (बेले से), गणधर तप (बेले से), उपवास से- बड़ा और छोटा पखवाड़ा, तीर्थंकर लड़ी, पुष्य नक्षत्र तप, रोहिणी तप, चन्द्रकला तप, ज्ञानपंचमी, मौन ग्यारस।

पारिवारिक परिचय

पति	:	स्व. श्री गौतमचन्दजी कटारिया
सासुजी-ससुरजी	:	स्व. श्रीमती मेतिबाई-स्व. श्री जीवराजजी कटारिया
जेठानीजी-जेठजी	:	श्रीमती लीलादेवी-स्व. श्री सज्जनराजजी कटारिया
देवरानीजी-देवरजी	:	श्रीमती चन्द्रादेवी-कान्तिलालजी, श्रीमती सीमाबाई-महावीरजी कटारिया
पुत्रवधू-पुत्र	:	श्रीमती सोनल-अश्विनजी, श्रीमती पूनम-संजयजी, श्रीमती साक्षी-अभयजी कटारिया
पौत्र, पौत्री	:	अरिहंत, अहाना, नैना, देवांश, नीरवी कटारिया
नणद-नणदोई	:	श्रीमती मैनाबाई-सुरेशजी मुणोत, श्रीमती पुष्पाबाई-कान्तिलालजी खींवेसरा, श्रीमती प्रकाशीबाई-गौतमजी गुन्देचा
माता-पिता	:	स्व. श्रीमती सायरबाई-स्व. श्री मोतीलालजी बोहरा
भाभी-भाई	:	श्रीमती वसंताबाई-मोहनलालजी, श्रीमती सुशीलाबाई-पारसमलजी, श्रीमती लीलाबाई-मदनलालजी, श्रीमती इंदिरादेवी-स्व. उत्तमचंदजी, श्रीमती इंदिराबाई-स्व. सुरेशचन्दजी बोहरा
बहिन-बहनोई	:	श्रीमती सविताबाई-मोतीलालजी कटारिया
नानीजी-नानाजी	:	स्व. श्रीमती जेठीबाई-स्व. श्री मोतीलालजी भण्डारी
परिवार से दीक्षित	:	श्री उम्मेदमुनिजी म.सा. (संसारपक्षीय देवरजी)

मुमुक्षु सुश्री कुमकुमजी कोटड़िया

नाम	:	मुमुक्षु सुश्री कुमकुमजी कोटड़िया
जन्मस्थान	:	धमतरी (छ.ग.)
मूलनिवास	:	लोहावट (राज.)
जन्मतिथि	:	06 अगस्त 2002
वैराग्यकाल	:	लगभग 5 वर्ष
पदयात्रा	:	लगभग 700 किमी.
व्यावहारिक शिक्षा	:	12 (बारहवीं)
धार्मिक ज्ञान	:	पुच्छिंसु णं, उववाई सूत्र, श्रीमद् दशवैकालिक सूत्र, श्रीमद् उत्तराध्ययन सूत्र (1 से 13, 15 से 19, 23, 31), श्री आवश्यक सूत्र, भक्तामर स्तोत्र, जैन सिद्धान्त बत्तीसी, समकित के 67 बोल, 5 समिति 3 गुप्ति, लघुदण्डक, गति-आगति, जीवधड़ा, 98 बोल का बासठिया, 102 बोल का बासठिया, गमक का थोकड़ा, प्रज्ञापना सूत्र के कुछ थोकड़े।
धार्मिक शिक्षा	:	आरुग्गबोहिलाभं
धार्मिक परीक्षा	:	जैन सिद्धान्त भूषण, कोविद (3 भाग), आगम कंठस्थ- भूषण, कोविद
तपाराधना	:	9 की तपस्या

पारिवारिक परिचय

पड़दादीजी-दादाजी	:	स्व. श्रीमती पंखीबाई-स्व. श्री किशनलालजी कोटड़िया
बड़ी दादीजी-दादाजी	:	मग्गीबाई-विजयलालजी, सायरबाई-जेठमलजी, मुंगेली
दादीजी-दादाजी	:	स्व. श्रीमती रुक्मणीदेवी-गौतमचंदजी, अर्चनाबाई-कन्हैयालालजी, मुंगेली
छोटी दादीजी-दादाजी	:	शारदाबाई-रतनलालजी कोटड़िया, रायपुर
माताजी-पिताजी	:	श्रीमती संजूदेवी-कमलेशजी कोटड़िया
चाचीजी-चाचाजी	:	श्रीमती सरिताजी-विनेशजी, श्रीमती किरणजी-निलेशजी, श्रीमती पूजाजी-लोकेशजी कोटड़िया
बुआजी-फूफाजी	:	श्रीमती हर्षाजी-दिनेशजी श्रीश्रीमाल, कवर्धा, श्रीमती पूनमजी-प्रफुल्लजी डोसी, डौण्डीलोहारा
भाभीजी-भैया	:	श्रीमती श्रेयाजी-अक्षयजी श्रीश्रीमाल, कवर्धा
नानीजी-नानाजी	:	स्व. श्रीमती हुलासीबाई-पारसमलजी ओस्तवाल, राजनांदगाँव
मामीजी-मामाजी	:	मधुकुमारजी, श्रीमती रमिलाजी-गुलराजजी, श्रीमती विजयाजी-ज्ञानचंदजी, श्रीमती भारतीजी-विनोदजी, श्रीमती शारदाजी-हेमंतजी, श्रीमती पिंकीजी-राकेशजी, श्रीमती किरणजी-पंकजजी ओस्तवाल
मौसीजी-मौसाजी	:	श्रीमती मायाजी-मनीषजी पारख, राजनांदगाँव, श्रीमती ज्योति-जितेशजी कोचर, भिलाई, श्रीमती खुशबू-दिलीपजी देशलहरा, भिलाई
भाई, बहिन	:	भव्य, लक्ष्य, शौर्य, आस्था, अदिती, मौली, गुंजन, सुरभि, रीति, झलक, केवली, लब्धि
परिवार से दीक्षित	:	साध्वी श्री साक्षीश्रीजी म.सा. (ज्ञानगच्छ) साध्वी श्री ताराकँवरजी म.सा. (ज्ञानगच्छ) साध्वी श्री निरामगंधाश्रीजी म.सा. (साधुमार्गी)

मुमुक्षु सुश्री लक्कीजी सुराना

नाम	:	मुमुक्षु सुश्री लक्की जी सुराना
जन्मस्थान	:	नोखामण्डी (राज.)
वर्तमान निवास	:	कोरामंगला, बेंगलुरु (कर्ना.)
मूलनिवास	:	गंगाशहर, बीकानेर (राज.)
जन्मतिथि	:	13 सितम्बर 1995
वैराग्यकाल	:	लगभग 11 वर्ष
व्यावहारिक शिक्षा	:	बी.ई. (इलैक्ट्रॉनिक्स एण्ड कम्यूनिकेशन)
धार्मिक शिक्षा	:	श्रीमद् दशवैकालिक सूत्र के कुछ अध्ययन, श्रीमद् उत्तराध्ययन सूत्र के कुछ अध्ययन, तत्त्व का ताला ज्ञान की कुँजी-1 एवं अन्य कुछ विषय व थोकड़े।
धार्मिक परीक्षा	:	जैन सिद्धान्त भूषण, कोविद, विभाकर, मनीषी, विशारद

पारिवारिक परिचय

पड़दादीजी-दादाजी	:	स्व. श्रीमती मूलीदेवी-स्व. श्री भँवरलालजी सुराना
दादीजी-दादाजी	:	श्रीमती सुन्दरदेवी सुराना-स्व. श्री रतनलालजी सुराना
छोटी दादीजी-दादाजी	:	श्रीमती निर्मलादेवी-स्व. श्री गोरधनलालजी सुराना
बड़ी माताजी-पिताजी	:	श्रीमती उमरावदेवी-स्व. श्री जेठमलजी, श्रीमती आशादेवी-स्व. श्री इन्द्रचन्दजी, श्रीमती कमला-अशोककुमारजी, श्रीमती उर्मिला-जसकरणजी सुराना
माताजी-पिताजी	:	श्रीमती मधु-राजेन्द्रकुमारजी सुराना
काकीजी-काकाजी	:	श्रीमती नयनतारा-कमलचंदजी, श्रीमती पिंकीदेवी-विमलचंदजी, श्रीमती अनितादेवी-मनोजकुमारजी सुराना
बुआ दादी-फूफाजी	:	श्रीमती कंचनदेवी-मूलचंदजी धाड़ीवाल, श्रीमती सरलादेवी-जयचंदलालजी सुखानी
बुआजी-फूफाजी	:	श्रीमती सुमनदेवी-स्व. राजेन्द्रजी सुखानी, श्रीमती बबीता-सत्येन्द्रजी सेठिया, श्रीमती रेखा-प्रवीणजी सांड
भाई-भाभी	:	विनयजी-राखी सुखानी, संदीपजी-बबीता, लोकेशजी-श्वेता, संजयजी-कृति, गौरवजी-मयूरी, हितेश, ध्रुव सुराना
भतीजा, भतीजी	:	लक्षित, कियान, पूर्वी
बहन-बहनोई	:	श्रीमती कविता-विनोदजी महनोत, श्रीमती पूर्णिमा-संदीपजी सेठिया, श्रीमती रेणु-लोकेशजी छाजेड़, श्रीमती मोनिका-रौनकजी पारख, श्रीमती रुचिका-नितेशजी रांका, श्रीमती मनीषा-अहिरंतजी बोथरा, ललिता, रीतु, हेतल, उजाला, काजल, शिल्पा, गरिमा, भावना, रिया, निधि
भांजा, भांजी	:	कृषि, खुशी, हर्ष, भावीश्री, तनीशा, आरव, गौरव, वंश, मन्नत

ननिहाल पक्ष

पड़नानीजी-नानाजी	:	स्व. श्रीमती लक्ष्मीदेवी-स्व. श्री घेवरचंदजी गोलछा
बड़े नानीजी-नानाजी	:	श्रीमती आशादेवी-केशरीचंदजी, श्रीमती कंचनदेवी-मोहनलालजी गोलछा
नानीजी-नानाजी	:	श्रीमती सुशीलादेवी-अमरचंदजी गोलछा

छोटे नानीजी–नानाजी	:	श्रीमती सरितादेवी–धनराजजी गोलछा
भुआ नानीजी–नानाजी	:	श्रीमती सुशीलादेवी–सुन्दरलालजी सांड
मामीजी–मामाजी	:	श्रीमती सरोजदेवी–निर्मलजी, श्रीमती सरोजदेवी–पदमचंदजी, श्रीमती सरितादेवी–राजेन्द्रजी, श्रीमती रचना–रमेशजी, श्रीमती मधुबाला–संजयजी, श्रीमती राजश्री–मनोजकुमारजी, श्रीमती ऊषा–मुकेशकुमारजी, श्रीमती ज्योति–अजितकुमारजी, श्रीमती जया–अमितकुमारजी गोलछा
मासीजी–मासाजी	:	श्रीमती कनकदेवी–प्रकाशचंदजी भूरा, श्रीमती वीना–नवीनजी हीरावत, श्रीमती रीना–लीलमजी भूरा, श्रीमती अल्का–अमितजी बोथरा, श्रीमती संगीता–कौशलजी सिपानी, श्रीमती रेखा–पवनजी डागा, श्रीमती शीतल–श्रेणिकजी बेंगानी
बहन–बहनोई	:	स्नेहलता–नवीनजी, मोनिका–अंकितजी, प्रभा–नवरतनजी, स्वीटी–अक्षयजी, महिमा–अरिहंतजी, ज्योति, सुभि, नेहा, रश्मि, प्रेरणा, चेतना, अंशु, नंदिनी, मुस्कान, माही, स्नेहा, सिमरन, मानवी
भतीजा, भतीजी	:	रेयांश, सम्यक्, लब्धि
भांजा, भांजी	:	रायना, दनीषा, दीक्षा, जैनम, सम्यक्, राजवीर, वृत्ति, वृषा
परिवार से दीक्षित	:	स्व. महासती श्री ललितप्रभाजी म.सा. (संसारपक्षीय भुआ नानीजी) साध्वी श्री लक्ष्मीकँवरजी म.सा. (श्रमण संघ) साध्वी श्री मानकँवरजी म.सा. (श्रमण संघ) श्री किस्तूरमुनिजी म.सा. (फक्कड़ बाबाजी) (साधुमार्गी संघ) श्री शोभनमुनिजी म.सा. (साधुमार्गी संघ) श्री मंगलमुनिजी म.सा. (साधुमार्गी संघ) साध्वी श्री मोहनकँवरजी म.सा. (ज्ञानगच्छ) साध्वी श्री किशोरकँवरजी म.सा. (ज्ञानगच्छ) साध्वी श्री अंकिताश्रीजी म.सा. (साधुमार्गी संघ)

भव्यातिभव्य दीक्षा महोत्सव : निवेदन

परमागम रहस्यज्ञाता परम पूज्य **आचार्य प्रवर 1008 श्री रामलालजी म.सा.** एवं बहुश्रुत, वाचनाचार्य **उपाध्याय प्रवर श्री राजेशमुनिजी म.सा.** की असीम कृपा से मुमुक्षु बहिन सुश्री कुमकुमजी कोटड़िया सुपुत्री श्रीमती संजूजी-कमलेशजी कोटड़िया, धमतरी (छ.ग.) की जैन भागवती दीक्षा 28 मई 2023 को कानोड़ में एवं मुमुक्षु बहिन सुश्री लक्कीजी सुराणा सुपुत्री श्रीमती मधुजी-राजेंद्रजी सुराणा, बेंगलुरु (कर्ना.) की जैन भागवती दीक्षा 01 जून 2023 को बड़ीसादड़ी (राज.) में आचार्य भगवन् के मुखारविन्द से सम्पन्न होनी संभावित हैं।

सम्मानित श्रावक-श्राविकाओं एवं संघ सदस्यों से विनम्र निवेदन है कि दोनों दीक्षा प्रसंगों पर पधारकर दीक्षा अनुमोदना कर कर्मनिर्जरा का लाभ लेवें। इन दोनों अवसरों पर पधारने से आपको परम पूज्य आचार्य भगवन् एवं उपाध्याय प्रवर सहित उपस्थित चारित्रात्माओं के दर्शन, वंदन का लाभ सहज ही प्राप्त हो सकेगा।

-: निवेदक :-

श्री साधुमार्गी जैन संघ — समता महिला मंडल

समता युवा संघ — समता बहु मंडल

कानोड़, उदयपुर (राज.) एवं बड़ीसादड़ी, चित्तौड़गढ़ (राज.)

संपर्क सूत्र (कानोड़)

रमेशजी कुदाल, अध्यक्ष : 9414683309

तखतमलजी लसोड़, मंत्री : 9166663441

संपर्क सूत्र (बड़ीसादड़ी)

प्रकाशजी मेहता, अध्यक्ष : 9784757565

विमलजी दलाल, मंत्री : 9414619514

A Premier Clay Specialists in The Country...

- 48 years of experience with efficient processing technology and high-quality deposits of raw materials.
- Extraction, Processing and Refining of industrial minerals, particularly Ball Clay, China Clay, Bentonite, Silica Sand, Quartz, Potassium & Sodium Feldspar.
- In-depth knowledge of the market and understands the need for high-grade raw materials in the ceramic industries.
- Extraction of raw materials to the final delivery of the finished product, all of our procedures are subjected to ongoing quality monitoring.
- Export good quantity of minerals to various countries.
- Import of many others minerals and raw materials for Indian ceramics industries.

JLD MINERALS
Jaichand Lal Daga group

Corporate Office :
1st Floor, Labhuji Ka Katla,
Bikaner-334001, Rajasthan, INDIA

Phone : +91-151-2220380 / 2521624 / 3294234
FAX : +91-151-2522768, Mobile No. 09829217944
Email : wbcclay@yahoo.com

www.jldminerals.com

SIPANI
RITZY. POETIC. URBANE

सामाजिक जिम्मेदारी 'सिपानी' की पहचान

बेंगलोर जैसी महानगरी में वरिष्ठ नागरिकों एवं लाचार व्यक्तियों को सिपानी सदन में नि:शुल्क भोजन, वस्त्र एवं चिकित्सा सुविधा उपलब्ध करवायी जा रही है। यह सौभाग्य है कि 10 वर्ष पूर्व शुरू की गई इस सेवा योजना का लाभ 100 व्यक्तियों से प्रारम्भ होकर आज 10 वर्षों की पूर्णता तक यह संख्या बढ़कर 400 हो गई है।

इस सेवा कार्य में इन नागरिकों को पूर्णत: सज्जित एम्बुलेंस, डॉक्टर एवं नर्सिंग देखभाल की सुविधा चौबीसों घण्टे उपलब्ध करवायी जा रही है।

सेवा के नये आयाम प्रस्तुत करते हुए सिपानी फाउंडेशन ने वहाँ पर 60 कर्मचारियों की नियुक्ति भी की है जो इन सब सुविधाओं के आधार स्तम्भ हैं।

आर के सिपानी फाउंडेशन

439 18वाँ मेइन, 6वाँ ब्लॉक, कोरमंगला, बेंगलूर – 560 095

संपर्क सूत्र : संतोष 9964105057, 9243667700, सिपानी कार्यालय । ई–मेल : sipanigrand@gmail.com

संघ से संबंधित विभिन्न जानकारियां

प्रकाशक

श्री अखिल भारतवर्षीय साधुमार्गी जैन संघ

प्रधान कार्यालय

समता भवन, आचार्य श्री नानेश मार्ग,
नोखा रोड, गंगाशहर, बीकानेर-334401 (राज.)
फोन : 0151-2270261
helpdesk@sadhumargi.com

अध्यक्ष एवं प्रधान संपादक

गौतम चन्द जैन, मुम्बई

सह संपादिका

श्रीमती मोनिका जय ओस्तवाल, ब्यावर

श्रमणोपासक सदस्यता

केवल भारत में	1,000/- (15 वर्ष के लिए)
विदेश हेतु	15,000/- (10 वर्ष के लिए)

वाचनालय हेतु (केवल भारत में)

वार्षिक	50/-

संघ सदस्यता

साधारण सदस्यता	500/-
आजीवन सदस्यता	5,000/-

साहित्य सदस्यता

15 वर्ष	(केवल भारत में)	3,000/-

संघ केन्द्रीय कार्यालय के विभिन्न विभागों से कार्य सम्पादन हेतु सम्पर्क करें :-

E-mail : ho@sadhumargi.com

बैंक खाता विवरण

Shree Akhil Bharatvarshiya Sadhumargi Jain Sangh, Bikaner

State Bank of India

SCAN & PAY

Account No. : 31264126681
IFSC Code : SBIN0003401
Branch : G.S. ROAD, Bikaner
Mob. : 7073311108
E-mail : **accounts@sadhumargi.com**

व्हाट्सएप और ई-मेल आईडी

श्रमणोपासक समाचार	: 8955682153	news@sadhumargi.com
श्रमणोपासक	: 9799061990	
साहित्य	: 8209090748	: sahitya@sadhumargi.com
महिला समिति	: 7231033008	: ms@sadhumargi.com
समता युवा संघ	: 7073238777	: yuva@sadhumargi.com
धार्मिक परीक्षा	: 7231933008	examboard@sadhumargi.com
कर्म सिद्धान्त	: 7976519363	
परिवारांजलि	: 7231033008	: anjali@sadhumargi.com
विहार	: 8505053113	: vihar@sadhumargi.com
पाठशाला	: 9982990507	: Pathshala@sadhumargi.com
शिविर	: 7231833008	: udaipur@sadhumargi.com
ग्लोबल कार्ड अपडेशन	: 6265311663	: globalcard@sadhumargi.com

-: सूचना :-

निवेदन है कि किसी भी कार्य के लिए सम्बंधित विभाग से ही सम्पर्क करें।
इससे आपका कार्य सुगम और त्वरित गति से हो सकेगा।
कार्यालय समय – प्रात: 10:00 से सायं 6:30 बजे तक
लंच – दोपहर 1:00 से 1.45 बजे तक

आवश्यक सूचना

सभी संघ सदस्यों से निवेदन है कि कृपया कोई भी नकद भुगतान (Cash Payment) श्री संघ के किसी भी सदस्य, कार्यालय अधिकारी को किसी भी प्रवृत्ति में करें तो केन्द्रीय कार्यालय के लेखा विभाग (Accounts Department) को सूचना जरूर देवें।

इससे आपको पक्की रसीद शीघ्र ही भिजवाई जा सकेगी।

मो.न. 7073311108 पर व्हाट्सएप करें।

जय गुरु नाना जय महावीर जय गुरु राम

YOUR TRUST

RAKSHA® PIPES

OUR GUARANTEE

INDIA'S MOST TRUSTED BRAND

FLEXIBILITY IS OUR STRENGTH
RAKSHA
SHAND GROUP
•SINCE 1977•

Sri Shantilal, Sanjay, Ajay & Tushar Shand
SHAND GROUP OF INDUSTRIES
No. 52, 7th Cross, Wilson Garden, Bengaluru - 560027.INDIA
Phone: +91-80-22235726, 22271902, 22225734.
Fax: +91-80-22234779. E-mail: mkt@shandgroup.com

Diamond Duroflex
Diamond DUROLON
DURO RING LEAK PROOF SEAL TECHNOLOGY
Now with new M.R.O. Technology Resists high Impact
LEAK PROOF
IS 15778 : 2007
CM/L NO : 2526149
ENVIRONMENT FRIENDLY LEAD FREE
cftri CERTIFIED
UV STABILIZED
LUCALOR FRANCE
FIRST TIME IN INDIA
ISI FITTINGS WITH ADVANCED CO-MOULDED DURO RING SEAL

www.shandgroup.com रक्षा जीवन भर की सुरक्षा www.rakshapipes.com

रचनाकारों अथवा लेखकके विचारों से संपादक की सहमति होना अनिवार्य नहीं है। किसी भी विवाद की स्थिति में न्याय क्षेत्र बीकानेर ही रहेगा।
प्रधान सम्पादक, प्रकाशक, मुद्रक गौतम चन्द जैन के लिए जैन आर्ट प्रेस, बीकानेर के लिए साक्षी प्रिंटर्स, जयपुर (राज.) में मुद्रित प्रतियाँ 25000
प्रेषक :श्री अखिल भारतवर्षीय साधुमार्गी जैन संघ
समता भवन, आचार्य श्री नानेश मार्ग, नोखा रोड, गंगाशहर, बीकानेर - 334401 (राज.), फोन नं. 0151-2270261